



आलम-केलि

संपादक—

ला० भगवानदीन



॥ श्री ॥

आलम-केलि

१९७३

२०७३

रचयिता

आलम और सुबुधिली नागरी

सम्पादक

संस्कृत

सम्पादक



प्रकाशक

उमाशङ्कर मेहता

प्रथमावृत्ति }
१०००

सं० १९७६

{ मूल्य १ }

प्रकाशक

उमाशंकर मेहता
रामघाट, काशी ।



—३२३३३३३३३३—

विक्रेता. ८

(१) एस. एस. मेहता ऐण्ड ब्रदर्स

बुकसेलर्स ऐण्ड पब्लिशर्स

रामघाट, काशी ।

(२) साहित्य-भूषण-कार्यालय

बनारस सिटी ।

—३३३३३३३३३३—



प्रकाशक का निवेदन

पाठक वृन्द !

अनेक सुन्दर ग्रंथमालाओं के निकलते हुए भी मैंने यह 'प्राचीन कविमाला' निकालना आरंभ किया है, यह शायद मेरी अनमिषता या धृष्टता ही कहलायेगी, पर क्या फरक अपना २ शौक ही तो ठहरा। गुर्जरभाषाभाषी होने पर भी मुझे राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवा का चाव लग गया है। ला० भगवानदीनजी की शुभ शिक्षा से प्राचीन कवियों का जितना कुछ महत्त्व समझ में आया है, उसीने मुझे इस कार्य को और प्रवृत्त किया है।

कई एक प्राचीन कवियों के ये ग्रंथ मैंने एकत्र कर लिये हैं जो प्रसिद्ध तो बहुत हैं, पर कहीं प्रकाशित नहीं हुए। उनका प्रकाशित होना मुझे आवश्यक जँचता है। मैंने बहुतों को यह कहते सुना है कि अमुक कवि की कविता है तो बहुत अच्छी पर खेद है कि प्रकाशित नहीं हुई। आलम की कविता भी उसी गणना में है। इसी कारण मैं इसी ग्रंथ से आरंभ करता हूँ।

यदि हिन्दी प्रेमियों ने इसे अग्रनाकर मेरा उत्साह बढ़ाया तो मनिराम, सेनागति, ठाकुर, पञ्जेश, अग्रदास, सूरदास, केशवदास और अन्य अनेक हिन्दी कवियों के अलभ्य ग्रंथों को सुन्दर सटिप्पण रूप से निकालने का साहस करूँगा।

हर्ष की बात है कि लब्धप्रतिष्ठ काव्यानुसंगी. मेरे धर्मास्पद काव्यगुरु ला० भगवानदीन जी (दीन कवि) ने टिप्पणियाँ लिखने तथा संशोधन और संपादन का कार्य स्वीकार कर लिया है, अतः मुझे बहुत कुछ आशा है कि इस माला के पुष्प अन्यन्त मनाहर होंगे।

मेरी प्रार्थना है कि कुछ काव्य प्रेमी सज्जन इस माला के स्थायी प्राहक हो जायें, तो मेरी चिन्ता दूर हो जाय। स्थायी प्राहकों का प्रवेश शुल्क केवल ॥) मात्र है। स्थायी प्राहकों को सब पुस्तकें पौने दामपर मिल सकेंगी।

सज्जनों से यह भी निवेदन है कि यदि उनके पास कोई प्राचीन काव्य ग्रन्थ ऐसा हो जो अद्यतक प्रकाशित नहीं हुआ और जिसका प्रकाशित होना वे साहित्यदृष्टि से उत्तम समझते हैं, तो मुझे उसकी प्रतिलिपि देने की कृपा करें, मैं उसे प्रकाशित करने का उद्योग करूँगा।

भवदीय

उमाशंकर मेहता

वक्तव्य

आज कल देश में अनेक ग्रंथमालाएँ निकल रही हैं। नयीन विषयों पर गद्यमय ग्रंथों की भरमार हो रही है। कोई २ ग्रंथ-प्रकाशक अनुवादों की ही झुड़ी लगाये हैं, पर प्राचीन कथियों की कीर्ति के उद्धार की ओर बहुत कम ही लोगों का ध्यान आकर्षित हुआ है। प्राचीन काव्य का अनुशीलन आज दिन एक व्यर्थ काम समझा जाने लगा है, पर मेरा खिन्न तो यह कहता है कि यह भारी भूल है। प्राचीनताप्रिय और सच्चिदानन्द की उपासिका हिन्दू जाति, अलौकिक आनन्ददायिनी प्राचीन काव्य को भुला रही है, यह शुभ लक्षण नहीं। नयीन प्रियता अघश्य अच्छो बात है, उन्नति की द्यौतक है, स्वार्थ-साधक है, लाभकारी है, पर साथ ही यह भी स्मरण रखना चाहिये कि प्राचीनप्रियता भी हिन्दू जाति का एक विशेष गुण है जिसके खो देने से मुझे तो जाति का कल्याण नहीं देख पड़ता। प्राचीनों की कीर्ति का संरक्षण करना, उसका प्रचार करना, उसका सौन्दर्य बढ़ाना यदि हम से नहीं हो सका तो हमें कोई हक नहीं है कि हम उन प्राचीनों के गुणों के उत्तराधिकारी होने का गर्व करें और उन गुणों के धारिस कहला कर संसार में अपना धाक जमाते हुए अनुचित लाभ उठावें और भूठी शान दिखावें। अस्तु,

उपर्युक्त विचार से प्रेरित होकर ही मैंने आज तक यकली हंसराजकृत 'सनेहसागर' और पद्माकरकृत "हिम्मत बहादुर बिरुदावली" खोजकर प्रकाशित कराने का सौभाग्य प्राप्त किया है। यह प्रस्तुत ग्रंथ तीसरा रत्न है जो मेरे परिश्रम से प्रकाशित हो रहा है। चौथा रत्न होगा मतिरामकृत 'सत-सई' और पाँचवाँ होगा सेनापति जी का "कवित्त रत्नाकर"

कवि शिरोमणि श्री सुरदास जी की कविता बहुत कम पढ़ी जाती है। कारण यह है कि उनका बड़ा ग्रन्थ 'सुर-सागर' साधारण पाठक खरीद नहीं सकते। अतः मैंने उनके सागर को मध्यकर पाँच रत्न अलग निकाल लिये हैं। उन्हें भी इसी रूप से प्रकाशित करने का उद्योग कर रहा हूँ। देखें कौन प्रकाशक इस काम में मेरा हाथ बँटाता है।

पुस्तक परिचय

'आलम' कवि कृत 'आलमकेलि' ग्रन्थ का नाम सभी साहित्य सेवियों के मुख से सुना करता था, पर अप्रकाशित होने के कारण दर्शनों का सौभाग्य न हुआ था। यत्र तत्र फुटकर कवित्त देख कर अनुमान होता था कि 'आलम' एक अच्छे कवि होंगे।

इस वर्ष सौभाग्य वश मुझे निज शिष्य पं० उमाशंकर मेहता (पद्मानिवासी और काशीप्रवासी) के सरस्वती-भंडार में एक हस्तलिखित प्रति देखने को मिली जो संभवत् १७५३ की लिपी हुई है और जिसके अन्त में लिखा है—

इतिथी आलमकृत कवित्त 'आलमकेलि' समाप्तम् ।

संवत् १७५३ समये आसन बंदी अष्टमी बार शुक्र ॥ "

पुस्तक देखते ही मुझे तो इतना आनन्द हुआ कि नानो पद्मा की हीरे की खानि ही मिल गई हो। मैंने मेहता जी से प्रकाशन के लिये अनुरोध किया। मेहता जी ने कहना मान लिया और फल स्वरूप यह पुस्तक आपके सामने है।

इस पुस्तक में केवल आलम ही के रचे छंद नहीं हैं, वरन् 'सेख' कृत छंद भी हैं। 'आलम' और 'सेख' का सम्यन्ध सब ही लोग जानते हैं। छंदों में ऊंची साहित्य-मर्मशता, सच्ची कृष्ण भक्ति, और अनूठी प्रतिभा का परिचय प्रतिछंद मिलता है। मुझे तो 'आलम' की प्रतिभा से 'सेख' की प्रतिभा कुछ ऊंची जँचती है। लोग कहते हैं कि 'आलम' जी 'सेख' के लिये मुसलमान हो गये, पर मुझे ऐसा जँचता है कि 'आलम' की सुसंगति पाकर 'सेख' कृष्णभक्ति में रँग कर कृतार्थ हो गई।

कविताकाल

'आलम' और 'सेख' का कविताकाल साधारणतः सं० १७४० से सं० १७७० तक माना जाता है। यह हस्तलिखित प्रति जिसके अनुसार यह पुस्तक छपी है सं० १७५३ की लिखी हुई है। इससे यह स्पष्ट है कि इसमें वे दो छंद संग्रहीत हैं जो उस समय तक बन चुके थे। यही कारण है कि इसमें 'आलम' और 'सेख' के कुछ अधिक प्रख्यात कवित्त (जो इस संग्रह के बाद रचे गये होंगे) नहीं मिलते। उदाहरणवत् आलम के ये मशहूर छंद इसमें नहीं हैं। हमारे ग्राम के निवासी और हमारे परम हितैषी मित्र बा० पुत्तलाल जी सोनार इन छंदों को पढ़ते पढ़ते आँसू बहाने लगते थे:—

सवैया

जा थल कीन्हें विहार अनेकन ता थल बाँकरी बैठि चुन्यो करे
 जा रसना सौं करी बहु बात सुता रसना सौं चरित्र गुन्यो करे
 'आलम' जौन से कुंजन में करी केलि तहाँ अब सीस धुन्यो करे
 नैनन में जो सदा रहते तिनकी अय कान कहानी सुन्यो करे
 हमारे मित्र पुसूलाल जी सांरंगी भी बजाते थे। बरसात
 के दिनों में कभी कभी यह कवित्त सांरंगी पर गाया
 करते थे :—

कैधौ मोर सोर तजि गये री अनत भाजि;

कैधौ उत दादुर न बोलत है एई।

कैधौ पिक चातक महीप काहु मारि डारे;

कैधौ बकपाँति उत अन्तगत है गई।

'आलम' कहै हो आली अजहूँ न आये प्यारे,

कैधौ उत रोति विपरीत विधि ने उई।

मदन महीप की दोहाई फिरिबे तै रही,

जूझि गये मेघ कैधौ दामिनी सती भई।

'सेख' का यह निम्नलिखित कवित्त बहुत ही मस्त हो
 कर गाया करते थे :—

रात के उनींदे अलसाते मदमाते राते,

अति कजरारे दगःतेरे यौ सोहात है।

तीखी तीखी कोरनि करोरे लेतः काढ़े जीउ,

केते भये घायल औ केते तलफात है।

ज्यौ ज्यौ लै सलिल चख 'सेख' धौवै धारधार,

त्यौ त्यौ बल बुंदन के धार मुकि जात है।

फैवर के भाले कैधौ नाहर नहनवाले,

लोह के पियासे कहुँ पानी तै अघात है।

तात्पर्य यह कि आलम और सेख के बहुत से छंद इसमें नहीं मिलते। इसका कारण यही जान पड़ता है कि वे छंद इस हस्तलिपि के बाद की रचना हैं। यह हस्तलिपि आलम के जीवन काल में ही उनके किसी शिष्य वा भक्त द्वारा लिखी गई है। अतः हमें तो अत्यन्त प्रमाणिक जँचती है।

जीवनवृत्त

लोग कहते हैं कि 'आलम' कवि जाति के ब्राह्मण थे, और 'सेख' रंगरेजिन के प्रेम में फँसकर मुसलमान हो गये थे। सच्चे साहित्यमर्मज्ञों का मत है कि सच्चे कवियों का कोई धर्म नहीं, वे तो धर्म के दिखाऊ बंधनों को तोड़कर सच्चे प्राकृतिक सौंदर्यमय प्रेम-पथ के पथिक होते हैं। 'सभी देशों और सभी कालों में ऐसे कवि होते आये हैं। आलम भी वैसे ही थे।

'सेख' केवल रंगरेजिन ही न थी वरन् ऐसा जान पड़ता है कि वह सच्चे प्रेमरंग में स्वयं भी रंगी हुई थी। बड़ी प्रतिभावाली और हाज़िर जवाब थी। सेख से उत्पन्न आलम का एक पुत्र भी था जिसका नाम 'जहान' था।

कहते हैं एक बार आलम के आश्रयदाता शाहजादा मुज-जुंजम (औरंगज़ेब के पुत्र) ने मज़ाक में 'सेख' से पूछा कि "क्या आलम की बीबी आपही हैं?" 'सेख' ने हँसकर तुरंत जवाब दिया था "हाँ हुज़ूर! 'जहान' की माँ मैं ही हूँ।" ऐसी प्रत्युत्पन्न मतिवाली और ऐसी प्रतिभावाली स्त्री पर रीझ कर आलम ने कुछ बुरा नहीं किया था। प्रत्येक सच्चा कवि ऐसी स्त्री पर निह्वावर होना अपना सौभाग्य समझेगा।

आलम ने 'रेखता' नाम से कुछ ऐसे कवित्त लिखे हैं जिन से जान पड़ता है कि आलम जी फारसी भाषा और उसके

साहित्य से भी अच्छी जानकारी रखते थे और सड़ी थोड़ी में भी कविता करने के पक्षपाती थे (देखिये छंद नम्बर २६६ से २७३ तक) ।

छंद नम्बर १६६ में 'सेख' ने सर्वनाम और क्रिया के ऐसे रूप प्रयुक्त किये हैं जिनसे प्रत्यक्ष मालूम होता है कि वह पंजाब निवासिनी थी । अनेक छंदों से उसकी कृष्णप्रति अटल भक्ति भली भाँति प्रगट है (देखिये छंद नं० २४८, २४९

पुस्तक आपके सामने है मेरे कहने की कुछ आश्चर्यकरता नहीं, कविता आपसे आप रचयिता की प्रशंसा करा लेगी । हाँ ! अपने विषय में मुझे इतना कहना है कि मैंने इस पुस्तक का शूफ देखा है, टिप्पणियाँ लिखी हैं और यत्र तत्र लिपि दोषों का संशोधन किया है । तो भी जहाँ जहाँ छंदों का अर्थ समझ में नहीं आया वहाँ मैंने पाठ ज्यों का त्यों रहने दिया है । यथाशक्ति मैंने उद्योग किया है, पर मुझे संतोष नहीं हुआ कि पुस्तक शुद्ध रूप से निकली है । पाठकों से निवेदन है कि उनको जो त्रुटियाँ या अशुद्धियाँ मालूम हों उनसे मुझे सूचित करने की कृपा करें तो अगले संस्करण में संशोधन कर दिया जायगा ।

हो सका तो महिराम कृत 'सतसई' और सेनापति कृत 'कवित्त-रत्नाकर' भी शीघ्र हो इसी-रूपसे सेवा में प्रस्तुत करूँगा । पर यह बात पाठकों की कृपा पर ही निर्भर है आशा है कि हिन्दी प्रेमी इसे अपनाकर प्रकाशक का उत्साह बढ़ावेंगे ।

श्रीरामनवमी
सं० १९७६
काशी

विनीत

लाला भगवानदीन

विषय-सूची



विषय	पृष्ठ
बाललील	१
धयः संधि	५
नवोदा	६
प्रौढ़ा वर्णन	७
अभिसार	१०
मानिनी	११
संकेतस्थल	१२
नायक की दूती	२५
विरह वर्णन	४३
सखी की उक्ति सखी प्रति	५३
संछिता वर्णन	६७
प्रेम कथन	७४
षंशी	१०
प्रवृत्त्यत्पत्तिका	१३
भँवर-गीत	१४
उद्धव का लौटना	१२
जसोदा-विरह	१४
गोपी-विरह	१५
पवन वर्णन	१०१

विषय		पृष्ठ
जमुना-कुञ्ज	...	१०३
गंगावर्णन	...	१०४
दानता	...	१०५
शिवको कवित्त	...	१०८
देवी को कवित्त	...	१०८
रामलीला	...	१०९
रेखता	...	११४
सवैया	...	११६
विपरीति वर्णन	...	१२१
यशोदा की उक्ति	...	१२६
नवयौवना	...	१३१
मानवर्णन	...	१३२
चन्द्रकलंक	...	१३८
कुचछवि	...	१४०
युगलमूर्ति	...	१४१
अभिसार	...	१४४
आगतपत्रिका	...	१४६
शान्तरस	...	१५१

आलम-केलि

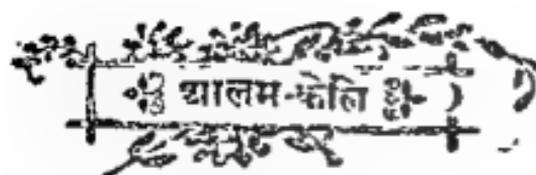
~*~*~*~

वाल-लीला

पालने खेलत नन्द-ललन छलन बलि,
 गोद लै लै ललना करति मोद गान है ।
 'आलम' सुकवि पल पल मैया पायै सुख,
 पोपति पोषूप सुकरत पय, पान है ।
 नन्द सों कहति नन्दरानी हो महार ! सुत
 बन्द की सी फलनि पढ़तु मेरे जान है ।
 आर देखि आनंद सों प्यारे बान्ध जानन नै,
 आन दिन आन घरी आन छवि आन है ॥ १ ॥

झीनी सी भँगूली धोच झीनो आंगु झलकतु,
 झुमरि झुमरि झुकि ज्यों ज्यों भूलै पलना ।
 घुँघुल घूमत घने घुँघुरा' के छोर घने,
 घुँघुरारे घर मानो घन घारे झलना ।
 'आलम' रसाल जुग लोचन मिलाव लोल,
 पेमे नन्दलाल अनदेखे फहँ कल ना ।
 घेर, घेर फेरि फेरि गोद लै लै घेरि घेरि,
 टेरि टेरि गाथै गुन गोकुल की खलना ॥ २ ॥

१—घुँघुरा = घुनघुना, फाट का रंगीन गोला जिसमें घुँघुरा वा फोडियाँ लगी होती हैं और जो पालने में बँधा छटकता है ।

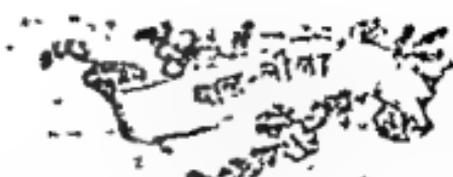


जमुदा के अजिर विराजै मनमोहन जू:
 अह रज लागे छवि छावै सुरशात^१ की ।
 छोटे छोटे आछे पग घुँघुड़ घूमत बने,
 आसों चित हित लागै सोना बालजाल की ।
 शाखी बतियां सुनावे द्विनु छाँड़ियो भ भादै,
 छाती सौं छरावै लागै छोह वा दयाल की ।
 रेरि अज-नारि हारी धारि फेरि डारी सब,
 आलम बलैया लीजै ऐसं नन्दलाल की ॥ ३ ॥

वैहाँ दधि मधुर धरनि धरयो छोरि खँहै,
 पाम तें निकलि धारी धेनु धाड़ खोलिहँ ।
 धूरि लोटि ऐहँ लपटहँ लटकत ऐहँ,
 सुगद सुनैहँ वेनु बतियाँ अमोलि हँ ।
 'आलम' सुकवि भेरे ललन चलग सीखँ,
 दतन^२ की घाँह अज गलिनि में डोलिहँ ।
 सुदिन सुदिन दिन, ता दिन गनौंगो-मारि,
 जा दिन कन्दैया भोजौ मैया रुहि खोलिहँ ॥ ४ ॥

टोरी^३ कौन रागी छुरि जैसे की स्तिगरो दिन,
 धिनु न रहत गरै फहौं का कन्हैया फो ।
 पल न परत फल थिऊल असोदा मैया,
 टौर भूले जैसे तलयेली लागै रूबः फो ।

१—सुरशात=इन्द्र । २—दतन की घाँह=चतुर्वेद जो का दाय
 पद छै दृष्ट । ३—टोरी=आदत, बानि ।



आँचन सों मुख पोंडि पोंडि कै कहति तुम, . ३
 ऐसे कैसे जान डेत कहें छूटे मैया को ।
 खेलन ललन बहूँ गए हैं सकेले नेकु,
 बोलि दीजे यलन^१ बलैया लाग मैया को ॥ ५ ॥

ऐसी बारी बारी याहि पाहगे न जान दीजे,
 पार^२ गये बारी मुम यनिता संगन को ।
 प्रजः टोना, रामन निपट टोनहार डोलै,
 असोदा मिटाउ टैंव और के शंगन की ।
 'आलम' लै गई खान धारि फेरि डारि नारि,
 बोलि धौ सुनाइ धुनि कनक कंगन को ।
 छीर मुख लपटाये छार घकुटनि^३ भरै, दीया ।
 नेकु छवि देखो छुगन-गँगन की ॥ ६ ॥

बीस बिधि आऊँ दिन पारीये न पाऊँ औरं,
 याही काज याही घर बोलनि की बारी है ।
 नेकु फिरि गेहें कैंहें है री है असोदां मोति,
 मो पै हठि मागै बंसी और फहें डारी है ।
 'सेख' कहें तुम सिंगवो न कलु राम याहि,
 भागी गरिहाइनु की सोखे लेनु गारी है ।
 संग लाइ मैया नेकु न्यारो न कन्हैया कीजे,
 यलन^४ बलैया लैके मैया यलिहागी है ॥ ७ ॥

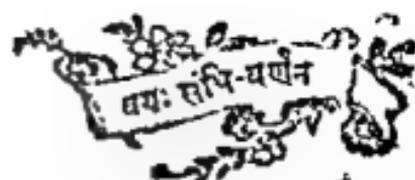
१—यलन = बलदेवजी । २—पार = पार । ३—घकुटनि = चुंगन । ४—यलन = बलदेवजी ।

मन को सुहेली^१ सब करतीं सुहागिनि सु—
 अंक की अँकोर^२ दै के हिये हरि लायों है ।
 कान्ह मुख चूमि चूमि सुख के समूह लै लौ,
 काह करि पातन पतोखी^३ दूध व्यायों है ।
 आलम अखिल लोक लोकनि को अँसी^४ ईस,
 सुनो के ब्रह्मांड सोई गोकुल में आयो; है ।
 ब्रह्म त्रिपुरारि पचि हारि रहे ध्यान धरि,
 ब्रज की अहीरिनि खिलौना करि पायो है ॥ ८ ॥

चारोदस भौन जाके रवा एक रेनु कोलौ;
 सोई आंगु रेनु लावे नन्द के अयास की ।
 घट घट शब्द अनहद जाको पूरि रह्यो,
 तेई तुतराइ धानी तोतरे प्रकाश की ।
 'आलम' सुकथि जाके आस तिहुं लोक प्रसै,
 तिन जिय आस मानी जंसुदा के आस की ।
 इन के चरित चेति निगम कहत नेति,
 जानी न परत कछु गति अयिनास की ॥ ९ ॥

अधोऽधोऽधोऽधो

१—सुहेली = सुत्र बदक सीता । २—अँकोर = अँकवार ।
 ३—पतोखी = रतों की पनी छोटी दोनिया । ४—अँसी = सत्सिमान ।



वयःसंधि-वर्णन ।

कंज^१ की सी कोर नैना शोरनि अरुन भई,
 कीधौं चंपो सीय^२ चपलाई ठहराति है ।
 भौहन चढ़ति डोठि नीचे को डरनि लागी,
 डोठि परे पीठि है सकुचि मुसकाति है ।
 सजनी की सीख कछु सुनी अनसुनी करे,
 साजन की यातें सुनि लाजन समाति है ।
 रूप की उमैंगं तरुनाई को उठाव नयो,
 छाती उठि आई लरिकाई उठी जात है ॥१०॥

जुटि आई भौहें मुरि, चढ़ी हैं उचौहें, नैना
 मैन मद माते पलकन चपलाई है ।
 फटि गई छुँटि पै लिमटि आई छाती ठौर,
 डौर^३ तें सँवारी देह और कछु भई है ।
 आलम उमैंगि रूप सोना सरधर भयो,
 पानिय तें काई लरिकाई मिटि गई है ।
 झलक सी भई पियरस पियरई किधौं,
 कछु तरुनई अरु नई अरुनई है ॥११॥

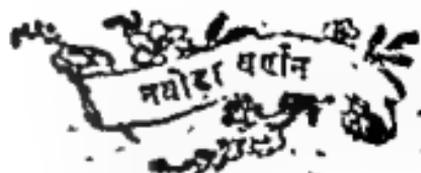
१-कंज की अरुन भई = नेत्रों के कोनों में कुछ कुछ कमलदल की
 धोरों की सी लालिमा था चली है । २-चंपो सीय ठहराति है = पंच
 लवा की सीमा सी शाय ही गई है । ३-डौर = टंग ।

काँधे ही। कंधेलो अलवेलोपनो खेलो चादे,
 पाछे ही 'विसारे' खेलें भाई देखै कूप की ।
 सावकी कुरंगी की सी संध्या को मयंकु जैसे,
 लाँक धिनु डोले औ निसक साँठ धूप की ।
 आलमः भुकति थोरी हँसे ते हँसति पुनि;
 हरत हरी को मनु आनन अनूप की ।
 अंदन खर्खाड़ा भाल गोरे अंग आंगीलाल;
 पूछे ते पिछोड़ी जाति मोंड़ी अोंड़ी रूप की ॥१२॥

नवोदा वर्णन

फोनी खाहौ चाहिलो नवोदा एक बार तुम,
 एक बार जाय तिहि छलु डय दीजिये ।
 'सेस' कहौ आवन सुहेली सेज आवै लाल,
 सीअत सिखैगी मेरी सीख सुनि लीजिये ।
 आवन को नाम सुनि सावन किये है नैना,
 आवन कहै सुकैसे आइ जाइ छीजिये ।
 परवस बसि करिये को मेरो वसु नाहि,
 ऐसी बस कहौ कान्ह कैसे वस कीजिये ॥१३॥

१-विसारे = विषय; संप (बाज) । २-भुकति = खीभती है ।
 ३-खर्खाड़ा = तिरक । ४-चाहिलो = चाह करनैवाली । ५-आइ = आयु ।

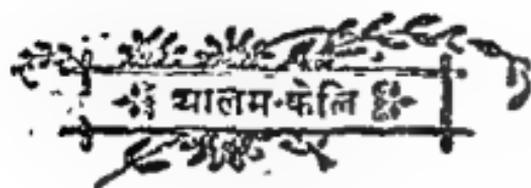


जोति सां हिये में जागी मैं तो जानी जैसी लागी,
 सोच तें हिये में लाल ! लागी नाटि है नई ।
 रसहि न जाने कहे विरह न मानै ताको,
 लैही छवि छाये कहु मूरि मोहनी मई ।
 'आलम' रसाल नन्दलाल सुनि जानि-मनि
 मोहि ऐसी कठिन सुबुहूँ दिसि की भई ।
 तुम रिझवार प्रेम-पीर पियराने कहुँ,
 अंकम की संक सुनि प्रियां पीरी है गई ॥१४॥

कोकिल किलक घानी सुनि सुनि शनि मानी,
 वही जानि तोपै सीखि सुरहि सुधाखो है ।
 तन हूँ की घानी ताकि खंपाऊ उजार गयो,
 यहै चेति धित हूँ ते भौरनि उताखो है ।
 'आलम' कहै हो पूरो पुन्य को सुहायो कोस,
 सुल की निकारै हेरि हिमकर हाखो है ।
 रूप रयो भयो नाही रोकि गयो मन माहीं,
 तो पर है मार आपा बारि केरि डाखो है ॥१५॥

घौन के परख लुट्ट-घंटिका के डोलें डोलै,
 हार हूँ न हिये धरै खरी कटि खीनी है ।
 येनी फी लटक जिनि प्रीया के सरक जाय,
 लुटो अलकनि छवि काकी लुटि लीनी है ।

१—हिये ... नई = गर्दन झुककर हृदयसे जग गई है । २—नाटि =
 गंदन । ३—जानिमनि = जानी शिरोमणि । ४—बानी = (घर) रंग ।
 (नोट) 'गायत्री' में भी इस शब्द को इसी अर्थ में प्रियां है ।



'शालम' कहे हो तनु कनकमै तायो तामें,
 येन मैन जोति रस हीरा ओष दीनी है ।
 और है सिंगार भार तुहीं आपनो सिंगार,
 विधि है सुनार तू जराउ जैसी कीनी है ॥१६॥

चितवत औरै लागै धोले औरै जोति जागै,
 हँसे कछु औरै रुसै औरै निकाई है ।
 अङ्ग अङ्ग मोहनी मोहन मन मोहिये, काँ,
 एन-नैनी^१ मानो मैन मोहनी यनाई है ।
 'शालम' कहे हो रूप आगरो^२ समातु नाहीं,
 छवि-छलकति इहाँ कौन की समाई है ।
 मूपन को भारु है-किसोरी बैल गोरी बाल,
 तेरे तनः प्यारी कोटि भूपन गुराई है ॥१७॥

येसे रूप देस की लुनाई लुटि लई है-सु,
 नई नई छवि अङ्ग अङ्ग उमगति है ।
 जाई की सी माल सु लजाइ रही फाहे तें सु,
 जाइ जाइ हरिजू के हिये में खंगति^३ है ।
 'शालम' कहे हो धड़े धार है सेधार मये,
 तेरी तरुनाई सु-जराइ सी जगति है ।
 मोतिन को द्वार हिये हौंस ते पहीरै नहीं,
 पोत^४ ही के छुरा अपछुरा सी लगति है ॥१८॥

१-एननैनी = भुगनैनी । २-आगरो = बहुत अधिक । ३-खंगति है = चुमती है, चोट करती है । ४-पोत-झरा = काँच की छोटी गुरियों को कंटों।



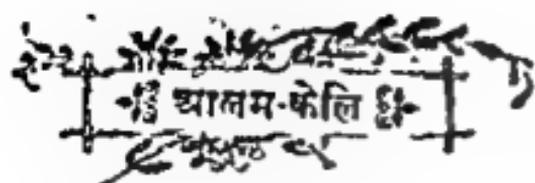
प्रौढ़ वर्णन

सौरभ संफेलि मेलि केलि ही की वेलि की-हीं,
 सोभा की सहेली सु अकेली करतार की ।
 जित डरकें हो कान्ह तितही डरकि जाय,
 साँचे ही सुढारी सब अंगनि सुढार की ।
 तपनि हरति कवि आलम परस सोरो,
 अति ही रसिक, रीति जानै रस-चार की ।
 सखि हूँ को रसु सानि सोने को सरूप लै कै,
 अति ही सरस सो सँवारी घनसार^१ की ॥१६॥

पातरी अँगोठी^२ आँगी अँधंग हूँ सौं लागी रहै,
 भलकतु अंग भोनौ भलक डुकूल की ।
 'भालम' सुधारे कच कारे सदकारे भारे,
 डारे आछे पाछे प्यारी स्याम सुखमूल की ।
 काम के संजोग धाम दृच्छ कटाछन कीने,
 आछो छवि सैनिक सँवारी युद्ध मूल की ।
 कब हूँ कै फोर नैन ओरनि लौं आवैं चले,
 कब हूँ कै धावै हति आभा स्तुतिफूल^३ की ॥२०॥

गोरे आंक थोरे लांक थोरी वैसे भोरी मति,
 घरी घरी और छवि अद्भ अद्भ मैं जनि ।

१—घनसार = कपूर । २—अँगोठी = (अंग + इट) अंग के लिये जितनी धारिये, ठीक उमान की, पुस्त । ३—स्तुतिफूल = (अतिफूल) कर्णफूल ।

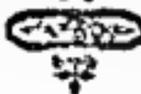


कहि कवि आत्म लुलक नैन मन मई,
 मोहनी सुनत वैन मन मोहन ठगै ।
 तेरोई मुखारविन्द निंदै अरविन्दै प्यारी,
 उपमा को कहे ऐसी कौन जिय में लगै ।
 सपि गई चन्द्रिकाऊ छवि गई छवि देखि,
 भोर को सो चाँद भयो फोकी चाँदनी लगै ॥२१॥

हीरा से दसन मुझ वीरा दासा कीर चारु,
 सोने से शरीर रवि चीर चली धाम को ।
 ललित फपोल हग डोलै कवि आत्म सु,
 बोली मृदु बोलि के रिभाये लाल स्याम को ।
 पेलरि पिबिअ नीकी केलरि को टोकी सोई,
 ते सरि न पावै भूलै केली सची वाम को ।
 बेनी गूयें फूल तर गरे मन्मत्तल छुटा,
 फूल की कमान देखि भूल परी काम को ॥२२॥

अभिसार

साधन की सांभ की सोहायनीयै ठौर तहां,
 जूही जाही बेलि बौरि फूलि वन छाइहे ।
 आत्म पंथन पुरंधया को परस गाछे,
 सीरी आयै रसिक सरस सरसाइहे ।



आली चलि धूनरि पहिरि हरियारी भूमि,
तेरे चमकत चपलाऊ चपि जाइहै ।
औरनि के माये बनि और आइहै सुपुनि,
हौं तो आइहौं न यह बेरी पनि आइहै ॥२३॥

जागन हे जोन्ह सोरी लागन दे रात जैसे,
जात सारी सेत में संघात की न जानिहै ।
अधये की और परी साथ लीजै मो सी नाहि,
आतुरी न होर, यह आतुरी की खानिहै ।
घूँघट ते 'सेख' मुल जोति न घटैगी छिनु,
भाँनो पट न्यारिये भूलक पहचानिहै ।
तू तो जानै छानी, पै न छानी या रहैगी योर,
छानी छमि नेनन की काको लोह छानिहै ॥२४॥

मानिनी

समुद्र को पार है सुभूमि ह को चार है पै,
प्रीति को न पार चार कौन विधि कीजिये ।
'सेख' कहै देखे अनदेख्योई करत कहै,
अंक भरि भेटे ह वियोग रस भीजिये ।

१—छानी-दूरी की हुई । २—छानी-छन छन कर निकली हुई ।

३—छानिहै=पियोगी । ४—चार=छोर, भंग ।



॥ आलम-केकि ॥

मेरे कहे घारी^१ तू निहारी जो विहारी तन,
 हेरे ज्यो^२ हठतु^३ हेतु एतो कत छोजिये ।
 आकी पास बेघै मन फूल देख्यो चाहे जनु ।
 हेरे ते कुतुम जानि केहँ, कर लीजिये ॥२५॥

धनितारी धनि धनचारी योली धन धन,
 धधनन करि येनु याजै धनी धानी सौं ।
 माननीन मुचै मानु पते मान को है मानो,
 मेरी न मनाई माने मोहन की मानी सौं ।
 आलम सुरति सुख कहा जानै का सौं कहँ,
 कहे रैन धीति जैहै एक ही कहानी सौं ।
 पान सौं^४ पान जोरि प्रानपति प्यारे संग,
 ऐसे मिलि प्यारी जैसे पागी मिले पागी सौं ॥२६॥

मौहनि चढ़ाई फे रिसाई नैन नाइ रही,
 सांस हूँ न चलै जड़ जहपि कियो है तनु ।
 कहै कथि आलम बंधन ऐचि खँचि मनु,
 कहा भयो जो पै हनु कोनो है राँक को धनु ।
 याही को बरजि डोलै बेसरि को मोती प्यारी,
 जेहि लागि डोल्यो डोल्यो फिरत लाल को मनु ।
 छाकी भलकनि अधरनि पर छाई मारै,
 कहाँ है रखाई तू तो रुखे हूँसति जनु ॥२७॥

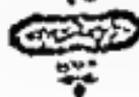
१—घारी = बड़िहारी जाजँ । २—ज्यो = (धीव) मन । ३—हठन = हठ करता है ।



चंद्र-कर . पूरन . परे जु कुमुदिनि पर,
 वे ॥ कोने हाइ भाइ मानिनी सुभाइ कै ।
 डोलैं दल दिगसि प्रकास्यो पौन मंद्र जाइ,
 कुसुम डोलाइ छाई अपा जूही जाइ कै ।
 आलम सुगंध बन केतका कपूर सन,
 लायो लाइ कालिन्दी के कन मुख चाइ कै ।
 आली तजि मौन करि गौन हित-मौन बलि,
 केल करि केल-कुंज' केलि के उपाइ कै ॥२८॥

काहे को खुभी उतारो बहुगे तरौना धारौ,
 कोटिक तरौना खुभी छवि पर धारिये ।
 चन्दन को वेंदा सोई उड़ बिधु रवि को है,
 अंजन हूँ सेत लागे ऐसा आँखि कारिये ।
 तेरे आँग को निकारै कहाँ लौं कहाँगी भाई,
 रति हूँ पंचति अजौं ध्यान हूँ न धारिये ।
 एतोई बिलम्पु भारी करो जिनि और प्यारी,
 आलम अकेली कुंज एकले विहारिये ॥२९॥

पिय को कहनि हाँ ही आतुर है पाई गई ।
 ताको यह मानवती आनिषो उपाउ है ।
 तू चलि ही आई तो लौं बात ही चलाई जाय,
 चतुर संघोन; नेक देखिये को चाउ है ।



कहै फयि आलम मुकै हँ रीकि खीकि जय,
 मानु छाड़ि बालि तय बोलिये को दाउ है ।
 नाहिं क्रिये नाहिं बलि नाहिनें मनाई जाति,
 जेतो नाहिं तेतो रुचि तिय को सुभाउ है ॥३०॥

जाई सीरी साँक भीर गैयाँ शीरि आई घर,
 बन घन पुर थोच पूरि धूरि धाई है ।
 आलम चहुँघा चढ़ि रुखनि चिरैयाँ थोली,
 भूपन घने हँ बलि बेरी धनि आई है ।
 आली तौ लौ बलि जौ लौं लाली में लपेटो ससि,
 रबि को न छवि छिन जौन्ह ना जनाई है ।
 ब्राह्म हँ के छल मिलि हौंही भई तेरी छाँह,
 जौ लौं परछाँही परछाँही घानि छाई है ॥३१॥

छलिये को आई ही सु हौंही छलि गई मनु,
 छोकती न छनु करि पठई विहारी हौं ।
 तूँ तो चल है पै आली हौंहीये थचल सी हौं,
 सादी रूप-रेख देखि रीकि भोजि हारी हौं ।
 'सेख' भनि लाल-मनि बँदी को विदा है ऐसे,
 गोरे गोरे माल पर चारि फेरि डारी हौं ।
 बैरिनि न होहु नेकु बेसरि सुधारि धरौ,
 हौं तो बलि बेसरि के 'बेह' बेधि मारी हौं ॥३२॥



फूली-सुजुन्दाई कुसुमाकर^१ की रैन की श्री,
 फूल्यो बन घन रसवीधिन विहरि लै ।
 आलम सुभग ये सुभायजु की सोभा तन,
 आभा मिलि कोटि कोटि आभरनु करिलै ।
 मंजन के आदि ते वै न्यारे हैं सिंगार हार,
 अंजन कां रेख हग खंजनु-में धरिलै ।
 चन्द्रमा-लिलाटी तैंडव पंती कहा ठाढ़ी वेगि,
 पाटी पारि प्यारी कबनाटी चीर करि लै ॥३३॥

सेत सुख बिधु जोति अंजन अहुर सजि,
 यक^२ धनु अरुन सुमति संग लाय हैं ।
 पेम सुरा सुधे धेनु सुन्दरः समान उंभा,
 'आलम' चपल ह्यु काम के सधाए हैं ।
 मीति मधु^३ पूतरी कल्प लच्छी पूरन,
 धनंतरि सुदिष्टि गजु गतिः पलटाए हैं ।
 काहें को समुद्र मधि देवतान थम फीनो,
 चौदह रतन तिय नैननि में पाए हैं ॥३४॥

जानति हैं नीके रति रतन अगन जेती,
 याजे रतिरति हूं के तेजहि तजै है री ।
 अघेरो कै आई है सवेरो बन नेरो यह,
 मेरो बहो किये कहौ तेरो कहा जैहै री ।

१-कुसुमाकर = बरांत । २-यक = तिरछे कटाक । ३-मधु = अमृत ।
 *नेवमें चौदह रस लिखलाये गये हैं । यह कपाल; इसी कविने दिखलाया है ।



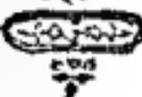
३ आलम-केलि

बिदा करि मोंहि दै तूं वादि हों वदावै वैठी,
 फान्ह को चदन देखि वेदनि यद्वै है री ।
 'आलम' बिलंबिये ना चलि आंली लालन पै,
 लाख ललना की दुति लखे ही लजैहै री ॥३५॥

छल छाँड़ि छिन छिया छयीली छयोले बोलि,
 छोड़िहै न हा हा किये मेरे पायँ छून री ।
 आग तीय तिनके री तन तन वाकतिये,
 तिन तन तनकहीं तिन तोरि तू न री ।
 काँछे छाँछे खच्छ फान्ह कालिंदी के कच्छ कधि,
 'आलम' कछू उछाह गाये तेरे गून री ।
 सुनि प्यारी सोच न सकाच ऐसे होवनन,
 चलि चित चाइ चाहि रचि चीर चुनरी ॥३६॥

चोली चारु चीर कै चरन धरिये को भई,
 चाहै पति रुचि कै तू रचो मुखचारि की ।
 नोर भरे फाहे नये नोरज-नयनि नारि,
 ठाग फान्ह नेरे हुनी न्यारी सोझ नारि की ।
 तरेई महनु हेतु ताते हों कहति तो सों,
 'आलम' कहै सुआंली अति मनुहारि की ।
 मूरख न होहि री न मुख मोरि मेगी सिध,
 प्रान की गूरति सुनि मुरटो मुरारि की ॥३७॥

एोन भई रजनी रतिक रिनुराज की, न
 एोन भयो मातु, जाते लाहच न डंकी री ।



प्राचियोः रची पै तू न रची मेरे, बचननु,
 अलिः माला योली पै तू योलह न योली री ।
 हुम येती हली तू न हली अली बलिवे काँ,
 घकर मिली पै तू न हियो खोलि योली री ।
 उयेः रधि कौन काज उठन रुठन तेरो,
 'आलम' न यंचि काल सुरंति कलोली री ॥३॥

तू तौ मेरी प्रानप्यारीः प्रान की, कहत तोसौ,
 ऐसेः प्यारेः प्राननाथ परः प्रान धारिये ।
 सँघरोः सँघारे सैन सुनि री सघारे हूँ सौं,
 ऐसी सैत सौरि क्यौं न आपकोः सँघारिये ।
 'आलम' पियूपनिधि अघर अघर जोरि,
 संरस अमिय जाहि पूजै न पधारिये ।
 अनेग नारीनुः संजी नागरा सुनग नारि,
 तासौ री न गहि मानु होहिः न गँघारिये ॥३॥

अरी अनयोली तू तौ योलेह न योले पुनि,
 अनेग थिली के व्यापे अनयोली जाहिगी ।
 करि कहो, गौन करि हठ हूँ न करिये सो,
 फारसौ उव कर जोरि करि कर लाहिगी ।
 'आलम' समुक्ति होहि सामुही समीप सम,
 ऐसो स्याम तजि स्यामा काहे मैं समाहिगी ।

१-सौरि = स्मरण करके। २-अनेग = अनेक, बहुतसी। ३-सुनग = सुन्दर शनवत ।

पूछे तें पिछौरी तानि पाछे दे रही है मोहि,
पिय रस दुर्क प्यारी पाछे पछुताहिगी ॥४०॥

नेक निसि नासिदैं तौ नारि न सकैगी सहि,
मनसिज सोस संक मेरे संग नासु री ।
ऐसी हुसपानी ऐसे समै कैसे श्याम जूसौ,
सारस सी अखियनि ऐसे भरै आँसु री ।
किसलै कुसुम सैन आलम संचित सुख,
सविता-सुता समीप सरस निवासु री ।
विसरैगो रोस रिस सब ही रसिक संग,
। सुर सौ या वन में सुनैगी नेकु बाँसुरी ॥४१॥

मानिती अनमनी है मौनी को सो मौन गणो,
मानो कहँ मन गयो तेरे मन मांह सौं ।
रारि सौं मुरारि बैठे हारो मनुहारि के तू,
नारि यो निवारि आरि जोरि बांह बांह सौं ।
आलम अकेली तू मैं आजु कछु और देखी,
औरै सुनी औरै चालि औरनि की छांह सौं ।
छपाकर छपे छिनु छीन भई छपा छीया,
छाँड़ि दे छपीली अब नाही कीयो नाह सौं ॥४२॥

१—सोम = शोच । २—सवितासुता = यमुना । ३—आरि = हठ ।

४—छाँड़ि = कपटप्रय शिक्षा । ५—छपा = रात्रि । ६—छीया =



याती न कहत : मुनि यात सूधे गात यौरी,
 'पेम-उत्तपात' कछु और यात बढ़ी है ।
 प्यारो पियराइ पल विकल परै न फल,
 पलक-पलक पुनि प्यारी ओभ रही है ।
 'आलम' उदास^२ यस रहत उसास लै लै,
 कछु पढ़ि डाखो कहौ कौन मग्ग पढ़ी है ।
 तेरी चितपनि भयो चकित अचेत मारि,
 वेदक-सो आग्यो कछु तूही चित चढ़ी है ॥४३॥

उनकी विकलताई देखि अकुलाई हौंही,
 लागै घड़ी वार समाचार कैसे कै कहीं ।
 तपत उसास आवै वारि न ब्यारि भावै,
 हौंही न ब्यारि भई सीरी सीरी है पहाँ ।
 'आलम' निपट अकुलाये हैं री लाल जुय,
 रस यस भये अश पायै कर सों गहाँ ।
 तजिये बिलम्ब यामें उनको अकाज होय
 चलिये कृपालु-है कै न्यारे कैसे हौं सहाँ ॥४४॥

कहुँ भूल्यो वेनु कहुँ घाह गई धेनु कहुँ,
 आये चित चैनु कहुँ मोरपंख परे हैं ।
 मन को हरन को है अदुरा^३ हरन को है,
 छाँह ही छुवत छवि छिन है कै छरे हैं ।

१-पेम-उत्तपात = प्रेम-कलह, पण्यमान । २-उदास = शोक ।

३-अदुरा = अन्तरा ।

'सेख' कहै प्यारी तू जौ जयहीं ते चन गई,
 तय ही ते कान्ह अंसुवनि सर करे हैं ।
 पाते जानियति है जू घेऊ नदी नारे नीर,
 कान्ह धर विकल धियोग रोय भरें हैं ॥४४॥

तेरी गति देखै गति मति मेरी भूली और,
 तैसेई धिया के रोम रोम कलमले हैं ।
 'शालम' अहे तो पापी दुहुँ दिसि पै नोई या,
 ऐम-परसंग के कहूँ ना दंग भले हैं ।
 धा धरी तैं वैसे ही उहाँही उहाँ और दोडि,
 पीठि पलटे तैं मानो कान्ह काह छले हैं ।
 चूर है के चेत्यो कहूँ धाँही सूधी चाबि आली,
 तू तो चलि आई धाँके नैनाऊ न चले हैं ॥४५॥

दोहनों के भिस तिहि गोहनु लगाइ चली,
 दोहनी भुलानी मन मोहनी मयी भैयो ।
 'शालम' कहै हो गुन गेहऊ बिसाख्यो उन,
 देहऊ सँभाख्यो नहीं नेहु पेसो है नयो ।
 लियिल सिवार सवै दूटे हुते वाग तू जू,
 लगोही किवार भाँकि हरि हरि सो लयो ।
 अधर मुखात वूम आधियो न आवै यांत,
 अधो मुख देखि मन आधोआध है गयो ॥४६॥

१-तिहि गोहन लगाइ चला = उसके निकट गई । २-गुन = हालत,
 दशा । ३-आधो आध = दो टुकड़े, धारल ।



साधे राज हंस ते-तौ हींसनि हँसाइ गयो,
 । 'ये री-तेरी गति देखि, फिरो गुन करी' को ।
 लांक क्री-लचक लसे लहँगा की दिग^२ दुरै^३,
 । 'चूरी ही में चाहि चूर भयो वाही घरी को ।
 'आलम' अजहु आदि रस यस पयो जौ लौं,
 जग्यो नहीं जोग वा वियोग-विस-परी को ।
 रूप गुन आगरी तू नागरी तें आगे^४ है कै,
 तें जु डग भरी डगमग्यो मन हरी को ॥४८॥

जोगी कैसे फेरनि, वियोगी आवै यार वार,
 जोगी है है तौ लभि वियोगी विललातु है ।
 जा छिन ते निरखि किसोरी हरि लियो देखि,
 । ता छिन ते खरोई धरोई पियरातु है ।
 'सेख' प्यारे अति हीं भिहाल होइ हाय हाय,
 पल पल अंग की मरोर मुरछातु है ।
 आन चाल^५ होति तिहि तन प्यारी चलि चादि,
 । भिरही जरनि ते बिरह जखो जातु है ॥४९॥

। नीदें सौं रखै त रखकन को, दुरै न ऐसे,
 पेम परतछ ज्यो पुरै न को सो पातु है ।
 नेक डीठि जोरतही चोरी, मई चालुरी की,
 । गौरी गुन आगरी, गरतु याही गातु है ।

१-करी = (करि) हाथी । २-दिग = गोद, संजाफ । ३-दुरै = था सक्त
 दोगया । ४-आगे है कै = बंद कर । ५-चाल = दशा । ६-आदि = देख ले ।

तेरे अरु पी के निजु ही के समाचार हैंरी,
 का की कहीं तोसों दुरि ज्यों ज्यों थिललातु है ।
 तनक मैं येग येसो मद हु को नाहीं मारि,
 जैसे येग नैननि मैं नेहु आइ जातु है ॥५०॥

संकेतस्थल वर्णन

सौधन सिखाय आय धीरजु यँधार लाय,
 यतरस लाय कहीं नेह की जु याम है ।
 'शालम' सुकवि कहु सोच ही मैं लोख्यो मन,
 काण्ड के घघन सुनि कानन हितात है ।
 जेतक नयोदा हियो पोदा के के विय तन,
 देखै दुरि दुरि नैना लागे याही घात है ।
 धलै कौठि कोर फिरै घूघट के छोर है के,
 लाजन के मारे तारे नीचे भये जात है ॥५१॥

भारं भारं है रही तो आरं सग्री धार मय,
 उन्हे येनि आरं जान्यो भूटे ही कहति है ।
 पुनि मुनि पाय धारे 'सेध' प्यारी सनमुख,
 ताकि मुख मोहनी सुमम ही गदति है ।



अंक भरि लीन्ही परजंका परःपौढ़ि तव, ॥
 सपनो समुक्ति वारि अखियाँ भरति है ।
 विरही हो भारी सुधि अजों न सँमारी अय, ॥
 तुम जानो प्यारी हम न्यारी है रहति है ॥

प्यारी पिय दोऊ पहिली ही पहिचानि भये,
 मान! जनु पाये ज्यों ज्यों राति नियराति है ।

'आलम' सकुचि लग-लोगनि' की लागी रहै,
 दुरि दुरि देखें डीठि कैसे कै अघाति है ।
 लाज हूँ की ठौर तिहि ठौर है सचेत इत, ॥
 कोर हूँ सौँ जोरि नैन सखी मुसकाति है ।
 पाँधति दृगंचलनि धीच मनु मानो चलि,
 चिकने से नेह गाँठि छूटि छूटि जाति है ॥५३॥

सरद उज्यारी निसि सीतल समीर धीर,
 सोधत पियारी पिय पाये सुख सैन के ।
 'आलम' सुकचि आगे जागै धै रसाल लाल,
 घालहि जगवै लगे लोभ बाल-धैन के ।
 बिलक सरौर शोमराजी राजै पिय पानि,
 पल्लव उठे हैं जैसे चंदन में चैन के ।
 सकुची पनच उतरै तैं चाँच चारु सोहै,
 धरे धे विचित्र मानों पाँचों वान मैन के ॥५४॥

१-लग-लोगनि = निकटस्थजन । २-सकुची पनच = सिकुड़ी हुई मर्यादा ।



श्यालम-केलि ६६

घुंघट जवनिका में कारे-कारे केशः निलि,
 खुटिला जराउ जरे डोघटि उजारी है।
 उघट किलक कटि किंकिनी-नूपर, हांजै,
 नैना नटा नायक लकुट लटः धारी है।
 कहै कवि 'श्यालम' सुरति विपरीति समै,
 थमजल अंजुली-पुहुप-सरि डारी है।
 अधर सुरंगभूमि नृपति अनंग-आगे,
 नृत्य करे घेसर को मोठी नृत्यकारी है ॥ ५५ ॥

नैसीये तरल तमधारः सौः तिमाल बेलि,
 रही हिलि मिलि मलि डोरनि के जोर सौ।
 कह्ये ललित रन्ध तारे से उज्यारे न्यारे,
 कह्ये रही एक है कलिन्दी छवि छोर सौ।
 कहै कवि 'श्यालम' किलक हांसी और ध्यनि,
 सुनिये न आन घानी निजु मन्द सोर सौ।
 कामिनी विलासी कारे कुंजनि में कारे कान्ह,
 जामिनि कहत जाम घोष भयो भोर सौ ॥ ५६ ॥



नायक की दूती

काम रस माते है, करेरी फेलि कीन्ही कान्हा; ॥ १ ॥
 फूलनि की मालिका हू; मोंडि मुरभाई है।
 'आलम' सुकयि यहि और सीम जानो त्यति; ॥ २ ॥
 ऐसी नारि सुकुमारि कही कौने पाई है।
 कमल को पोंत लै लै हाथु नयाको गत छूजे ॥ ३ ॥
 हाथ लाये; मैली हीय गत की निकारि है।
 अंचर दे, मुख सनमुख तासौ घात कीजे,

न तको उसाँस लागै मुकुर की हाई है ॥ ५७ ॥

हौ तो ल्याई कालि प्यारे क्रोटिक जतनु करि, ॥ ४ ॥
 तुम ऐसे रोस हैं; रुसाई सुकहा; जु की।
 'आलम' बिलोकि मोंहि मुख मोख्यो तौ में आई ॥ ५ ॥
 मैं हू मन में कही सुयोती रैनि अजु की।
 अलप बयसो अलबेलीये खरोये थाल, ॥ ६ ॥
 नबेली न लीजे यो खिभाई बसिता जु की।
 कर परसत कुंभिलात कलेवर धाको,

वांही तौ है एहो लाल फूल की सी नाजुकी ॥ ५८ ॥

१-मुकुर की हाई है = आँखों की तरह बसका मुख मलीने हो जायगा।
 २-तौ में आई = तब में आकर, कह हाकर। ३-बसिता = बरसता।
 ४-नाजुकी = सुकुमारता।



आलम-फलि है

जयहीं तू देखी ग्यारि घारि-चांसुरी विसारि,
 तनु मनु मोहि भयो महा दुखदाई है।
 कछु न सोहाय्य पै उसांसनि विहाय दिन,
 । पाही की संगति बित हित सौ हितार्थ है।
 'आलम' कहै हो पर पौर को हरनहारि,
 । चितु की कहानी सुसुकानि हो मैं भाई है।
 तेरे तो पवन मेरे प्रान के अघार हैं री,
 हा हा कहि कैसे कैसे समाचार ल्याई है ॥ ५६ ॥

कान झौंकी कौरि लागि गोरी गोरी जैसी आगि,
 तयहीं तैं आँबिन में आगि सी बरति है।
 आजै नैन खाये पान होरा जरी धीरैं कान,
 । दसन की जोति छवि हीरा की हरति है।
 ज्यो गई लगाइ नेहु बँडो है भुलाय गेहु,
 । पँठी मोहि देखि देह पँठियै परति है।
 मनु खोय पैनी भई पांजरनि बधि गई,
 । काजर की रेख उरै जाजर करति है ॥ ६० ॥

कुसुंभी पहिर दिये कुसुमा के हार मूँथे,
 केसरि कुसुम लखि लागै दग दूत री।
 अछराते आछी आछे चच्छु छवि छोरनिनी,
 । आछी आछी-काछी माँगी उरज अछूत री।

१ - हितार्थ है - अच्छी लगी है। २ - कौरि लागि - द्वार के एक पासे से लग कर।
 ३ - धीरैं = धीरे। ४ - जाजर = छेददार (जमेरित)। ५ - अघार = अन्तत।



आज ही मैं देखी कवि आलम अकेली जवाहल,
 चँद सो अघैगो अघै अघाही ते ऊतरी ।
 चितवन हँसों प्यारी हित वित वसि करि हँस
 चित में समाय रही चित्रा की सी पूतरी ॥६१॥

मुदित सरोज सम सुभग सो उरोज उर,
 चातुरी के खोज मैं मनोज बेलि घै गई ॥

कमल से हाथ रम जंघा गौन हाथी को सो,
 हाथ ही हाथन सब रयान मूलि लै गई ।
 अलबेली आलम मदन महा मोहनी सी,
 मोतन लगाह पीर मोहा मोहा दै गई ।
 विसुता की सानी बैस रूप की जुन्दाई जैसे,
 आधे ही निहार नैना आधे आध कौ गई ॥६२॥

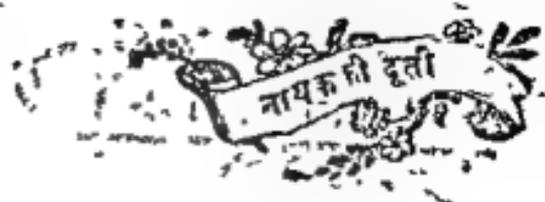
तपहुँ पठार्ह ही मनार्ह जाय आई हुती,
 उनहीं कछो जनाय जानो ऐसो रयान है ।

अप ही जो जाउँ लीनो नाउ दोनो चाउ नहीं,
 उतर न पायो फिरि आई ऐसे मान है ।
 'आलम' सुकवि कांहु कान लागि कीनी ऐसी,
 भाउ बलि ऐहै मतो यहै मेरे जान है ।
 अनमने होहु न अघोले कछु याते कान्द,
 आन भाँति कहीं मोंहि रावरे को जान है ॥६३॥



३३ आलम-केलि ६३

कहौगे : पसीठी 'यह' 'ठीठी' ? है करति आंगे ; ना ।
 । पि. पाछे चंदि-विरह-चहुँचा : बैठि कूकि है ।
 नेकु मंगल जात : देखि ऐसे मुरझाई रहे, पाणी
 १३ ॥ विघ्नत सुनि गत : तौ पतौया है कै सुकि है ।
 कौघरें हिया के नुम कठिन कटाछु कान्ह,
 पैठ जैहै पीठि है यहुँ जु दिगः कूकि है ?
 यहै डीठि मूठि सों चढ़ैगी हियो घेघि घेघि,
 यहै नैना धनुक न चहै सर, चूकि है ॥६४॥
 । इत न उठि नान न न नान न नान न नान
 यहै उनहारि रोकि । आई हौं निहारि मुख,
 । कहुँकर सरद ससिग केसी न अचुहारि है ।
 कौन धौं सँचार कीन्हौ सोमा को विचार सँचार,
 । सँचार 'घार' सौंवि मुख-चारिगहूँ, विचारि है ।
 बिन हूँ सिंगार कवि 'आलम' सिंगारो तन,
 गारे अक थोरे लांक सादी सुधो धारि है ।
 कहिये को मैनका पै रतियो नारूप ऐसो,
 ऐसी कान्ह देखे धनै जैसी नौकी नांदि है ॥६५॥
 । इत न उठि नान न नान न नान न नान
 अंग नई जोति लै ॥ धरंगना विचित्र एक नान
 । अंगन में अंगना अनंग की सो ठाढ़ी है ।
 उजरई की उज्यारी गोरे तन सेत सांगी,
 १३ ॥ मोतिन की जोति सौं जुन्हैया मानो पाढ़ी है ।



'आलम' सुआली वनमाली देखि चलि दुति,
 सुगढ़ कनक की सी रूप गुन गाढ़ो है ।
 देह को बनक चाको चौर में चमक छाई,
 छीरनिधि मथि किधौ चांद चौरि काढ़ी है ॥६६॥

ऐसें कैसे कहीं ऐसी औरनीको नारि ना पै,
 नीके कै निहारे अति नीकी करि जानिहौ ।

'आलम' सुकषिं रहम कहा पहिचानै नाथ,
 परख तुम्हें हो सब बातनि की खानि हौ ।
 जामिनी में जात स्व कुंज में उज्यारी होति,
 कामिनी कहोगे कहे कामिनी जमानिहौ ।
 सनमुखो हूय सौहैं डीठि, ठहराति नहीं,
 डीठि परे पीठि दण्ड आंजिन में जानिहौ ॥६७॥

अंग अंग जगै जोति जो ह सो उज्यारी हाति,
 उजरी उज्यारी प्यारी मानो चंद जली है ।

'आलम' कहे हो मन मन लौ बदेये बात,
 रूप को निकारै ताकी तहां लगि तैसी है ।
 और की पठाई हो तो आवति हौ राखरे पै,
 वा दिन की कुंज कोऊ औरी नारि ऐसी है ।
 वही भूली औरी भूली सब सुधि बुधि चाहि,
 ही तो देखि रोमी तुम देख्यो कान्ह कैसी है ॥६८॥

काम फेलि येलि सो अकेली कुंज थाम धरी,
 यदन की थामा जनु फूलतु कमल है ।



आलम-कलि ६१

कहि कवि 'आलम' जगमगत' अंग धाके,
 रवि के किरनि मिलि कयली को दलु^१ है ।
 चाँद सो चमकि उठो दाभिनी सो चमकति,
 ब्रज की भाभिनी रिधीं रमा^२ कीनो दलु है ।
 रूप की निकाई देखि हीं तो आई धाई काह,
 ऐसी जुचती के पाएँ जीतव^३ को फलु है ॥६५॥

सची को सरूप लैके सुन्दर सरोज आनि,
 सोमा सानि साँचे भदि ससिह समेत की ।
 जोवन की जोति अङ्ग मैना की तरंग तैसी,
 सोने की सलाका जानु फैली फूलि केतकी ।
 कहि कवि 'आलम' करति नित चालि^४ आलि,
 कैसे जाति धरनी हरनि हरि चेत की ।
 सादे मोती कंठ सोहै पंच रङ्ग अङ्ग चार,
 सुरंग तरौटा^५ सोहै सारी सार सेत की ॥७॥

सारी सेत सोहै नख नूपुर की आभा सेत,
 चंद मुख धारे अंग चाँदनी सो चन्द की ।
 उरज उतंग मानो उमंगो अतंग आवै,
 कसि पैठी आँगी उर गाढ़ी जरीबन्द की ।

१—दलु = गाभा । २—रमा = इसी भाग की अंपतरा । ३—जीतव =
 जोवन, निदगी । ४—चालि = चालवानी । ५—तरौटा = त्रैतरौटा (अंतरपट)
 चारो क साड़ी से नीचे पहनने का कपड़ा ।



कहै कवि 'आलम' किसोरी वैस गोरी जगो,
 जग की, उज्यारी प्यारी प्यारे नन्द-नन्द की ।
 सुभर^१ नितंब-जंघ रम्भा के से छम्म चलि,
 मन्द-मन्द आवै गति-मद के गयन्द की ॥७१॥

आठो अंग^२ निपट सुठानि धानि ठानि ठई,
 गांठि से कठोर कुच जोयन की ठंठी^३ है ।
 गुन की गँभीर अति मारिये अघन जुग,
 थोरे ही दिनन गोरी रूप रंग जेठी है ।
 कहै कवि 'आलम' दिखाइ दुरिआइ धारि,
 घटी घरी मारि मारि मनहि अमेठी^४ है ।
 सखी सौ कहत बात अंगमग मुसकाति,
 कौल के से पात नैन पातरी अंगेठी^५ है ॥७२॥

सीसफूल सीस घखो भाल टोका लाल जख्यो,
 कछु सुक मंगल में भेदु न विचारिहौ ।
 बेलरि की चूनी जोति खुटिला की दुनी दुति,
 वीरनि^६ के नगनि तरैया ताकि धारिहौ ।

१-सुभर = पूब भरे हुए, पान । २-आठो : अंग । यथा—

दो—पहिले जोयन, रूप, गुण, सील, प्रेम पहिचान ।

कुल, वैभव, भूषण, बहुरि आठो-अंग बखान ॥

३-ठंठी = गांठ । ४-अमेठी = (अंग + इष्ट) अत्यंत सुन्दर । ५-वीर = कर्णभूषण (दारें) ।

३ आलम-केलि

'सेख' कहै स्याम विधु पुंनों को सो देखि मुख,
 बुद्धि बिसरैगो बेगि मुधि न संभारिहो ।
 नभ के से जखत दुरैगे नही न्यारे न्यारे,
 दीपक दुराय तयः दीपति निहारिहो ॥ ७३ ॥

देह में बनक सी है लांक ह जनक सी है,
 नूपुरा बनक सी है महा छवि यंदी है ।
 चाल गति मन्द सी है लागै सुख कन्द सी है,
 निरखे तें चन्द सी है कोककला पदी है ।
 'आलम' के मभु बाके पटतर दीजै कौन,
 तेरे चित यली धई बाके सम गदी है ।
 आंगन में पशु भरै सखी कंध बाँह धरै,
 कंचन के खंभ मानो चंपलता चढ़ी है ॥ ७४ ॥

चंद्र की मरीचि भरि सखि दारी सीचि रस,
 कंचन जड़ित जनु रतन की पाँति है ।
 भूषण की आभा अंग सोभा के सुभाइ मिलि,
 चाहे चंकचौधे चितु रवि की सी कौंति है ।
 'आलम' मुकवि नेकु छौह के छुये तें कान्ह,
 काम के संताप ह की हाति सीरी साँति है ।

घोलति चलति चितयेति मुसकाति अति,
 रूप की निकाई छवि औरै औरै भाँति है ॥ ७५ ॥

१—बनक = सुन्दर बनावट । २—लांक = कटि । ३—मन्द = शान ।
 (शनि की तरह बहुत मंद गति से चलती है) । ४—पटतर = उपमा ।
 ५—चाहे = देखने से ।



मालती की माल सी विमल परिमल^१-मई,
 किसलय कुसुम सुपद्मिनी की जाति है ।
 सौंधे भीने छूटे चार भार तिहि अकुलाइ,
 डोले भर मोतिन की सर अरसाति है ।
 कहे कवि 'आलम' कुमारी गृपभान की सु,
 ऐसी सुकुमारि देखि छतिया सिराति है ।
 अलप धयहि केलि अलयेली अकुलाइ,
 कमल कलो ज्यों परसे तें कुम्हिलाति है ॥७६॥

जुवती जहाँ लौं आई छवि उज्यारी छार्,
 कुंज है जगमगात जीन्हि कोऊ जानिहै ।
 मैं हू पहिचानी, उन आप पहिचान्यो नही,
 अजहूँ मनोज हूँ सो नही पहिचानि है ।
 कहे कवि 'आलम' न ऐसी कहूँ देखी सुनी,
 रीझि रीझि रहौ कान्ह देखें मनु मानिहै ।
 सुखही की राति रसरसि ऊपरसि ऐसी,
 रोम रोम नख सिख पानिप की खानि है ॥७७॥

ससि है चकोरनि कौं भौरनि कौं कौल-माल,
 मृगनि कौं नादमई सुन्दरी सुजान है ।
 केलि कौं फलपतरु सोभा ही कौं रतिपति,
 कामे कौं पियूप ऐन काम ही के यान^२ है ।

३ आलम-फलि ६-

'आलम' सुकवि पत्रि रची है विरंचि ऐसो,
नेक हँ न देखि लेहु कहा तुमै ज्ञान है ।
रति को सुभाउ ऐन मैनका के हाउ भाउ,
रम्भा कैसे रूप सब गुन की निधान है ॥७॥

पदन विलोकि साध^२ सुधा की विबुध करै,
कुमुदिनि फूली जानि कुमुद को बन्धु^३ है ।
चम्पा,^४ सिंह, सारस, करिनि, कोकिला, कदलि,
पीतु, विष, लीने सब ही को मन बन्धु है ।
'आलम' सुकवि ऐसो कामिनि विचित्र रचि,
और को जू रच्यो चाहै तू ती विधि बन्धु है ।
जैसोये गुननि अति आगरी चतुर हरि,
तैसोई सरूप एक सोनो श्री सुगन्धु है ॥८६॥

कंचन को बेलि तन धानि^५ सो बहत दिन^६,
छिन छिन रूप जोति नैननि समाति है ।
भारी सो लगतु हियो ज्यों ही उर ऊँचो होतु,
डगनि भरित कटि दृष्टिबे इरानि है ।
'आलम' सुकवि हरि मोहति मोहनी है कै,
नेकु तिरछीहैं चाहि मुरि मुसुकाति है ।
यो जत चपल अकै मैनु थकै मैनु बकै,
सोभा की रसाल वास वरनि न जाति है ॥८७॥

१-रचि = बडा उद्योग करके । २-साध = इच्छा । ३-कुमुदबन्धु = चम्पा । ४-चंगरा विव = रूप प्रातिसमीति अलंकार द्वारा इनका अर्थ समझो । ५-धानि = रंग । ६-दिन = प्रतिदिन ।

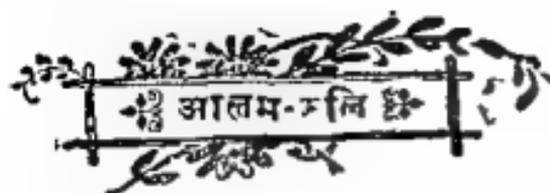


पहिरे फुसुंभीं सारों सादी सेत आँगे आँग,
 छानी छवि चाहि फेरि छाह हीं चाहति है ।
 चूड़ा पंइ फेरि करि बेसरि सुधारि धरि,
 फंकन करनि फिरि मन उमँगति है ।
 कहि कवि 'आशम' चनति फिरि ठाढ़ी होति,
 आलिनु के साथ अलबेल्यो हो करति है ।
 अलग लग्यो सो लौंकु घोले डग डोलै ऐसे,
 डगनि भरति अजु लगसां लफति है ॥८१॥

सुनि चित चाहै जाकी किकिनी की मनकार,
 करत कलासी सोई गति जु विदेह की ।
 'सेख' भनि आजु है सुफेरि नहि काल्ह जैसी,
 निकसी है राधे की निकरि निधि मेह की ।
 फूल की सी आभा सध सोभा लै सकेलि धरी,
 फूलि ऐहै लाल भूलि जैहै सुधि मेह की ।
 कोटि कवि पचै तऊ धरनि न पावै कवि,
 येसरि उतारे छवि येसरि के वेह की ॥८२॥

अलबेलीं यैस बाल चंपेली की माल गल्ले,
 अलबेली प्रीति विध रंगीली रंगमगै ।
 सोने की सी छरी छवि छाजति छयीलो तिय,
 अंग अंग ठौर ठौर मिलमिली सी लगै ।

१-अगतो = खंची नचकीली चोत की लौद । २-पचै = कोरिअ
 करे । ३-कवि = कवन । ४-वेह = (वेप) छेद ।



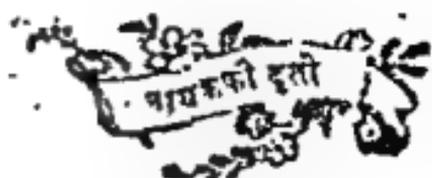
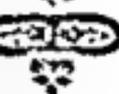
अलबेली डोलनि हँसनि पुनि अलबेली,
अलबेली डोलनि में जोति सी जगमगै ।
नैननि में भौहनि में अघर कपोलनि में,
ऐसो जाको जोवन-जराउ सो जगमगै ॥२३॥

हार हू को भार उर केहूँ ना सँभारै नारि,
अल्प अहार रस बाल को अहार है ।
सीरें सिधराइ तावें तातीसी है जाइ डोलै,
पौन के परस प्यारी पान की सी डार है ।
कहि कवि 'आलम' न रंभा हू न रति हू में,
मैनका' घृताची ऐसो रूप को अपार है ।
थानक विचित्र अब चित्रिन न होइ ऐसी,
वित्र लिखि पूनरी जिआई करतार है ॥२४॥

विरही विलंबि खाँगे? विरह वियोग माँगै,
प्रेमहि प्रतीति है सुनेमहि नियाहि हो ।
'आलम' सनेही ये जु देही के दहे हैं ते तौ,
ओगी जैसे मिले हैं वियोगी जामें ताहि हो ।
बीघनि भी भौंकि चकचौधनि लगाई जिन,
कालिह तैं कन्दाई तुम रोकि रहे जाहि हो ।
पूयो ऐसी आनि घर पैठिहै घरी में यलि,
देहरी खुवार लगि दीपकु न चाहि हो ॥२५॥

१-मैनका, घृताची = इन्द्रपुरी की अक्षरा विशेष ।

२-खाँगे = कम होता जाता है, शून्य होता है ।

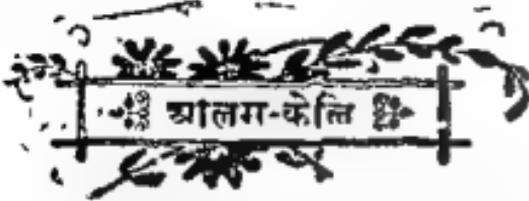


पानिप सौ मोती जैसे थहगन थार पर,
 तैसई चपल नैन थिरकनि थोरी है ।
 बचन फँ आंगे भाइ भौहनि अगाउ जाइ,
 'सजनो समुक्ति रोक्ति आण भायें' मोरी है ।
 'आलम' कहे हो बिधि उर ते उतारि आनि,
 पान की सौ अनी सौ उलटि कटि जोरी है ।
 भीनी आंगी झूलके उरोज को कसाउ कसे,
 जावक लंगायें पाउँ पायक तौ मोरी है ॥६॥

तरल^२ तुरंग नैना तरनाई मरि आई,
 गोरे मुख सोहे अरुनाई अधरन की ।
 सरल सुदेस केस तरल तरौना^३ दोऊ,
 चलात कलाई नीके ललित करन की ।
 अमर-मूरति कवि 'आलम' है मेरे जान,
 फौज अमरायती तै आई अमरनकी^४ ।
 रमाऊ न भायें ऐसे रूप को आरंभ^५ देखि,
 सोभित सरीर मधि आभा आभरन की ॥ ६७ ॥

रस भरी रूप भरी सुखद सुखान भरी,
 सोमां के सुमाई भरी ऐन मैनका सी है ।
 दर्पन सी देह ऐसी नेह को नई नवल,
 प्रज में न देखौ कोऊ सुरपुरवासी है ।

१-अप भायें मोरी है = अपनी समझ में भोली भाली है । २-तरल =
 चंचल । ३-तरौना = कर्णपूज । ४-अमरन की = देवकन्या ।
 ५-आरंभ = प्रथमोत्थान, उठान ।


 आलम-केलि

'आलम' सुकवि लोनी सोने के सरोजहू, तें,
 फूल ही के भार^१ भरि-पान की लता सी है ।
 चंदन चढ़ाये चंद चाँदनी सी छाई रही,
 चन्द्रमा सी मुख छवि हाँसी चन्द्रिका सी है ॥२॥

ससि तें सरस मुख सारस से राजें नैन,
 जोन्ह तें उजारो रूप रघनि^२ रसान सी ।
 रति हू तें नोकी प्यारी प्यारे कान्ह जाके पाछे,
 बेनी की बनक डोलें मानो अलि आलसी ।
 सारी सेत सोहैं कवि 'आलम' विहारीः संग,
 चलति बिसद गति आनुर उताल सी ।
 फूल ही के भार भरि सीस फूल फूलि रहे,
 फूली सांभ^३ फूली^४ आवै फूलन की माल सी ॥६॥

धज की नागरी धजनाथ अति धान प्यारी,
 चली रूप बनि बनि वासव की बाल^५ सी ।
 रसिक रघन तजि आरस सरस मति,
 रसना^६ की ध्वनि घोली रसना रसाल सी ।
 गोरे गात गहनो जराउ को जगमगत,
 ऐसी कवि 'आलम' है जोवन-सु-भा^७ लसी ।
 शोपति नवीन नग पाँति पट भाने मानो,
 फंचन के खंभ में दिपति शोप माल सी ॥६॥

१-भार = बजन, लोड । २-रघनि = (रमणी) स्त्री । ३-फूली
 सांभ = संघ्ना समय । ४-फूली = अति हृषित । ५-वासव की बाल =
 पीरपट्टी । ६-रसना = किकिणी । ७-सुभा = सुंदर दया ।



मृग मद पोति भाँपी नीलधरः तऊँ जोति,
 धूम उरुभाई मानो होरी की सी भारी है ।
 लै चली हौँ अंधियारी अंग अंग छुबि न्यारी,
 आरसी मैं दीप की सी दीपति पसारी है ।
 ऊजरो सिंगार 'सेख' जोन्ह हूँ को साजु कीनो,
 जोन्ह हूँ मैं जोन्ह सो लसै सुधा सुधारी है ।
 पार बार कहत हौँ प्यारी काँ छपाइ ल्याउ,
 कैसेँ कै छपाऊँ परछाहियो उज्यारी है ॥६१॥

थोरे भाइ रीक्ति राचे प्रेम प्रीति पुरी सचि,
 ऐसे रिझवार को गिराई गई मैन ही ।
 प्रोढ़ा नहीं प्यारी सो नवोढ़ा अलखेली जानि,
 खेली एक संग ते सहेलियो कहैं नहीं ।
 पारी खाहु 'सेख' भनि पीरे पीरे होहुँ जनि,
 विरहु को भेदी याके भूलि हूँ भिदै नहीं ।
 यैन ही मैं कालि कहूँ मैन की सी मूरि डारी,
 मैन ही के राखरे सुनाउँ नाते मैं नहीं ॥६२॥

१—भारी = लौ, लपट । मिलाओ = "जाके तन की छाँह दिग मोय
 छाँह सी होत" । (विहारी) । २—मैन = (गमन) चाल । ३—भेदी =
 फाड़ में छेद करने का यंत्र । ४—आप भी मोय (मैन) के बने हुए हैं ।
 तममें तनक भी मैं (सुदारी) नहीं है ।

३ आलम-केलि है

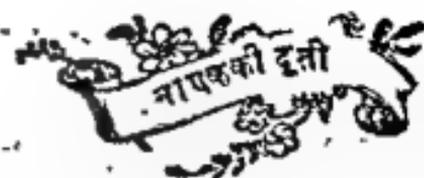
अखियन लागी ढरौ तब लगि फेरी करी;
 तेरी मनु माने तब मेरी यह काजु है ।
 सजनी चुलाई सब खोज लेन धाई तब,
 सौहं करौ साजन समीप ही को साजु है ।
 कालि मुकि^१ पैठी आजु हंसि घर पैठी, मिटो
 मान मद, भयो चाके मदन को राजु है ।
 सीम्ही^२ यह घात जाते रात पीरे, गात भये,
 सीम्ही नहीं कान्ह तुम्हें रीम्ही यह आजु है ॥६३॥

रस में बिरस जानि कैसे, बसि क्रीजे आनि,
 हाहा करि मोसों अब बोलि ही तौ लरौगी ।
 औरनि के आधे नाउँ आधी रैनि, दौरि जाउँ,
 राधा जू के संग पै न आधो, डग भरौगी ।
 'सेख' होत न्यारे ऐसी पीर लाये प्यारे तुम,
 अयहीं, ही बिरह, बखाने पीर हरौगी ।
 आज हू न येहे कोऊ कालि बलि जेहे सौहं,
 परी^३ लगि ही ही चाके पाय जाय पारीगी ॥६४॥

निमुकनि रैनि मुकी थादर ऊ मुकि आये,
 देख्यो कहौ भिक्षिनि की मारि^४ भहनाति है ।
 पानी ते न पैड़ो^५ वृक्ष पानि पसखो न सूक्ष,
 काजर सी आजु की अंध्यारी कारी राति है ।

१—मुकि पैठी = नारान् हो गई । २—सीम्ही = पूरी हुई । ३—परी = परछी ।

४—मारि = मत्तकार । ५—पैड़ो = मार्ग ।



प्यारी पै पठावत न मेरी पीर पावत हो, ...
 प्यारी तौ तिहारी पिय तुम ही पत्याति है ।
 देह काँपै देखें द्वार गेह छाँड़ि पती यार
 'मिहरी' की जाति कोऊ दिहरी लैं जाति है ॥६५॥

जाकी घांत रात कही सो मैं जात आजु लही,
 मो तन तिरोछे हँसि हेरि सुख दियो है ।
 ऐसे देखी आन कोऊ सो न देखी आन^१ तुम,
 धाके देखे मानस मरु कै^२ कोऊ जियो है ।
 कै तो कहूँ धीधो^३ डर बेधिये^४ को ठौर नहीं,
 'सेख' ऐसे राघरे कठोर मन कियो है ।
 पीरो नहीं प्रेम पीर सारो न सिधिल भयो,
 चीरो नहीं चितु या सु^५ हीरो है कि हियो है ॥६६॥

मोती कैसी डरनि डरकि आचै नैना नेहु,
 तुमैं^६ डौरी^७ लागी जानौ गौरी डरि आई है ।
 'सेख' भनि ताकों हाय हाय करौ पाय परी,
 आय धाय ऐसी जीय कैसे करि आई है ।
 नेहु नहीं नैननि सनेहु नहीं मन माहि,
 देह नहीं बिकल वियोग जरि आई है ।
 भूठे ही कहतु परबस मखो जातु ही सु,
 पर^८ बस नहीं परबस बरिआई है ॥६७॥

१—मिहरी = श्री । २—आन = आनवान । ३—मरु कै = मुरकिल से । ४—धीधो = अटका है । ५—डौरी = घानि, आदत ।

॥३॥ आलम-केलि ॥३॥

भोरी घैस राची जिनि भुरये हौ साँचो नहीं,
 काँची प्रीति जानौ, जहाँ वहुँ नैना लागे हैं ।
 'आलम' सनेही ते वे पैड़े नै न बँड़े होदि,
 ऐम पैड़े आये पैड़ बड़े ही सो भागे हैं ।
 विरहनि बेधे नहीं जानत सनेह सील,
 लोनी देह दरसन पल, पल जागे हैं ।
 अजौ मसि भीजी नहीं ऐसी मन यसी बातें,
 बोली ठोली हाँसी के कन्हाई दिन आगे हैं ॥३६॥

जानति हौ तुम आपु आपुने ह हाथ नाही,
 कछु मन खिन ही मैं खीन है कै खोयगौ ।
 खरेई निडर पैठे बगर उसाँस लेत,
 जानति हौ इन अँसुअति डरु धोयगौ ।
 रोयषो है कान्ह सुतो सोयषो को नेहु नहीं,
 नेमु यह ऐम-पधु आये दुख बोयगौ ।
 आँखिन के आगे तुम लागेई रहत नित,
 पाछे जिन लागो कोऊ लोग लागू होयगौ ॥३६॥

मनु मिल्यो जासौ सुपनेहँ मिलि जैए थलि,
 हिये मैं जौ है है ती ॥३७॥ एती कहा हाते की ।
 'सेख' भनि प्रथम लगनि हिलगाने तन,
 तैसो आये ताँवरि^४ भँवर मद माते की ।

१—मति भीजना = देख आना । २—लागू = निकट । ३—एती कहा हाते की = इतनी रुकावट की । ४—ताँवरि = घुमरी (घूम घूम कर गिर पड़ना)



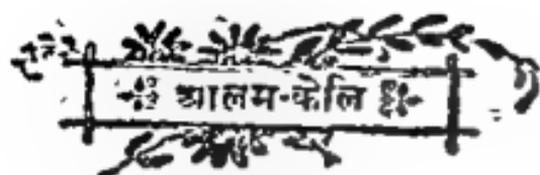
जैसे तुम विधे ऐसे ग्यारिनि विधी है कान्ह,
 हौं नाकहौं यात राखि ठकुर-सोहाते की ।
 पै ननि को भतो घाँके मन हू में नाहिनै पै,
 कछुक मितार्ई देखी नननि के नाते की ॥१००॥

रहै डीठि कोर-ढाँके घहुखो भरोघा भाँके,
 दुहँ कर कौरो टेकि डारो भाँके दौरि कै ।
 हुती अलयेली तैसी लगी-तलावेली अंग,
 नये नेह खेली लाजु हारी तिनु तोरि कै ।
 'आलम' कहै हो घरी घरी अटा चढ़ि जाय,
 चाहै चहँ ओर पाछे राखै नैना मोरि कै ।
 नेकु चलै चितै छाहँ ऊमी है कै ऊमी बाह^२,
 थार पाठ अंगराय आँगुरिनु जोरि कै ॥१०१॥

(विरह वर्णन)

परम भावती तेरी लाल मैं विकल देखी,
 घपु न सँमारै कछु उठि न सकति है ।
 कीनो फहा मोसौ कही स्याम हौं यलाह लेउं,
 जात धकधकी उर अनल धुकति^३ है ।

१—ऊमी हवै कै = सड़ी होकर । ऊमी बाहँ = बाहँ ऊपर की उठा कर ।
 २—धुकति है = जलती है ।



डारे सीरो नीर होति : घीये ज्यों प्रयत्न ज्वाल,
 भर भर : सिर पाँह भभकति है ।
 एक ई अघार चांके हिये है रहतः प्रान,
 घाटक^१ लगाये मगु कुंज कौं तकति है ॥१०२॥

तीर सो लगै समीर ससि सौ कहति सुर,
 विषु घनसार भयो सारी भई सार^२ सी ।
 'आलम' अंग दाह कौनो है अशह^३ तन,
 अंगना के अंग अंग तंपनि अंगार सी ।
 दुखनि अडार^४ लाय सुखनि बिडार जाय,
 मारि मैं डारि दीनी पीरी पीरी डार सी ।
 अजहूं लीं पायं धारि तोपि लीजै पोषि नारि,
 सोचही के सोक सूखी जैसे अलघार^५ सी ॥१०३॥

ताती होति छाती छिनु जूड़ियो है जाति कछू,
 ताती सीरी राती पीरी वृक्ति न परति है ।
 'आलम' कहै हो काहू कौन विथा जानों चाकी,
 मौन भई काहू की न कानि हू करति है ।
 आगि सी भंवाति^६ है जू ओरो सी बिलाति है जू,
 छिनु हू न देखे सुधि बुधि बिसरति है ।
 अंघुवनि भीजै औ पसोजै ल्यों ल्यों छोजै बाल,
 सोने येसी लोनी देह लोन ज्यों गरति है ॥१०४॥

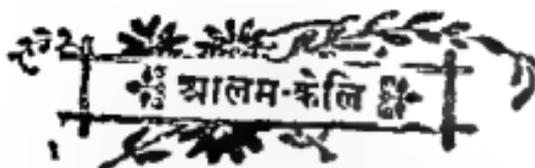
१—घाटक = टकटकी । २—सार = लोहा । ३—अशह = (आशय)
 पूर्णरति से दण्ड । ४—अडार = समूह । ५—भंवाति है = बुझती है ।



बेगि ब्रजराज तजि काज नेकु चलि तहाँ,
 ; जहाँ यैनी प्यारी है सकल सुख दैन की ।
 'आलम' चकोर बिन चंद्र की चमक ऐसी,
 चकित है रहै नहीं आवै यात बैन की ।
 सेज पर अँसुवनि सानि कै सुमन सब,
 सैनन सुनावै सु सकति नहीं बैन की ।
 राति सिसिराति^१ न सिराति^२ सु सुरतिहीन,
 सारस घदनि सु खतार्ह अति मैन की ॥१०५॥

विधा को विचार कै सकानी ॥ न जान्यो नेकु,
 पीरी होति जाति अरु तातो सारी गानु है ।
 सुमन सुहाते तैं तो हिये हूँ ते हाते करि,
 नैननि सौँ चाँद नेकु हेरे न दितातु^३ है ।
 तुम्हरे बियोग कवि 'आलम' बिरह बढ्यो,
 तुम बिनु प्यारे हरि कंतु न यसातु है ।
 आई^४ हूँ को ओर आवे ऐसी गति होति भई,
 ओरती^५ से नैना आँगु ओरो सो ओरालु^६ है ॥१०६॥

१—सिसिराति = सर्दी पड़ती जाती है । २—सिरात = बोलती है ।
 ३—हिये हूँ ते हाते करि = हृदय से त्याग दिये हैं ; ४—दितात है = धरदा
 लगता है । ५—आई = आयु । ६—ओरती = ओलती । * ओरालु
 है = सतम हुआ जाता है ।



अंचर की श्रोत्र के कै-कोटनि की श्रोत्र कोन्हें, ...
 परत फफोट^१ है थयारि लागे धन की ।
 मलय कपूर आनि राजिय-के-रस-सानि,
 नेकहू के लागे अति जागै आगि-तन की ।
 'आलम' सुकवि कहै यायरी है मोंगि^२ रहै,
 हाह हाह कछु पीर पायो वाके मन की ।
 हम सब जतनु-जुवति करि हारी अथ,
 तुम ही कहो सुनाय जतन जियन की ॥१०७॥

अनंगु दहतु याकों अंगन-सहन दुख,
 अंगनहि-सीरी करी अंगनहि आह की ।
 फूल जलु चन्दनु समीरहुँ न-सीरी होति,
 अतिहि तपति थकी सकल उपाह के ।
 कहि कवि 'आलम' न डोलै औ-न धोलै बाल,
 नैन आँसु धार दरै पैठी मुरझाह के ।
 मानो बिनु नीरंहि अघार^३ बेलि ढोली जाति,
 फटिक सलाका दुहं राखी टेक लाह के ॥१०८॥

घैननि संतोपे थौन, नास धान-हुँ अचानी,
 अति हुँ अनूप ओष रूप तोपै नैन द्वै ।
 अधर मधुर परसत रसना-सरस,
 काम केलि मिलि सुख साँचे अंग अंग छ्यै ।

१-फफोट = फफोले । २-मोंगि रहै = चुप हो जाती है । ३-मानो
 जाति = मानो बिना निरुत्स्थ आधार के कोई लता गिरी जाती है ।
 ४-दुह = दोनो धोर ।

अब कवि 'आलम' बिलोहे विधु 'छिनु तिय, ;
 पिय पोय कहि कहि कहै कहो कहाँ स्वै ।
 सुरति समानी मन मनहों मैं देखि बोलै, ;
 मोरे जान पाँचहु समाने पाँच रूप है ॥१०९॥

पिय जक लागे ॥ विकलः यकि यकि जाह,
 पूछे हँ न कहै कहु काम छाया है छली ;
 'आलम' सुकवि लोग कहत मरुत औरै,
 अति कै मरुत काम डरी मरी है अली ।
 जेतो उपचार कीजै तोतोई बिकारः होतु,
 जानि ऐसी बातः हों तौ प्यारे तुम पै चली ।
 चन्दन खुवायेः नलिनी को रसु नाये आँगु, ;
 पानी पायेः जैसे प्रजरति चुने की कली ॥११०॥

अटा चढ़ी हुती विधु छटा सी छबोली प्यारी,
 उरुकि भरोषा तुम कान्ह ठाढ़े हँ कहँ ।
 उतहीं गिरी हीरै घैसी जौ न आली आनि लागै,
 जीवन की औधि हीरै सु ऐसी टरी टेक हँ ।
 'आलम' मयंक पुरो परिवा सो है गयी है,
 कुह जौ न परै तौ रही ही कला एक हँ ।
 पतियै अई तौ अब जौ न येनि ऐहो प्यारे,
 एहो निरदर्ह तोहि दया नहों नेक हँ ॥१११॥

जरीयै रटति ताकी जरी नं जुरति कहै, ॥११८॥
 जड़ है रहति फिरि जूड़ियौ कहति है ।
 'आलम' मुकवि सुधि एकी न परत कान्ह,
 देहहि विकल ; किरीं विरह दहति है ।
 सेज तें परति भूमि बैठे तें उठति पुनि,
 ऐसे यहराह तय पीरहि खहति है ।
 उलटि पलटि लोटि लटकि खपटि जाति,
 खटपटी लागे खटपाटियै गंहति है ॥११९॥

जाखो जु मनोज सिंघ तीजै नैन ज्याला करि,
 यहै जोर जुर आयो तेही ज्वाल जरी है ।
 विरह अपार ताकी पीर को न पारि पायो,
 पीर के उपाह बिनु पोढ़े पास परी है ।
 एते पर 'आलम' वसंत यह बैरी भयो,
 बिस सी बघारि लागै ते ही बिस भरी है ।
 कीर की कलह कलमल्यो मनु कोकिला ह,
 कुहकि कुहकि कान कलकान करी है ॥१२०॥

प्रीति की परनि बैरी विरह की जोति भई,
 हारे सब जतन जहाँ लौ जानियत है ।
 वेदन घटै न विघटी सी वहै जाति 'सेख'
 आन आन भाँति उपचार आनियत है ।

१--जरी = जड़ी, धूँ, शोषण । २--पोढ़े पास परो है = बड़ी दूरी
 काँच में पड़ी है । ३--कलकान = परेशान ।



जन्म है न जरी कछु मरी जाति कन्त विनु,
 'नेह निरमोही के न मन्त्र मानियत है ।
 चन्दन चितैएँ वरै चाँदनी न चाहो परै,
 चन्दा हू की ओट को चँदोया तानियत है ॥११४॥

सीतल पनारी^१ जानि डारी पंच नारिन में,
 पानी की पनारी^२ चहँ और भरी पूरि है ।
 ओस में पसारि कै उसोर आनी सीरी करि,
 तैसियै तुपार घनसार हू की धूरि है ।
 'आलम' कहै हो एह जतन जुडै ना याल,
 जीय की कठिन जोधो जुवती जो दूरि है ।
 आस यहै एक है उसाँस जा न रुँधे छिनु,
 'नेहु के निवाहिये को आहि^३ बड़ी मूरि है ॥११५॥

इहाँ तो ठकुरई है, अघै नहीं और 'घार,
 रावरे जु आपने सुभाइ फौहँ आरहौ ।
 'सेए' कहै उनके तो उनै रहे नैन भरि,
 मोहिं फेरि मोहन बिलंघ दरताइहौ ।
 अब न चले तौ फिरि चलि न सकौगे उन,
 अँसुवन फान्द कहँ ठाहर^४ न पाइहौ ।
 आइ घर राखौ बैठि घरनि को घेरि नातो,
 घरिक में हरि घरनाई^५ चढ़ि जाइहौ ॥११६॥

१-पनारी = पौनार (पननाल) कमलनाल । २-पनारी = नाना
 ३-आहि = आइ, ठंडा साँस । ४-अहर = जगह, स्थान । ५-घरनाई =
 घनई, पटों को बनी हुई नाव ।

तूहँ आई हों हूँ आई चाहौ, दौरि आवति है,
 ताकी कौन गति जाके जरै जीय जरिये ।
 मूरि फों गई ते आई तेऊ इतही फों धाई,
 जान्यो बैरि विरह विरोधे जाहि डरिये ।
 एतौ धीरें धीरें ऐहें बने वांगे यीर जैसे,
 ढोले पाँइ धारत उपाइ, कौन करिये ।
 देखे दुख तोय के बिसेपे मरियो है माई,
 लखे^१ नाहीं पीय के परखे^२ याहि मरिये ॥११७॥

जीय की कहै न अनमनियै रहति प्यारी,
 मनु ठौर नाहीं सोई नारि शौरै है भई ।
 सुतनु पसीजे उर अंसुतन भीजे, छीजे,
 फहौ कहा कीजे जानो ठग मूरि है दई ।
 'शालम' सुकधि दिग हँसति सहेलनि सों,
 सपनो सो देखयो काहू अपनाइ-सो लई ।
 बैन की सु-धुनि मुनि नेक ही भरोया भाँकि,
 शकल-विकल^३ कछू याचरी सो है गई ॥११८॥

चलहु छमीले पिय दुबोली सों प्रीति पढ़ै,
 एगारु छपे पाछे दिन को उदौन है ।
 सो तिय सताई मैन नैना सित अस्मित ते,
 अंसुया चलत जनु सरिता को सोत है ।

१-तेरे...के = नियतमको इस बात का कुछ ध्यान हो नहीं है । २-पूरे
 यमई = इसी को सौंसे समझ कर । ३-कहत विकल = अत्यन्त व्याकुल ।



पती घेरं भई मोहि इता आये मेरो उते,
 । मनु तुम विनु तपै तनक न ओते है ।
 चूनी सो लग्यो है आँग सुनो स्याम बिधां वाकी,
 'सुनो भौन देखि ताहि दूनो दुख होत है ॥१२६॥

अधर अधर विनु धरे न धरति धीर,
 माधौ सुधानिधि चाके प्रान के अधार जू ।
 बिलपति घाल सुअवल धोलै बोल लाल,
 बोलति है बिललि बिलोकति है वार जू ।
 'आलम' अल्प साँस रही है सरीर सोई,
 । जतनन सखी राखै काने सोधि सार जू ।
 बसन बिसारे बैसी मदन बिसिख बलि,
 । बिस को लहरि जैसे जाति बिसँभार जू ॥१२७॥

रुठे तैं न ठौर छाँड़े उठै न उठायै हठि,
 कडिन हठीली अति वैठी निदुराई कै ।
 कोरु की कहानी कही तासों कही कहा कही,
 'आलम' लु कहि रहै जगनि हौ कुराई कै ।
 मेरी न सिखति सिख आपुनी सिखायै सिख,
 सखिनु को सिख थकी सिख खों दुराई कै ।
 तुम हो चतुर चतुरापी वै तो चातुरो है,
 । चाहि चित चोरि लेहु एक चतुराई कै ॥१२८॥

१-ओत = आराम । २-वार = द्वार । ३-सार = पबंध । ४-जाति
 बिसँभार = बेदीध हो जाती है । ५-कुराई = क्रूरता । ६-चतुरापी =
 चतुरपना ।

आलम-फेलि ही

कहूँ मोती माँग कहूँ राजवन्द भवा भरे,
 कहूँ हार फंकन हमेज टाँड़^१ टीक^२ है ।
 ऐसे कै विसारी स्याम, ऐसी यैस ऐसी घाम,
 विहकि पपीहा को सी धार धार पी कहूँ ।
 'सेख' ध्यारे आजु कालि आल चाल देखौ आइ,
 छिन छिन जैसी तन-छीजन की छीक^३ है ।
 सेज-मैन-सारी^४ सी है सारी हूँ विसारी सी है,
 विरह विलाति जाति तारे को सी लीक है ॥१२२॥

कीजिये न धार यह धार और धार नहीं,
 नैकु धार लागेहू, ते धार ते विलेपिहौ ।
 खरी है निसाँसी^५ तें तौ फीनी है विसासी मारि,
 दसई दसा सी लाख भाँति लखि लेखिहौ ।
 जानन हो लाल जैसे होत हैं हवाल फिरि,
 बाल विसराइये को रेश आन रेखिहौ ।
 पावक तें प्राणति हीं पाँलुरी सी राखी है मैं,
 ध्यारे फिरि लागे पल राख आनि देखिहौ ॥१२३॥

पान^६ की सी पान खाये हेम कैसे गानी न्हाये,
 पीयूष सो पानु किये पानिप है जो कही ।
 कोककला की सी कला कोकिला सी फल कुल,
 काम को कलाँल अरु जेनी कला ओक ही ।

१-टाँड़ = भुतदर का आभूषण । २-टीक = गले का आभूषण ।
 ३-छीक = छया । ४-मैन-सारी = मोमनी बनी हुई मोट । ५-निसाँसी =
 स्नोसे हीन (मुदाँ सी) । ६-पान की सी = पान की कला सी मुलायम ।



'आलम' विचित्र हरि. आपुं ही रिझाय आई,
 आपनी हित्तूयै जानि आये बाके ओक ही ।
 लोल लता ललित ललामताई ललितता की,
 लाल लालची कै लाई लष अवलोक ही ॥१२४॥

सखी की उक्ति सखी प्रति

नेह सौं निहारै नाहुं नेकु जागे कीने बाहु,
 छाँहियो छुयत नारि नाहियो करति है ।
 प्रीतम के पानि पेलि आपनी मुझे सकलि,
 धरकि संकुचि हियो गाढ़ी के धरति है ।
 'सेख' कहि आधे घैना धोलि करि नीचे नैना,
 हा हा करि मोहन के मनहि हरति है ।
 फेलि के अरम्भ खिन सल के बढायवे को,
 मोढ़ा जा प्रवीन सौ नयोढ़ा है डरति है ॥१२५॥

कौरि आनि लागै पिछुवारे सखी जागे सौति,
 आस पास मौन के उसाँस ही को भरु है ।
 उन घसि कीने कान्ह देखन न दीने काहु,
 मैं हूँ बस कौहीं न दिखैहीं कछु भरु है ।

आलम-केलि

'आलम' विचित्र स्याम आये मेरे मया करि,
 ओऊ तिया आवी-बैठा उनही को घर है।
 पाये अरु पाये श्री छपाये छतिया लगाये,
 काम ते निडर भई अथ काको डरु है ॥ १२६ ॥

देखयो है कन्हारी तव ऐसी है कै आई तो मैं,
 कोटिक उपाय लाय जतननु ज्याई है।
 'आलम' कहै हो आजु बैठे ही गिरी ही सुनि,
 कहँ नेरे बैरी आनि बांसुरी बजाई है।
 मेरे ऐसी मूरि ही मरी हू जिये छुये छिनु,
 मरे ते कठिन यह कैसी मुरछाई है।
 मारे डारे बिस ज्यों बिसारे धान मारी जानु,
 भारे हू न मानै मानो वारे कारे खाई है ॥ १२७ ॥

आवत ही लखी बाल अतिही बिकल कछु,
 तन नः सँभारै जानो कान्ह देखि-आई है।
 वंसी को सबद किधौ बिसको धसेरो सेप,
 किधौ बाँस बिसअर ताके छौना खाई है।
 मोपै मुरी मंत्र हो सजीवन घनन्तर को,
 ताहू पढ़ि दोन्हे एक लहरौ नः पाई है।
 नाँउ सुनि बाल तव मैर सो जगत अरु,
 रसु सो पियाय कहँ जतननु ज्याई है ॥ १२८ ॥

१—वारे कारे खाई है = साँप के बच्चे ने काट लाया है।

२—बिसअर = विपपर (सर्प)।

विरह की मूरि जिहि मुरली के मारे माई,
 को न भई जोगिनि वियोगिनी वैरागी है ।
 एक घरजे तें गई दौरी सुनि दौरी भई,
 ताको धन मेलि मूरि लैन को न भांगी है ।
 पावन दै पोर पेम आयन दे पुरा नेह,
 आंजु हो ते जरनि जुन्हैयाह सौ जागी है ।
 मेरी जो न कह्यो मानै मेरियै यलाय जानै,
 आगन दै लाई याहि लागन दै लागी है ॥१२६॥

जड़ी यौ जनाई माई किधौ काहू डीठि लाई,
 औचक मिले कन्हई छतिया घरक तै ।
 घायल तराइल^२ सी मानो करसाइल^३ सी,
 धार धार धाइल^४ सी घूमति घरिक ते ।
 लै गई लयाय घरघाली^५ घर घालिवे को,
 ही न उन्हे देत होन बाहिर फरिक तै ।
 दोहनियो डारि सिर मोहनी डराय आई,
 धहर धहर आई कापित^६ घरिक तै ॥१२७॥

आपुन देही है परदाह को विलगु मानै,
 जानि वृष्णि रिभुवति या कुवानि राधरी ।
 'आलम' संताप तन ताके हू तिया को तपै,
 ताके नेकु कान्ह ताको तोहि कहा ताधरी ।

१—लाय = अग्नि । २—तराइल = (तरल) चंचल ।
 ३—करसाइल = (कृष्णसार) मृग । ४—धाइल = धातुल (जिसे धाई
 चढ़ी हो) । ५—घरघाली = घरको धराय करनेवाली ।



आलम-कलि ६१-

तरुनी की उग कहा मुनि ही डुलावे सुर,
 मुरली के सुनत डुलावे सीस, डावरी ।
 पेम को परोइ लीजै विरह न धोरि दीजै,
 नेह को निहोर कीजै छीजै बिनु पाँवरी ॥१३१॥

घर है कि वनु ह्यौं तौ भूलि परी जनु तेरो,
 कहा भयो भनु कहि कौने घसि कीनो है ।
 जकी सी औ थकी सी है चितवति चकीसी है,
 छली है कि छकी है कि काहू कछू बीनी है ।
 'आलम' विकल बागी नैन की ठगौरी लागी,
 नैननि की टोरी लागी तातें तनु छीनो है ।
 यहई सुठौरई है परयस धौरई है,
 हौं तहीं सो औरई है जाको नाँउ लीनो है ॥१३२॥

हँसे हँसि देह बोले बोले औ न खोलै पेम,
 यातें पहिचानी कछु पीरी पीरी है भई ।
 'आलम' कहे हो याके हिये की पोढ़ाई देखौ,
 कैसे कौ दुराई माई प्रीति कान्ह सौं नई ।
 अयै अनमनी हुती अँसुवा भरति ठाढ़ी,
 औचक हो धाई धाई भुज भरि है लई ।
 पूछे तिहि अँसुवा कहे हो ? कहे कैसे आँसु,
 पलकें पसारि दई पुतरीनु पी गई ॥१३३॥

१—डावरी = छोकरी (नवोद्ग) । २—परोय लीजै = मान लेना चाहिये । ३—बागी = घमती फिरती है । ४—धाई = दूध पिलानेवाली ।

फूली साँझ^१ कै सिंगार सूही^२ सारी जूही हार,
 सोनो सो लपेटे गोरी गौने की सी आई है ।
 'आलम' न फेरफन्द^३ जानत ही खंदमुखी,
 नन्द भौन दीपक जगाइवे को ल्याई है ।
 जोति साँ जुरति जोति आगे नैना जुरे जाइ,
 चातुरी अचेत भई चित्तयो कन्हाई है ।
 याती रही हाती^४ रसमानी छवि छाती पुरि,
 पाँगुरी भई है मति आँगुरी लगाई है ॥१३४॥

सखिन बुलावै कान्ह मुखहि न लावै मुफि,
 दूतियो निकागी योनि येगि ही बगर तैं ।
 हौं न भई हाती^५ कहीं याही को सुहाती ऐसी,
 मान रस माती हौं न बोली डोली डरतैं ।
 जौलौं कहँ मुरली की घोर^६ सुनौं कान 'संख',
 घरी ही में देहली दुहेली^७ भई घर तैं ।
 परी तिहि काल हुती पोरि पोरि थाल जनु,
 सोरी भई सुनि छुटि योरी गई कर तैं ॥१३५॥

आन ठौर कान देतीं मनहि यौगइ लेतीं,
 मुरली की धुनि सुनि चितहि न आनती ।
 कान्ह चितये ते तौ हौं देखि मुसिकानी कत,
 भूली तव रूखी है कै त्यों ही त्यों तानती ।

१-फूली साँझ = संध्या समय । २-सूही = सूझ । ३-फेर, फंद = छल
 कपट । ४-हाती = अलग, एक तरफ । ५-हाती = अलग । ६-घोर = रसोली
 धुनि । ७-दुहेली = कठिन (घर से देहरी तक माना कठिन हो गया)



आलम-फैल

'आलम' कहै हो कहूँ, ऐसियों विसासी है री,
जानि यनि भई वान काहू की न मानती ।
मौसो मुख मोरि जैहै ओगनि-सौ जोरि जैहै,
काहे को हौं जोरौं नैनौं जौ हौं ऐसो जानती ॥१३६॥

हियो ना सिराउ-विसराउ न धियोग धरु,
माँगत मरुकै पेम पावक प्रजारी है ।
व्याकुल के जीवे कल कोवे की जहाँ लौं मूरि,
याँसुरी विहन विसवेलि कै बिसारी है ।
'आलम' रसाल गुन जाके नटंसाळ भये,
सोई भूलजीवनि सजीवनी हमारी है ।
जोपद हितावै ताहि बेदन न भावे जाहि,
भीरि छाँड़ि धीर वैद पीर मोहि प्यारी है ॥१३७॥

कौकी लाज काको डरु कौन आपु कैसो घर,
कौन घरवसी कछु बात घर की कहै ।
साँस लेत हिये में सलाका ऐसी सालति है,
कान्ह चितवनि भाई नित चित को दहै ।
'आलम' कहै हो परवस न वसात कछु,
भागै हूँ न छुटै दुख अति साथ ही गहै ।
पलकते न्यारी कीनी नौदऊ विडारि दीनी,
निसि दिन नैननि मै घैरी घैठोई रहै ॥१३८॥

१—जानि=विपुत्रम । २—विहन=विषय, अज्ञान । ३—परवसी=

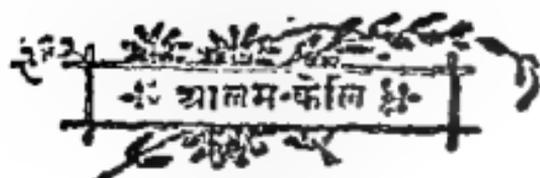


निरखें नियाहें तेई गोरी हैं कठोरी हम,
 चोरी ही में चाहें पतकारी कैसे पात हैं ।
 'सेख' कहि एक बार कान्हर की खोरि आयें,
 और रहै मानसु कठोर सोई गात हैं ।
 मोहनी से योल कारे तारनु की डोल मिला,
 योल डोल दोऊ बटमारे धान घात हैं ।
 नैना देखें स्याम के ते नैना कैसे सुनै माई,
 नैना सुनै तिनै कैसे नैना देखे जात हैं ॥१३६॥

घर देखै घन-देखै घरी-घरी जाइ देखै,
 देखियो कर्त मनु देखि ना अघानो है ।
 'आलम' कहै हो अमपोली गैल लागी डोलै,
 'बोलि' कै चित्त है याको चितु ललचानो है ।
 नेकु नैना फेरि कान्ह सैननि ही हंस्यो तब,
 गैन थकि और चकी मैन हनी मानो है ।
 धमक सी लागी धाइ साल उठो डर आर,
 चौकि फिरि चितयो दुसारु सरु जानो है ॥१४०॥

मेरो सो न मेरो मनु औरै कलु भयो जनु,
 पलकें न लागै जागै नैना औरै है भये ।
 जहाँ हुती तहाँ ठाढ़ी विरह की पीर याढ़ी,
 मदन की आगि जागी रोम-रोम है तये ।

१—और रहै मानस = चित्त ठिकाने रहै । २—कारे तारनु की डोल =
 काली पुतलियों की चंचल चाल । ३—गैन = (गमन) गति, चाल ।
 ४—सरु = (सर) बाण ।

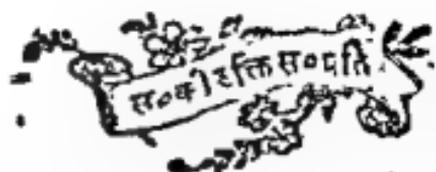
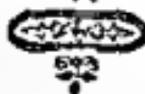


'आलम' कहै हो भूली भोरहू तें भोरे' आर,
 द्वारे भूमि भाँकी कान्ह देखि नेकु ही लये ।
 लटपटी पेचै लखि चटपटी लागी आँग,
 अटपटे आयें लाल माहि लटू के गये ॥१४१॥

यन सौं यनिके यनधारी ब्रज खोरि आर,
 बाँसुरी बजाएँ बाँधि यनिता विवेक के ।
 सुनि धुनि धारें यसकाम धामकाम लजि,
 रोके प्रभु 'आलम' बिलोके धारै एक के ।
 उभकि भरोखें फिरि चाहि चली आली पर,
 ठगि ठौर कान्ह रहे देके प्रीति-देक के ।
 अकुटी कुटिल चले लोचन, तिरीछे तीछे,
 'मनु कटि गयो सु-कटाक्ष लागे नेक के' ॥१४२॥

जाँगन ही खरी हौं मगन भई छगुनत^५,
 स्याम श्रंग नीको वाके संग हौं न गौनी मैं ।
 मनहि मरोरि तोरि चोरि संग डोरि सखी,
 नयो नेहु जोरि सो री गो री खोरि कौनी मैं ।

१—भोरे आइ = घोले से आकर । २—बाँधि यनिता विवेक = स्त्रियों की विवेक बुद्धि को बाँध दिया (विवेक शक्ति मार दी) । ३—धार = धार । ४—नेक के = तनक से । ५—छगुनत = विचार करते हुए ।

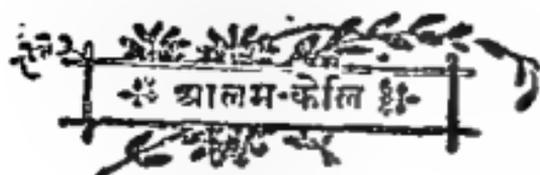


धौरे^१ ही तें धाय धुकि^२ 'आलम' अधोन करि,
 दिये धकधकी दै न धोरजु है धौनी^३ में ।
 अंचल की ओट में दगंचल लगाइ नेकु,
 मोहि गयो मोहि सखी अचल चितौनी में ॥१४३॥

मनु अकुलाय तनु छिनु छिनु जाय जरि,
 धनु न सोहाय पनु^४ याही तें न जाइ है ।
 खेटकु करत जेतो तियो को मरन तेतो,
 लाज को हरन तोसो कोऊ न लजाइ है ।
 ता दिन निकुंज ही ते भाजे मोर 'आलम' सु,
 मेरे जान घोरि चित अजहूँ भजाइ है ।
 राजिव दगनि तेरे राजत बिलोकि दग,
 रीकि वसि भई खोकि कहुँ न पराइ है ॥१४४॥

खरीयै हुती सु तौ लौं परीयै विकल कीनी,
 मनु हरि लोत्तो हेरि अब तन तें गयो ।
 देखयो न अघाई नैन लाइ^५ तन लाइ रही,
 विरह पढ़ाई आई जानों बिष दै गयो ।
 साँधरे सं गान कवि 'आलम' सरोज अख,
 अचानक आई अथ आँगन हूँ कै गयो ।
 भोरी कटि भोरै मौह मोरि याही खोरि सखी,
 नेकु मुख मोरि कै करोरि^६ जिय लै गयो ॥१४५॥

१—धौरे = निकट । २—धुकि = झपट कर । ३—धौनी = (धमनी) नस । ४—पनु = प्रतिज्ञा । ५—लाइ = अग्नि । ६—करोरि = अंधी तरद सुरत कर ।

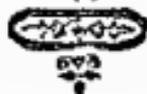


'आलम' कहै हो भूली भोरहू लें भोरे^१ आइ,
 द्वारे भूमि भाँकी कान्ह देखि नेकुं ही लये ।
 लटपटी पेचैँ लखि चटपटी लागी आँग,
 अटपटे आये लाल मोहि लटू फै गये ॥१४१॥

धन सौ धनिकै धनघारी ब्रज खोरि आइ,
 बाँसुरी बजाई बाँधे धनिता विवेक^२ कै ।
 सुनि धुनि धाई वसकाम धामकाम तजि,
 रोके प्रभु 'आलम' बिलोके वार^३ एक के ।
 उभकि भरोखें फिरि चाहि चली आली घर,
 ठगि ठौर कान्ह रहे देके प्रीति-टेक के ।
 झकुटी कुटिल चले लोचन तिरीछे तीछे,
 मनु कटि गयो सु-कटाक्ष लागे नेक के^४ ॥१४२॥

आँगन ही खरी हौं मगन भई छगुनत^५,
 स्याम अंग नीको वाके संग ही न गौनी मैं ।
 मनहि मरोरि तोरि चोरि संग जोरि सखी,
 नयो नेहु जोरि सो री गो री खोरि कौनी मैं ।

१—भोरे आइ = घोखे से आकर । २—बाँधे धनिता विवेक = स्त्रियों
 को विवेक बुद्धि को बाँध दिया (विवेक शक्ति मार दी) । ३—वार =
 बाल । ४—नेक के = तनक से । ५—छगुनत = विचार करते हुए ।



धोरे' हो तें घाय धुकि^२ 'आलम' अधीन करि,
 हिये धकधकी है न घोरजु है धौनी^३ में ।
 अंचल की ओट में दगंचल लगाइ नेकु,
 मोहि गयो मोहि सखी चबल चितौनी में ॥१४३॥

मनु अकुलाय तनु छिनु छिनु जाय जरि,
 यनु न सोहाय पनु^४ याही तें न जाइहै ।
 चेटकु करत जेतो तिय^५ को मरन तेतौ,
 लाज को हरन तोसों कोऊ न लजाइहै ।
 ता दिन निकुंज ही ते भाजे भोर 'आलम' सु,
 मेरे जान चोरि चित अजहूँ भजाइहै ।
 राजिव दगनि तेरे राजत यिलोकि दग,
 रोकि गसि भई खोकि वंहुँ न पराइहै ॥१४४॥

खरीये हुतो सु तौ लौं खरीये विकल कीनी,
 मनु हरि लोनी हेरि अथ तन तें गयो ।
 देखयो न अघाइ नैन लाइ^६ तन लाइ रही,
 धिरह धदाइ आइ जानों बिप दै गयो ।
 साँधरे सं गान कवि 'आलम' सरोज चख,
 अचानक आइ अथ आँगन हौ कै गयो ।
 मोरी करि भोरै मौह मोरि याही खोरि सखी,
 नेकु मुख मोरि कै करोरि^६ जिय लै गयो ॥१४५॥

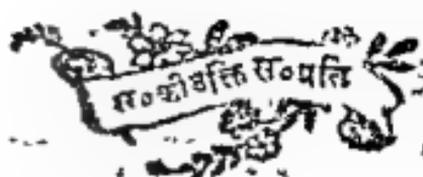
१—धोरे = निकट । २—धुकि = झगट कर । ३—धौनी = (धमनी)
 नल । ४—पनु = प्रतिज्ञा । ५—जैहै = अग्नि । ६—करोरि = अखी तरह
 खुरच कर ।

जब कल्लो देखि मित्र हौं तौ भयो देखि चित्र, : :
 अजहूँ लौं चित की अचेत चतुरई है ।
 रीभरौं हौं तिहारी इन नैननि की रोकि काँजु, : :
 कौन मृदु मूरति रिभाय मुरभई है ।
 घुंघट की ढिग चाँपि भृकुटी उचाइ 'सेख'
 मन्द मुसकाइ चपला-सी काँधि गई है । : :
 तुम सोध वाही के सिधारे कुंज सुधापुंज,
 मोहि कान्ह धरो एक पाछे सुधि भई है ॥१४६॥

छीकत हौं गई-जु वा साँवरे सौं भेंट भई,
 सर की सी दरि रो सुभाय सौँहें हेरि कै ।
 'आलम'-न नीरो आवै येनु दूर तैं बजायै,
 'दाध' पर लावै लोनु रछौ मुख फेरि कै ।
 मनु संगही लगाय गयो सुधि बिसराय,
 गनत न गति गाई ऊँचे सुर टेरि कै ।
 तब ही तैं सुधि नाही रही कछू मोहि माहीं,
 नैना ना अनत जाहीं रहे अयसेरि कै ॥१४७॥

चंद्र को चंफोर देखै निसि दिन को न लेखै,
 चंद्र विन दिन छुवि लागति अँधारी है ।
 'आलम' कहै हो आला अलि फूल हेत चलै
 फाँटे सी फँटीली बेलि ऐसी प्रीति प्यारी है ।

१-रहे अयसेरि कै = इतिभार कर रहे हैं, याद जोर रहे हैं ।

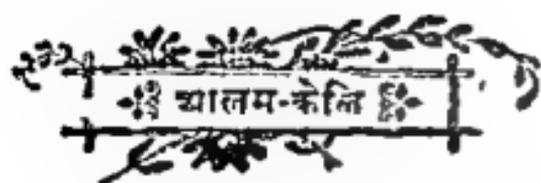


कारो कान्ह कहत गँवारी^१ ऐसी लागति है,
 मोहि घाकी स्यामताई लागति, उज्यारी है ।
 मनकी अटक तहाँ रूप को चिचारु कहाँ,
 दीक्षिवे को पैड़ों तहाँ वृकि कछु न्यारी है ॥१४॥

घर करी जिन्ह सों ते वैरिनि भई हँ ग्वारि,
 तिनहि कं आगे बात कान्ह की कहति है ।
 'आलम' सुगाय^२ कोऊ गारि लाय, जैहँ तव,
 उनहि मिलैगी जाय ऐसे उमहति है ।
 पलकें उचाट नैना चकि चारी-होन ऐसे,
 औचक चितै कै फिरि नीचे को गवति है ।
 वहाँ जय मनसा में नेकु ठहरैहै फिरि,
 डीठ ठहराये घर बाहर चहति^३ है ॥१४६॥

घर बैठे घैरु^४ कीजै ऊतर^५ बनाइ लीजै,
 औरै यतियाँ-बनाय उपजै नई नई ।
 नेक चाहे मुसकाय धहुखो न चाखो जाय,
 पलकें नयाय लीजै उग ठगि सी लई ।
 तव लीं सयानु अभिमानु कवि 'आलम' हो,
 जौ लीं आली नेकु खोरि कान्ह की नहीं गई ।
 वापै लैन आयां जात कीजनु चाही को भायो,
 या तन चितैये नेकु जनु चाही करि भई ॥१५०॥

१—गँवारी = गँवारपन । २—सुगाय = संदेह करके । ३—चहति है = देखती है । ४—घैरु = किसी की निदामय चर्चा । ५—ऊतर = गवाय ।



फहाँ आई बैरिनि वेलुधिन को सुधि देन,
 सुधि आयें बुधि जाइ सुधि बुधि हरी है ।
 'शालम' ए आलो तू तौ कालि हुतीभली आज,
 लाल की सो लगनि भुलानो बिसँभरी है ।
 मोहि देखि मोहन को मुख देखि मोही हौं सु,
 मेहु है कि नेहु देहु दीन खीन बरी है ।
 धरस सिराने नैना धरसि सिराने नैना,
 गहिली' गधौरि अजौं पहिलियै धरी है ॥१५१॥

निधरक भई अनुगवति^२ है नंद घर,
 और ठौर फँडें टोहे^३ ह न अहदाति है ।
 पौरि पाखे विछुवारे कौरे कौरे लागी रहै,
 आँगन देहली याही बीच मँडराति है ।
 हरि रस गती 'सेख' नेकडू न होइ हाती ।
 पेम मद माती न गनति दिन राति है ।
 जब जब आवति है तब कछु भूलि जाति,
 भूल्यो लेन आवनि है और भूलि जाति है ॥१५२॥

जयदाँ जमुन जैहै सुधि विसराइ पेहे,
 धरो डारि औरनि के संग धाइ आई है ।
 रोम खरी रोव धरी फाँपै धरहरै धरी,
 जड़ ह रहति कछु जुड़ियो जनाई है ।

१—गहिली = बावली, दन्मत ।

२—अनुगवति है = अनुगमन करती है । बार बार जाती है ।

३—टोहे टूटने से भी नहीं मिलती ।



'आलम' कहै हो अथही ते रिक्कार भई,
 दुरै न दुराई में तो अथ लौं दुराई है ।
 रूप रस व्यासो भई कान्ह तन डीठि दई,
 गागरि भरन गई नैना भरि लाई है ॥१५३॥

दिगु चलयो आवै अरु टका देत डोली घाहँ,
 दोटा ऐसो दोठ नहि पैयत डगर में ।
 नागरी आगरी हम तासों लँगराई करै,
 ऐसो कान्ह नागरु है वसत नगर में ।
 नेकहु न कछो करै करै जैसी मन धरै,
 'आलम' न काह डरै देख्यो अचगर में ।
 वहाँ सुनि पैहै पेहै देहै गारी चारि नेकु,
 नूपुरनि वारि नारि नंद के वगर में ॥१५४॥

अटकावै मनु सु नटावै तनु टट आवै,
 हटक्यो न रहै हारी निपट हटकि कै ।
 पटकत मटुकी भटकि भटकत पट,
 विपट छटकि छूटी लट सुलटकि कै ।
 'आलम' टिकाये टीठि टिक्यो टोकि टेकि भुजं,
 टटकटकी लाई टरि गयो सो सटकि कै ।
 कटि पीत पेट सटकारी साँट कर नट,
 चटपटी लाय टरि गयो मो भटकि कै ॥१५५॥

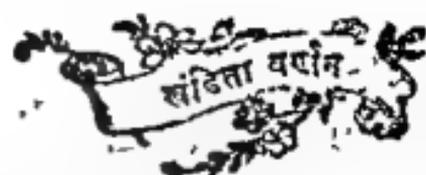
१--टट=धका । २--लँगराई=संगरपना, टिकाई । ३--अचगर=शरारत, छेड़-छाड़ । ४--नूपुरनि वारि=नूपुरों का बजना रोकले । ५--टट=(तट) निपट । ६--मो भटकि कै=भुक्की भटका कर ।

यांसुरी विसद वंसी बट को बसेरो तहाँ,
 त्रिविध बयार बन विसद बहति है ।
 बरन बिरह कवि 'आलम' विविध बर,
 बार बैस बुझि मानो बिरसु गहति है ।
 बारिज बदन बिरचौही^१ यैन बानी याकी,
 विपनु^२ बचन सुनि बिरचि रहति है ।
 बारक कहत बिलखौही हीही बार भई,
 बार बार मोसो अण बावरी कहति है ॥१५४॥

जिय की कहे न अनमनीये रहति प्यारी,
 मनु ठौर नानी सोई नारि औरिये भई ।
 सुतनु पसीजे उर अंसुयन भांजे धीमे,
 कहा कहा कीजे जानो उगमूरी^३ है दई ।
 'आलम' सुकवि ढिग हँसति सहेलिन साँ,
 सपनो सो देख्यो काहु अपनाय साँ लई ।
 वंनु की सुधुनि सुनि नैक ही करोसा भांकि,
 अकल बिकल कछु बावरी सी है गई ॥१५५॥

गीन कं सुनत रही मौन मूली मौन सुधि,
 पारी पति आई थकि घोरी रही हाथ ही ।
 चौंफति चकति पछिताति मुरछाति तन,
 ताही छन आय उर लाय लई नाथ ही ।

१—बिरचौहे=विशेष प्रेमप्रया। २—विपनु-बचन=विपन्न बचन
 ३—उगमूरी रे दई=किसी उगने कीई वस्तु सिखा कर विशेष फ
 रित दे।



रही ही नवाय नारि, पूछति पियारे के-सु,
 कैसे हूँ कैसे हूँ कै उठाय, उत माथ ही ।
 मुख तन चितै हरवरे^१ गहवरे^२ गरे,
 उतरु-उसाँसु आँसु माये एक साथ ही ॥१५॥

नये नये, नेह नये-गेह नये, नये वन,
 नथला नथल नीके पारस परस ही ।
 किरच कणर कर कोरें^३, योरी भरि हरि,
 कर योरी देत करकर^४ उठी, रस^५ ही ।
 रोके कवि 'आलम' सुभायः प्रजराय निति,
 मोर भये ऐसे दग कोर लौ दरस ही ।
 सारस से सर से सरस, अरसौं हैं रस,
 रसिक रसिक संग जागे रास-रस ही ॥१५६॥

खंडिता वर्णन

रजनो बिहाने^६ उठे दोउ अरसाने आँग,
 राधे रति रानी तैसे मोहन मनोज हैं ।
 'आलम' कहै हो पल कोरनि कटाच्छ^७ देखि,
 मोर ही छुलत मानो रातेई सरोज हैं ।

१-हरवरे = शीघ्रता से । २-गहवरे गरे = गद्गद् कंडने ।
 ३-कोरें = कोमल । ४-करकर = कड़क, दृढ़ । ५-रस ही = पार से ।
 ६-बिहाने = चोतने पर ।

आलम-केलि ६१

सहज की अरुनाई अरु नौकी तरुनी के,
अधरनि रेख राजै उपमा के चोज हैं ।
कुसुम बंधूक की ज्यों लीकें सोई न्यारी पीय,
नैन के परस लागे वरुनी के चोज हैं ॥१६०॥

एक सुनि बोल अनयोले डोले डोले फिरें,
बाँह की डुलनि मनमोहन डोलाये हैं ।
अंतर ही एक हये तंगी^२ कैसे तंत्र भये,
ऐसे मंत्र काम ल कटाछुनि पढाये हैं ।
हेरनि अहेरी तेरी गोत की अहीरी तैरी,
हेरि हेरि मानसु अहेरो करि पाये हैं ।
जाके नटसांल^३ ताके कैसे हैई हाल ऐसे,
नैना तेरे लाल लाल काके सोह^४ न्हाये हैं ॥१६१॥

अनम दुहागी^४ जिनि देहरियौ देखी नहीं,
खिन में सोहागी भई ऐसो जाको भागु है ।
मेरी हितू कैसीऊ, पिया, की हितू चित नहीं,
हौ न ताकी आलो जामें विरह विरागु है ।
'सेखः प्यारे तेरी गति कहत न बनि आवै,
नेकु न्यारे होतः हिये दीनो आय दागु है ।
अव ही की घरी पेहै घरी कि पहर पेहै,
कत पीरी जाति तेरो केतक दुहागु^५ है ॥१६२॥

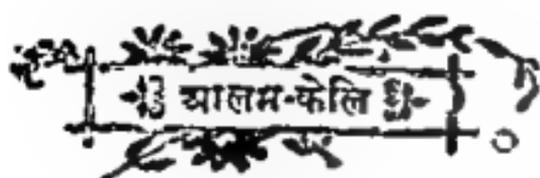
१—सोज = पद बिन्द । २—तंगी = सन्निक । ३—नटसात = करक पीडा । ४—दुहागी = दुभाग्यवती । ५—दुहागु = दुभाग्य ।



सीख सी भुलाई है कि काह बधराई है कि,
 खीझी है परसिन की ऐसी जु रि धाई है ।
 मैं हूँ कस्यो, तै हूँ कहे-हा हा चुप; के न रहे,
 जोई-जोई कही सोइ करिहीं दुहाई है ।
 कान्ह सो पिछोड़ी है कि कान्ह की कनौड़ी है कि,
 मौड़ी है जु डरपी के छल अति छार है ॥
 साँची कहीं आज तुम पायनि परत कान्ह,
 मेरे जान देया कहूँ द्वैज देखि आई है ॥१६३॥

तो सी ढीठी निठुर बसोठी देखी मैं न कहूँ,
 मीठी मुझ आगे पीठि पाछे करै रारि सी ।
 मेरे आये मेरी भई धापै धाही की है गई,
 बड़े को न डरु लोक लाज दई डारि सी ।
 'आलम' सुकधि आई वातनि रिभाय मनु,
 मुरझानो मोहन मुरी है येभा मारि सी ॥
 घान सी यनाय सुलचाय द्विये साथ इत,
 तू नौ चली नारि फिरि नावक की नारि सी ॥१६४॥

मानस को कहा बसि कोजनु है धावरी सु,
 यासी-मुरवास हूँ को बसि के बसाऊँरी ।
 मैं न का को स्वामी कामकन्दला को कामो मोरि,



'सेख' मनमोहन के मोहन के मंत्र जंत्र,
 मोहिं जे न आवै ते विघाता पै न पाऊं री ।
 आसतनि लेत हाथ चंद्रा चल्यो आवे साथ,
 नदिन को नीर धीर उलटि बहाऊं री ॥१६५॥

प्यार की प्रतीति भये प्रेम को प्रकास इति,
 तातें रस रीति प्रीति प्रगट जनाई है ।
 तैं न कयो मैं न लह्यो मैं न कयो ऐन आनि,
 येनन की रीति मय नैननि में पाई है ।
 कंठ धंभ स्वेद कछु मोहनि में भेद मानो,
 नेह को नयेद^२ दे के लालन पठाई है ।
 चाली कछु औरै तैं उताली यनमाली कयो,
 तोहि यनमाल सौहैं आली यनि आई है ॥१६६॥

धीरघ हारारे से वै डोले मतघारे से वै,
 कारे कारे तारे मानो मलिन अलिन के ।
 आवे अरसात से सुकुले मुखकात से,
 पै राती राती रेखैं छाँड़े अरुन कलिन के ।
 'आलम' अलोल दिये केलि के कलोल भरे,
 मानो दीप दीपत न कज्जल मलिन के ।
 मोहन प्रतप्त पिय दच्छन सुलच्छन से,
 आली तेरे चच्छनि में लच्छन नलिन^३ के ॥१६७॥

१—असतनि = मंत्राक्षत । २—नयेद = (फारसी) निमंत्रण ।
 ३—नलिन = कपल ।



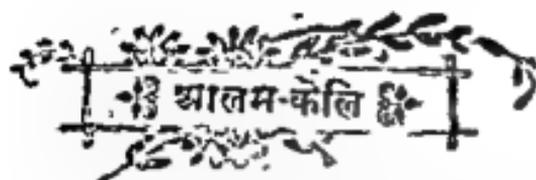
गहक^१ करत कत गवनो हो गिरिधर,
 रंभी हौं तिहारी सौं कहति गजगामिनी ।
 मली कीनी भोर भये हौं न भूली चतुराई,
 रोखे भोरा भोर लगु कौन ऐसो भामिनी ।
 कैसे तन बने पट लसत कपोल नख,
 हँसत दसन दुति दमकै ज्यों दामिनी ।
 मरगजे^२ बागे^३ रस पागे नैना लागे आवैं,
 आगे रही पाग पैसि जागे लाल जामिनी ॥१६॥

नींद छाये रैन के उनींदे हग मूँदे आवैं,
 नींद के आरस इंदोबर निदरत हौ ।
 पियरो बदन भयो हियरो लुवत मोहि,
 सियरो लगत ज्यों ज्यों नियरो करतु हौ ।
 'आलम' सु प्यारी जिहि ऐसे कै पठाये पिय,
 जाके दिन प्रति उठि पगनिं डरत हौ ।
 कच मुकुराये^४ मधुकर कीसी माल लाल,
 मुकर बिलोकी कत मुकरे^५ परत हौ ॥१६॥

खरी अनखात है है धीरियो न खात है है,
 माँकि माँकि जात है है नेक भये न्यारे हौ ।
 'सेख' कहै उनही निखाइ पठये हो पिय,
 माँकी दैन आये तुम हिये सुकि हारे हौ ।

१—गहक = देर । २—मरगजे = मलगन (शिकनै पड़ा हुआ)

३—बाग = जामा । ४—मुकुराये = छिटके हुए । ५—मुकरे परत हौ =
 एन्कार करते हो ।



आलम-केलि

बोली ताहि सों हो सौं हें जोरै कौन भौंहि ऐसे,
 पाय परो चाके जाके पाय पर धारे हो ।
 प्यारी कही ताही सों जु रावरे सों प्यारे कही,
 आजु कालि रावरे परोसिनि के प्यारे हो ॥१७०॥

कै रहेंगी रोस वै जु कौहर सौं कौवरी हें,
 ऐसो कोरा छाड़ि कत भोरभोर आये हो ।
 'सेख' निसि जागे के निमेष आवैं लागे, जिहि
 राग अनुरागे ऐसी भौंति ताहि भाये हो ।
 पाछिलियो जानि पहिचानि ही सु नाही जनु,
 हा हा छलु छाँड़ी पिय पाद परों पाये हो ।
 लटक लटक लटकन भये हिये लागि,
 लटू कहूँ और मोसों लाट पाद लाये हो ॥१७१॥

लाये सीरी देह इत चिकने सनेह चित,
 पानी कैसी बूँद ऐन धैन ठंहरात हो ।
 आलम अन्यारे नैन काह के अनंग आनि,
 रोप धरे नैननि लखे न नैन जात हो ।
 लोमी रस लच्छ ऐसे दच्छन के धंचिये जू,
 लच्छन सदोप लाये आये अरसांत हो ।
 डोले डोले धोली धैन जो पर ते डोलति हें,
 पी पर तिया ते मये पीपर के पात हो ॥१७२॥

ढोली ढोली डमै भरौ ढोली पाग दरि रही,
 दरे से परत ऐसे कौन पर दहे हो ।



गाढ़े जु दिया के पिय ऐसी कौन गाढ़ी तिये, ॥१७१॥
 गाढ़ी गाढ़ी भुजनि सौं गाढ़े गाढ़े गंहे हो ।
 लाल लाल लोचन उनीदे लागि लागि जात,
 साँची कंदौ 'सेख' प्यारे में तो लाल लहे हो ।
 रस रस रस रस रस रस रस रस रस रस,
 जाये प्रात कही रात रात कहीं रहे हो ॥१७२॥

भली भई भोर भये पाँच घारे भावते जु,
 हम अनभायती हैं भावतिनु भाये हो ।
 रोस है कहत हैं न रिस कीजै रस की सु,
 जाके रस रसे तिन वस करि पाये हो ।
 ऐसी परिहसु हियो तरकि मरीजै पै न,
 'आलम' पतीजै पुनि पिय जानि पाये हो ।
 अंग नये चिन्ह रतिरंग न दुरत नयो,
 आँगन में अंग संग अंगना लै आये हो ॥१७४॥

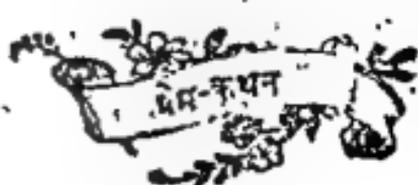
जम सी जु नहेया जरौ जागत जु जाय निनु,
 जामिनी के जाम जिमि जात जमजाल से ।
 आलियो न, और अकुलाइहो अकेली अय,
 'आलम' ए आली काहु आली पै है आलसे ।
 आरसी लै देखो अरसोई हो रसिक रस—
 मसे घसे सीस केस भेस अलिमाल से ।

अधर ललित लाल, माल लाल पाग, लोल,
लाल लाल नैन लाल लालची गुलाल से ॥७५॥

घैन हरि कहे मुरझाई सैन, रही थकि,
गैन ही में नैन उरझाई कै, रिझै गये ।
और ही के सोरें आये भोर मेरे भौन कान्ह,
भाँके पीरे सोरे तनु तातो करि तै गये ।
रैनि अष आई सुनि सजनी न लागै पल,
रजनी के जागे दिन रैन जाग दै गये ।
खुले पल कोरनि तै तामरस भोर ऐसे,
आपुन उनीदे आये मेरी नीद लै गये ॥७६॥

प्रेम-कथन

भली कीनी भावते जू पावँ धारे यहि खोरि,
अनत सिधारे कि बसत याही पुर ही ।
ग्यारि काह गोबिकै धखो है सब गुनी जानि,
औगुन न जानौ तुम लखनि के गुर ही ।



'आलम' कहै हो चख चाहि चिनु चोरि लीनो,
नीकी चनुराई कीनी भले जु चतुर हो ।
निहट रहत तुम पती निहुराई गही,
अब हम जाने कान्ह निपट निहुर हो ॥१७७॥

जीउ है जानतु जेजे अनदेखें दुख होत,
अमुना ते आयत हो जात देखे अब तें ।
भीनु न सुहातु है उसाँसन पिहात दिन,
रतिपति अग्नि दहति तन तब तें ।
'आलम' कहै हो प्यारे काहू की तो पीर वृक्षो,
धूर ही तें यदन दिखैयो कीजै अब तें ।
ऊँचे चितयत नाही नीचे मुसफयात जात,
ऐसी निहुराई कान्ह कीने वदी कब तें ॥१७८॥

आवत परेखो जहाँ जीये की न जानै कोऊ,
जरी ऐसो ग्रजु तहाँ कैसे करि रहिये ।
कालिंदी के कुल तक कोटि सुन मूल भई,
मुरली को धुनि छिन सुनिये न सहिये ।
'आलम' कहै हो कुलकानि गई जाति हई,
बिरह विकल भई कौलों घाट रहिये ।
कासों कहीं कहे कोऊ पीरी न घँटावै तातें,
चुप ही भली है कान्ह कलुचै न कहिये ॥१७९॥

औरनि के आगे नाचे और ग्वारिनी सों राचे, --
 हम सोंहें नीचो मुख ऊँचो के दिखाइये ।
 सूधे करि नैन धोलो, धैन जासों बाढ़े धैन, ॥१॥
 मैं के उदोत चारु घाँसुरी बजाइये ।
 नित ही मिलन कथि 'आलम' हो जी के प्यारे,
 मित्त चित्त पर हित्त-यतियां लिखाइये ।
 जासों तें ठग्यो है मोहि ताही सों ठगैहीं तोहि,
 कौन है ठगौरी तेरो मोहि धों, सिखाइये ॥२०॥

देखिये न भाखिये न मन ही में राखिये, वै,
 आँगन है जिये धोलो खेला जासों रसु है ।
 'आलम' कहै हो कोऊ तन की तपनि-हरै,
 चित्तये सिराह ताहि यहै बडो जसु है ।
 औरनि की कहा कहाँ बहुतन दिय प्यारे,
 पीर पर धूमन न है परिहसु है ।
 हों तो चुप रहो जानि इती निदुराई कान्ह,
 तेरे जी में बसो है तो मेरो कहा बसु है ॥२१॥

तू ती चिते चलि गयो चित हूँ न कीनी है है,
 मेरे चित वहै चितवनि भई साल है ।
 बाधरी विकल चाहि ठगी हों ठगौरी वाहि,
 वैरी बधू वारे मुख यहै बात चाल है ।



'आलम' कहै हो काहें अथलों न लागो मन, ॥ १२० ॥
 । ? लाग्यो तथ जान्यो होत ऐसोई जँजाल है ।
 जापै योतै सोई जानै कहे कान्ह कौन मानै, ॥ १२१ ॥
 तेरे जी की तुही जानै मेरो ऐसो हाल है ॥ १२२ ॥

जादिन तँ तुम चाहे' लोग कहैं पीरी काहे,
 पीरी न जनैये पल पल जिय जरिये ।
 ॥ १२३ ॥ 'आलम' कहै हो गुरुजन सखी सौति संध,
 औरै विधा वृक्ष जोई कहैं सोई करिये ।
 घूँघट की छोट आँसू घूँटियो करत मैना,
 उमँगि उसाँस कौलों धीरज यों धरिये ।
 याको मरियतु है जु ऐसे हँसि बोलो कान्ह,
 ऐसी मया करिये तो ऐसे काहे मरिये ॥ १२३ ॥

जैसे डोलै पीरो पात लागे घात ही की बात,
 ऐसो तनु डोलै अरु ऐसो ई घरनु है ।
 तेरी धांली ऐसी भई पहो कान्ह निरदई,
 तेरे प्रेम परें भयो फाँसी को परनु है ।
 सूधे रहि सूधे छेरि दीठि नेक हू न फेरि,
 नेकु अनजोरे नैना जीय को जरनु है ।
 मनाहि मरोरि मुरि मुसकाय डोटा तँ तो,
 मुस मोखी सो तौ यामें और को मरनु है ॥ १२४ ॥

मया^१ करि चितै चितु, चोरि लोनो, हितु करि,
 हित-विनु चितै, नहीं सोई सोच नित हैं ।
 'आलम' कहै हो, पुर यास में, जो यसी तिन्हें,
 नेसुक^२ न चाउ निसु, यासर चकित हैं ।
 देखे टक लागै अनदेखे पलकी न लागै,
 देखे, अनदेखे-नैना-निमिष-रहित हैं ।
 सुधी, तुम कान्ह हो जु आन की, न चिन्ता हम,
 देखेहु दुखित अनदेखे - ॥ दुखित हैं ॥१८५॥

पैना सुने-जरनि अबाँकी सोऊ सौरी होति,
 पायक^३ दहे को, तेई थावक^४ अमिय के ।
 दूरि ही, ते, दरसि कपूर जनु, पूरे पल,
 फूल-हू-ते कोमल हिताने^४, हार हिय के ।
 'सेख' कहै प्यारे चित घर के उजारे दिया,
 कहँ कहँ नैननि के तारे, केहु तिय के ।
 देखे विन-जिये-नहीं, देखे-मुख जिये-हम,
 तुम चिरंजीवो कान्ह-जोय मेरे जिय के ॥१८६॥

कहु न सुहात, पै उदास-परयस यास,
 जाके यस हूजै तासों जीते ॥ पै हारिये ।
 'आलम' कहै हो हम दुहँ विधि थकी कान्ह,
 अनदेखे दुख देखें, धोरज न-घारिये ।

१-मया = प्रेम । २-नेसुक = तनक भी । ३-भावक = टपका
 देने । ४-हिताने = अकष्टे लगे ।



कलुष्यै कहोगे कै अघोले ही रहोगे लाल,
 मन के मरोरे कौलों मन ही में भारिये ।
 मोह सौ चित्तैषो कोजै चित हूँ की चाहि कै जू,
 मोहनी चितौनि प्यारे मोहन निवारिये ॥१८७॥

तुम निरमोही लोग औरै कहूँ वृक्त हैं,
 कहां पती बात को परेखो जिय मानिये ।
 भावै सोई आयै जु बियोगो दुख पावै जातै,
 परधस भये पती मनहि न आनिये ।
 अथ नैन लागे भागे कैसे छुटियत है जू,
 पैड़े के चलत सोई नके पहिचानिये ।
 नैननि के तारे तुम न्यारे कैसे होहु पीय,
 पावन की धूरि हमै दूरि कै न जानिये ॥१८८॥

बैंडो काहू छिनु हूँ तो उनहीं को छोह करि;
 तनु मनु पनु धनु कीजै नवदायरी ।
 नैननि पै है जू प्यारे पैड़ो करो पाँउ धारि,
 पुतरनीन प्यारी लगै पायँनु की पाँवरी ।
 'आलम' तिरीछे चाहि हँसि कलुषो बोले लाल,
 ता दिन ते ही छुकी छुकी डौलों पायरी ।
 मोहि गये मोहि निरमोही है न आये यह,
 मोहनी की खानि मुसुकानि है जु रायरी ॥१८९॥

नीची डीठि आपु क्यों हूँ ऐसे है देखिये, जू पै,
 कैसे हू न देख्यो, जाय 'जेतो सोचु करिये ।
 मुरली की धुनि सुनि द्वार उम्कन काज,
 मन के चलत तन; हो मैं काँपि डरिये ।
 लाजनि की भीर पल पैडोऊ न पावैं नैन,
 'सेख' धीरे 'सकुचि' विचारि पाँच धरिये ।
 कीजै कहा; काहर; कनौडो है कै जीयो नाही,
 ना तो, एक वासो में उसाँस लै लै मरिये ॥१६०॥

वंशी

सुर पाये सिर धुनि रहैं सब सुर मुनि,
 नर खग गन पल दारे ना टरत हैं ।
 'आलम' सकल तान-शान मृग मीन येधे,
 ताँह के हिये में जाय वेधोई करत हैं ।
 वरही मुकुट वंशीधर धनमाल यह,
 पाँसुरो सबद सुनि पंगु है परत हैं ।
 समुझि सनेही भये सेही किते तेही छिन,
 नेकु न विदेही और देही सो अरत हैं ॥१६१॥

१-उम्कना = आक कर देयना । २-पैडो = रास्ता । ३-कनौडो =
 दरवान से दया हुआ । ४-मैदी = स्याही नामक जंतु ।



बाँसुरी बिसारो ना तो ब्रज ना बसैगो कबू,
 विधि याँधि बाँसुरीके बस करि दई हैं ।
 'आलम' कहै हो न्याह नैन देखे मैन तयै,
 कान सुनि कान्ह ऐसे तेई तग तई हैं ।
 चित अनचेते नुम तातै मुलकात ही जू,
 रीक्ति मुरझाय के नू केली गिरि गई हैं ।
 घूम लागे गाँसो सो उसाँसनि की आस नहीं,
 राधरे को हाँसी है निसाँसी^१ औरे भई हैं ॥१६२॥

जेते सुर लाने उर तेते छेद काने और,
 जेते राग तेते दाग रोम रोम छीजिये ।
 ताननि के तीखे जनु धाननि चलाइ देति,
 चीरि चीरि अंगन नुनीर तनु कीजिये ।
 अन्तर की सूनी^२ घर सुने करै 'सेख' कहै,
 सुनि सुनि सबद बसेरो वन लीजिये ।
 हम ब्रज बसिहैं तो बाँसुरी न बसै यह,
 बाँसुरी बसाय कान्ह हमें बिका दीजिये ॥१६३॥

न्यारे रहो प्यारे अंगसंग की सगाई छाँड़ी,
 औगुन गनैया लोग सौगुन सुगातु^३ हैं ।
 'आलम' संयोग विनु बढ़त वियोग जेतो,
 प्रीति पथ कान्ह मनु तेतो ठहरातु है ।

१-तयै = संतप्त होता है । २-निसाँसी = स्वाँस हीन (मृतपत्र)

३-सूनी = खाली । ४-सुगातु है = संदेह करते हैं ।

औरनि की ओलै' अथ योलिहों न रावरे सों,
 डोलिये न साथ हियो हेरई हेरांतु है ।
 जीजे विनु वातो चित रातो अनरातो काँजे,
 नैननिरे को नातो पै न हातो कियो जांतु है ॥१६४॥

डगरा^१ दै जाहि नट नागर चतुर कधि,
 'शालम' बसेरो हरि जेवां पुंरि चारि^२ है ।
 लीजे दधि पीजे जान दोजे और काँजे कोजे,
 छाँके ते पसोजे तनु भीजे पट चारि^३ है ।
 जो रस विंचाखो तुम सो रस न जाँजे हम,
 गोरस लपेटो सव गूजरी गँवारि^४ है ।
 जैसे तुम आछे हो छयीले छैल तैसी और,
 आछी आछी पाछे आवै रीझो रिझवारि^५ है ॥१६५॥

धौरी आवै धौरी कहँ धूमरो धूमरि आवै,
 ऊँची कै कै पँछनि बोनावै लाल जाहिनै^६ ।
 मेढ़ी कैरी फाँजरी विथरि धौरी भूरी चाण,
 बलही मँजीटी बन घेला अन्नगादिनै^७ ।
 मव्य सोहँ स्याम धूर धूसरित भूरी भौहँ,
 बलि बलि 'सेख' उपमा में देउं काहिनै^८ ।
 गोविंद को मेनु कछू गायन में रसि रह्यो,
 आम नाय पाछे गाय, गाय वायँ दाहिनै ॥१६६॥

१—ओने = चदले में । २—नैनन...जातु है = देवता तां नर्म रीका जा मनता । ३—डगरा = मार्ग । ४—जाहिनै = जितरो । ५—अन्नगादिनै = जानकर । ६—काहिनै = किसरी (ये पंजाबी-रंग के रूप हैं)



प्रवत्स्यत्पतिका

धीर तैं अधीर भई पीरनोर^१ चीर भीजै,
 सोचनि कुचनि पर लोचन बहत हैं ।
 'आलम' अँदेसे ऐसे कैसे यहि बैस जीजै,
 ऐसे उसाँसन प्रान कैसे कै रहत हैं ।
 कहा करौं माई मेरे प्रान मेरे हाथ नाही,
 प्रान प्राननाथ, साथ चलयोई चहत हैं ।
 पल न लगत पल कल न परत सुनि,
 आली री ललन कालि चलन कहत हैं ॥१६७॥

सेवा सावधान देव चरितन चित राखौ,
 कहा भयो कान्ह जु कलेऊ रँगै^२ खात हैं ।
 'आलम' ए वै हैं जिन बलि डारि बालि मारि,
 रावन के कंध गारि बांधे लिंधु सात हैं ॥
 बाँभन अक्रूर मन्द जू के दुख दूरि करे,
 एतौ पुनि पूरनु पुराने घेर पात हैं ।
 अँच^३ भरे कंचनहि कीरा कहूँ कोरत हैं,
 कंटक की कोर कहूँ हीरा बेधे जात हैं ॥१६८॥

घटते निकलि घरी एक जो रहन हैं तौ,
 वरी सी भरत नेन ऐसे ए अंधान हैं ।

१—पीर नोर = दुःख न श्रांस । २—रँगै = घोड़ा २ मंग मांग कर ।
 ३—अँच = अंगनी श्रांघ) अग्नि ।

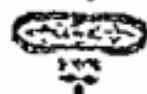
घन लों पनागत^१ पनारे से है रहत हैं,
 निसि न्यारे नीर नये नारे, ज्यों निदान है ।
 कैसे कवि 'आलम' सँदेसे मधुवन के लै,
 फूटे सर छूटे जल धारा मेरे जान हैं ।
 जय हुते नदी पार आगे सुनौ नैना मेरे,
 तब हुते नदी अब समुँद समान ॥ ११६६ ॥

—११६६३—

भँवरगीत

जाके जोग जुगिया^२ जुगत ही सों जोग जागै,
 भगत संजोग वसि अलख अलेख है ।
 सनक सनन्द सनकादि शिव मुनि जन,
 सारद नारद हू के लगत निमेष है ।
 'आलम' सुकवि आनि ब्रज नर भेष धर्यो,
 ध्यायत ही जाको ताके नाहीं रूपरेख है ।
 निगम तैं अगम सुगम करि जान्यो तुम,
 निगुन ब्रह्म सोई सगुन के भेष है ॥२००॥

सोई स्याम जुनहु अगाध के समाधि ध्यावै,
 सोई स्याम रैनि जागै नितही समाति है ।
 सोई स्याम पलक लगै तैं स्यामताई ही में,
 तनमय^३ होत तब फत पद्यताति है ।

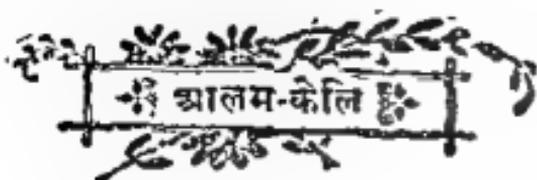


'आलम' सुकवि कहै सोइ स्याम घन घन,
 तारनु^१ तें न्यारे नहीं कन दिललाति है ।
 तुमहीं मैं स्याम तुम स्याम ही मैं रमि रही,
 यादि ही बिकल बिहवल भई जाति है ॥२०१॥

कर्म को बियापी को है धर्म के समाधि ध्यावै,
 अमु है सुनावै सु तौ ब्रह्म ही के नाम को ।
 कैसो जोग जुगति संजोग कैसो कहा जोग,
 हांन हू की गांठि कैसी ध्यानन को धाम को ।
 'आलम' सुकवि इहां वृन्दावनचंन्द कान्ह,
 चितये चकोर कहौ आन विसराम को ।
 जहाँ रस परस सरस सुरली की घोर,
 तहाँ ऊधौ सगुन निगुन^२ कौन काम को ॥२०२॥

रखिर, धरन चीर चंदन घरचि, सुचि,
 सरहु-को, चन्द चाहि चितहि धरत हैं ।
 विविध बिलास बसि रास ब्रजपति प्यारे,
 तेई ब्रज बतियां उचित उचरत हैं ।
 'आलम' सुकवि अब वैसे कान्ह-पेसे भय,
 उतहि लुभाने किधौ इतहि दरत हैं ।
 मधुवन बसत-मधुर सुरली की धुनि,
 मधुप कयहुँ माघौ सुरति करत हैं ॥२०३॥

१-तारनु=नेवों की पुतलियां। २-निगुन=निर्गुण।



पतियां पठाये अम्बुपात तो भलै पै होत.
 यतियनि विरह वितैवो फलू हाँसी है ।
 'आलम' निरास यै न सुने कौन जोरै नैन.
 हिये को कठिन ऐसो कौन ब्रजदासी है ।
 ऊधो ये सँदेसे जैये याही बितचोर पै लै,
 आपुन कठिन भये और को बिसासी है ।
 यहाँ लौं न आवै नेकु याँसुरी सुनायै आनि,
 विनसैगो फहा आये जो पै अधिनासी है ॥२०४॥

अँखियाँ भली जु ऐने अमृशनि धारै, नातो
 धारा पंल छूटे 'निहुँ' देस न समाति है ।
 आँधि है जु धूम की उसाँस रूँधि राखी है सु,
 'नेकु लेत घौसह अँधारी' होति राति है ।
 'आलम' संताप स्वेद सींचियो अधार कौ हूँ,
 भूरी है कै देह फिर खेह ज्यों उडाति है ।
 छाती पै सराहीं बरु दीया की सी भाँति ऊधौ,
 पाँती लिखे लेखनी ज्यों धाँती बरी जाति है ॥२०५॥

नरनिजा तट बँसी-बट कुंज 'पुंज' घोधी,
 वन घन जहाँ तहाँ आनँदुपयोगी हूँ ।
 सोई रहै ध्यान ऊधौ ज्ञान को न काज कीजै,
 ये 'तो' ब्रजदासी ब्रजराज के बियोगी हूँ ।



'आलम' सुकवि कहे तन, बीच फान्ह छवि,
 जोग, दैन आये तुम कहा हम जागी हैं ।
 जोग तौ सिखैये ताहि, जोग की जुगति जानै,
 जोग फौ न काज हम बंसोरस भोगी हैं ॥२०६॥

पाँसुरी : सषद सिगोनाद पूरि पूरि रहे,
 ताही को अदेस^१ सोई तन मन धुनि है ।
 पिरह की उवाल साथै साथै, जलु नैननि को,
 निद्रा तन भूख साथै साथै उनमुनि^२ हैं ।
 'आलम' सुकवि यहि, जुगति जागै सु जोगी,
 अलि उपदेस हम सुन्यौ^३, है न सुनिहैं ।
 सुमिरन-मौन उर, ऊरध उसांस कैंधे,
 जैसे ब्रजवासी ऊधौ, ऐसे कहां सुनि हैं ॥२०७॥

चाहती सिगार तिन्है सिंगी सौं सगाई कहा,
 श्रीधि की है आसा^४ तौ अधारी^५ कैसे गहिये ।
 पिरह अगाध तहाँ मुनि की समाधि कीन,
 जोग, काहि भावें जु धियोग दाह दहिये ।
 'सेख' कहे मैन मुद्रा मोहन जु लाये घन,
 मुद्रा लागो काननि मुने ई सुल सहिये ।
 लागै लग^६ नेकहूँ कहूँ जौ वैरी नीरो होय,
 ऊधौ पते बीच की पिचारि वांत कहिये ॥२०८॥

१-अदेस = आदेश, आज्ञा । २-उनमुनि = योग की एक मुद्रा ।
 ३-सुन्यौ = शून्य । ४-आसा = लगाना । ५-अधारी = भोजी । ६-लग = लगाना ।

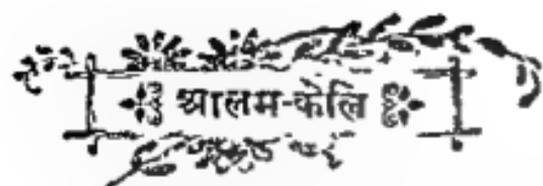
ॐ आलम-कौल ॐ

गाँसी जाहि सूत ताहि हाँसी न हँसाये आवै,
 पासी^१ परै येम सुनि साँसी^२ कहियत है ।
 मत गये मानस मरुरै^३ मारि साँस लेत,
 परगट नैसकु^४ उदासी कहियतु है ।
 'सेख' कहे सोई गीत हरि बिलुरत ऊधो,
 घावरे^५ विफल ब्रजयासी कहियतु है ।
 सुर पाँसी^६ घेघत विसारे सर व्याधि सोई,
 तातें घेडो अधिक विसासी कहियतु है ॥२०६॥

घारै^७ तें न पलक लगत विनु साँवरे ते,
 घावरे अजान ऊधो भले उपदेश हैं ।
 तादिन ते धन सुनो घरु है दहत दूनो,
 तारनि^८ में ज्योति नहीं अटा भये कस हैं ।
 'आलम' विहान छिन जानो जात कोटि दिन,
 कौन रैन की समाई सुरति न नैस^९ हैं ।
 हम ॥ ते स्याम दूरि स्याम ॥ ह ते हम दूरि,
 वै तो आछे काछे स्याम सखी मैले भेल है ॥२०७॥

बुझि कै अयूझ ऊधो होत ऐसी-बुझियै रे,
 जो पै ऐसी बुझ तौ अयूझ, किन बुझै जू ।
 भखत भुरत, भखकेतऊ खिभायै मुकि,
 तुम मुकवत, मूठो, जूझ, कौन जूझै जू ।

१-पासी = फाँसी । २-साँसी = (साँची) सरय । ३-घारै =
 घंसी । ४-घारै तें = आरंभ हो से । ५-तारनि = नेत्र की पुतलियां ।
 ६-नैस = तनक ।



आलम-केलि

जोगु दीजै जोगिन संयोगिन को भोगु दीजै,
 राज भोग कान्हजी बड़ाई सब दोजिये।
 'आलम' अलख ज्ञान मुकुति मुनिह लेहि,
 देव कविलास' यसैं पेमहि पतीजिये'।
 रूप रकुमिनि रमै साईं सत्यभामा के हौ,
 कुशजा के परस परेखे - कत छीजिये।
 पिनती 'इहाँ काँ इहै याही वंसीधरजू, साँ,
 हमै नेकु बाँसुरी बजाइ मया कीजिये ॥२१४॥

वे तौ ऊर्धो - परम पुनोत पुन्य पाइयत,
 भावन प्रथीन प्यारे पावन दरस जू।
 गाँव की अहीरी हम गोरस की वास भरी,
 खरीये गंधारि गुन रूप ही नः रस जू।
 कहे कवि 'आलम' विराजित वै राजा कान्ह,
 राजनि के राजा गुन पूरन दरस जू।
 बिसरयो बसेरो धन धीधी अरु प्रजधानो,
 अति मन भाई पाई कुबिजा सरस जू ॥२१५॥

सीत रितु भीन भई छाती राती ताती तई,
 ऐसे ताप तिय तन तये हैं न तवंगे।
 'आलम' अनिल इतराय कै कलिन मिलि,
 दीन्हो है फलेस सुधि आये दूनो दवंगे।

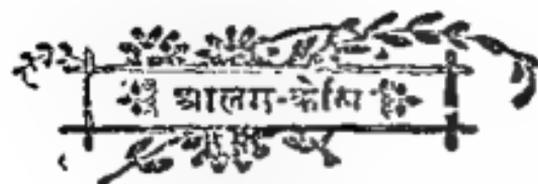
१-कविलास = स्वर्ग लोक । २-पतीजिये = विश्वास कीजिये ।



प्रोपम ते ऊपम है विपम अपाढ़ ऊधो,
 माधो जो न आये मन भ्रमर ज्यों भवेंगे ।
 यधिधे फो वूँदनि धियोगिनि को योनि योनि,
 आये धैरो घादर बिसासो धिस वचेंगे ॥२१६॥

पेम नेम गहँ नेह वार्ते निरवहँ जाते,
 अय उहँ कहा परी महाराज भये हँ ।
 फलुक सँदेसे ऊधो मुख के सुनाउ आनि,
 हम सुख मानै उन जेते दुख दये हँ ।
 इहां कधि 'आलग' पुरानी पहिचानि जानि,
 जोगी सुधि आये ते धियोगी भूलि गये हँ ।
 इहाँ धैरी धिरह बिहाल करै धार धार,
 सालत करेजै - नटसाल! नित नये हँ ॥२१७॥

जय सुधि आये तप तन विनु-सुधि—होत,
 धन सुधि आये मन होत पात पात है ।
 'सेख' कहे सरद सहेठ के धे गीत गुनि,
 बाँसुरी की धुनि नटसाल गात गात है ।
 तुम कह्यो मानौ उपदेश हम नाहीं कयो,
 जैसी एक नाहीं तैसी नाहीं सौक सात है ।
 पेम सौ बिरुधौ जिनि हा हा हियो रूँधौ जिनि,
 ऊधो लाख घातनि को सूधी एक धान है ॥२१८॥



भावतो दिदेस जियेँ भामिनि कवनि भाँति,
 भवन न भावे भ्रम भोत न सँभारिये।
 'आलम' लगत नहीं पलनि सौँ पल पल,
 प्रलय समान पिय विनु पल टारिये।
 उमड़त जल रही न्यारी है डगरौ भारी,
 डोलते डगन कहूँ कहो कहाँ डारिये।
 हाथहिँ कै लीजै लै कै दीजै घजनाथ हाथ,
 ऊधौ दोऊ अँखियाँ लै साथ दी सिधारिये ॥२१६॥

उद्धवका लौटना

लीजै छवि जुगति अछूनी छाप प्राणपति,
 सरसौ है पलक पुनीत मेरी जासु है।
 'आलम' उन्हें न परतीति और पेम विनु,
 वंसी विनु और कहूँ ठौर न बिसासु है।
 पतिया पठाई तुम यतिया न धूमो उन,
 गति और नारि घज और भयो बासु है।
 यासर उसाँसनि सौँ औरौ न पाधे पलु,
 निस अँसुवनि सौँ न नेक ह उकासु है ॥ २२० ॥



मड़हो^१ मलीन कुंज खांखरो^२ खरो ई खोन,
 मनु न लगत उदयस^३ लगे आन सो ।
 विरह विकल गोपी डारी हँ घै ठौर ठौर,
 मानौ अरसानी आगीं थाकीं करि गान सो ।
 'आलम' कहै हो जात मनक^४ न सुनी कान,
 मेरिये धनक^५ कछू थाला पायो प्रान सो ।
 झूलह बराती लै कै राति ही सिधारो जैसे,
 ऐसो ब्रज देख्यो माधो प्याह को बिद्वान सो ॥२२१॥

माती मट कोकिल उदासी मधुमास बोलै,
 स्वाती रस तपति अबोली रहै चातकी ।
 'सेख' कहि भौंरा भौंरी कौलनि गुँजारै पुंन,
 छ्राती तरकति सुनि जुघतो फी जात की ।
 रास रस प्रावै^१ सुधि सरद सतावै ना नो,
 विरह बसन्त ब्रज घरी घरी घात की ।
 चितवत चैत फी ये चाँदनी अचेत भई,
 जीती ही जुगहारि जिन कातिक की रात की ॥२२२॥

जाको प्रात पंकज प्रकासे राते ताते लागै,
 तैसी कुमुदिनि ताहि तातो फ्यो हितति हैं ।
 'सेख' कहि जाके अहनोदै में अहन नैन,
 नाँकह फी लाली में ते आली बिलगति हैं ।

१—मड़हो = मकान । २—खांखरो = झंझर (जिसमें पान ते छेद हो) । ३—उदयस = उजड़ा दुआ । ४—मनक शब्द । ५—मनक = मृत शयन ।

चन्द्र की उज्यारी ब्रज ऊजर करति जुरि,
 दीपक उज्यारी हू ते जरि, जरि जाति हैं।
 तरुन वियोग तरुनों को तन तायबे को,
 जैसे दिन तरनि तरैया तैसी राति हैं ॥२२३॥

तुम विनु कान्ह ब्रज नारि मार मारी सु तौ,
 विरह विधा अपार छाती यों सिराती हैं।
 तरनि सो तमीपति ताही सौ तलप तयै,
 हेरति ज्यों निसा परी दसौ दिसा ताती हैं।
 कानन में जाय नेकु आनन उंधारि देत,
 ताकी भार फूली डारं दूरि तें सुखाती हैं।
 धारि में जो योखो तनु लागति ज्यों चुरै मीन,
 धारिज की बेलें ते यिलोके बरी जाती हैं ॥२२४॥

—१६६—

जसोदा विरह

दान की दहेडी मिस कान्हर की बेर जानि,
 देवकी के डार हैं कै फेहें विधि जीजिये।
 तजि सबै नात मात तात की न. यात फहें.
 धौधारे धार्यै कहाय फेहें विधि जीजिये।

१—तमीपति = चद्रवा । २—तलप = सेव । ३—धौवा = पार्वी
 मल गले ।

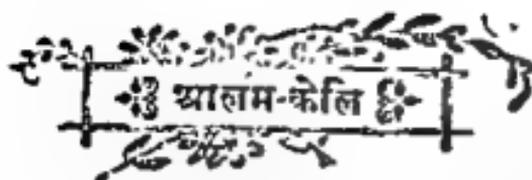


जरि जरि रहै मेरी छाती बरि बरि उठै,
 'आलम' छिनहि छिन छौना विनु छीजिये ।
 गहरु न लाउ जिति मोहि अकलाउ आउ,
 चलहु महर मथुरा ही घर कीजिये ॥२२५॥

कपिन को पेम देखि छानी सौं लगावैं छौना,
 वंछरु न देखै तौलौं गैया न पेन्हाति है ।
 धिरिया की चाह देखि चाँचह में चारो राखै,
 'चेदुआ' की चाह पिनु सोऊ न अघाति है ।
 'आलम' कंठिन तेरो हियो हौं सराहौं नन्द,
 चन्दहि पिछोड़ौ छाँड़ि लायो कारी राति है ।
 हम निरमोही मोही धनके पखेरु पसु,
 बालक वियोगु कहैं विपद विहाति है ॥२२६॥

गोपी विरह

दिये हक हुलसी है, औधि ह न आये हरि,
 हेरि भग हारी ताते भई तनु खोनी है ।
 'आलम' सुकवि थकी विकल चयारि लागे,
 मारि मैन सकल सकेलि बिथा दीनी है ।



उससि उसाँसन साँ पाँसुरी है न्यारी आई,
 बीच बीच अँसुवनि आँखि भर लीनी है ।
 पिरह के पीज-पये सलिल साँ साँचि दये,
 आँधी भूमि मानो फामकाँधी^१ क्यारी कीनी है ॥२२७॥

कँचन में आँच गई चूनो चिनगारी भई,
 भूषन भये हैं सब दूषन उतारि लै ।
 बालम विदेस ऐसी वैस मैं आगि लागै,
 जागि जागि उठै हियो पिरह बयारि लै ।
 अथ कत पर घर माँगन है जाति आगि,
 आँगन में चाँदु चिनगारी चारि भाटि लै ।
 साँझ भई मौन सँझवाती^२ क्यों न देति है री,
 छाती सो छुवाय दिया याती आनि यारि लै ॥२२८॥

जय तैं गोपाल मधुवन को सिधारे माई,
 मधुवन भयो मधु दानव विषम सो ।
 'सेख' कही सारिका सिपंडी पंडरीच मुक,
 मिलि कै कलेस कीन्हो कालिन्दी कदम साँ ।
 जामिनी^३ धरन यह जामिनोयो जाम जाम,
 यधिवे को जुवति जनाचै, देखि जम साँ ।

१—काँधी = एक जाति विशेष जो तरकारी शाक इत्यादि की रोती करती है। २—सँझवाती देना = चिराग जलाना। ३—जामिनी = जमराज की दूती (मौत)



देह करै करठा करेजो लीन्हों चाहति है,
 कागु भई कोइल कगायो करे हम सों ॥ २२६ ॥

मैन बस कौनी मनमावन न आये आते,
 सांवन को आवन सुने हूँ अकुलाति है ।
 आलम अघयारि बरे विजना की लीजै तनु,
 पिजुरी की कौदनि पसोजि भोजि जाति है ।

थोरे थोरे बादरनि चितै मुरभाति है ।
 सोरी हैई भूमि, पियराइ जु रही ही तनु,

सीरी होति ज्यों ज्यों ऋतुसोरी नियराति है ॥ २३० ॥

कारी धार परी कारी कारी घटा जु रि आई,
 तैसई तमाल ताल कारे कारे भारे हैं ।

सेख कहै सांखिन के सिखर सिखर प्रति,
 सिखिन के पुंज सुरसिखर पुकारे हैं ।

निरखि निरखि तेई तरुनि, तनेनी दाती,
 जिनके वी निहुर निनोही फंत न्यारे हैं ।

वरपि वरपि जात वरिष सो पल पल,
 बूंद बूंद घैरी मानो विसिख विसारे हैं ॥ २३१ ॥

१-करठा = शक्ति काली । २-कगायो करै = कांय २ किया करता है ।
 ३-ऋतुसोरी = शरदऋतु । ४-ताल = ताड़ पत्त । ५-सिखर =
 मोर । ६-सुरसिखर = ऊंचे स्वर से । * तनेनी हीनी = एंठ जाती है
 (जड़पर होती है)



शालम-कवि

रजनी उज्यारी है-रहति, जग या-ते-नभ,
 ज्वाल-पुंज-अग्नि जरति-एते-मान है ।
 सुधासई सीतल है सुभग सरूप जाको,
 सकल संसार जानै, सु-तौ सखि आन है ।
 एक परतीति मन-आचै कवि 'शालम' सु,
 बिनु हरि कछू-विपरीति की-उठान है ।
 बिधु गिलि घैठो सु-वदन बिधु चाहै मेरो,
 बिधु नहीं आली री बिधुंतु^१ मरै जान है ॥२३२॥

तमीपति तामस^२ तें तमिल^३ है उयो आली,
 तियनि-बधनि-कहँ हुनोई-दयतु^४ है ।
 आपो यरि जातो जो न बेगि बूझी धारिनिधि,
 बैरी रवि आगं, आगे-नीरोई, नचतु है ।
 'शालम' सुकवि रातो किरनि सलाका सी है,
 राका की डरौहीं राति कहाधौं अयतु है ।
 चन्द्रिका बितौत तनु चिनगै उठत हैं री,
 चाँदनि न होइ चाँद चूनो सो षयंतु^५ है ॥२३३॥

विस ज्यों वमत यदै अंतक सो आयो या ते,
 फंत बिनु अंतक-दसो^६ को नियराती हैं ।
 राती राजो पाती वन याती सी घरन लागी,
 घानां काम लागी कै लगार्इं छेरी छाती हैं ।

१-विधुंतु = गढ़ । २-तामस = क्षीप । ३-तमिल = कुट ।
 ४-दयतु है = जलता है । ५-षयंतु है = (यमन करता है) लगता है ।
 ६-एतक दशा = दशु ।



लै लै अलि भूनी डारै फूलो अनफूलो हू ते,
 भूली भूली फूल ही सी नारी मुरझाती हैं ।
 जरी जरी रहै सहै घगी घरी हरी कहै,
 हरी हरी बेलें देखि मरी मरी जाती हैं ॥२३४॥

फूल फुरमान छाप छपद^१ दुहाई पास,
 नूतन सुसाज टेसू तंबू दे परो री है ।
 कीर कारकुन पिक घानी चौठी आई जमा,
 विरह घढ़ारै छबि रंयति मरोरी है ।
 सीतल यथारि घादि मापि रूप लीनो है री,
 उपज हमारे हरि ध्यान जु घरो री है ।
 आयो है वसन्न व्रज ल्यायो है लिखाइ आली,
 जोन्ह कै जलेबदार^२ काम को करोरां^३ है ॥२३५॥

पंकज पटीर^४ देखे दूनी दुख पीर होत,
 सीरे हू उसीरनि तैं पीर चीर हार की ।
 श्रैया सो श्रयास भयो तथा सो तपत तनु,
 अति दी तपत लागै भार घनसार की ।
 'आलम' सुकबि छिन छिन मुरझानि जाति,
 सखिन बिचारि तजो रीति उपचार की ।
 मन ही मरुरे मरि रही मन मारि नारि,
 एक ही मुरारि बिनु मारी मरें मार की ॥२३६॥

१—छपद=श्लोक । २—जलेबदार=सुसाज । ३—करोरी=
 तदतीवदार । ४—पटीर=(पाटीर) चंदन ।



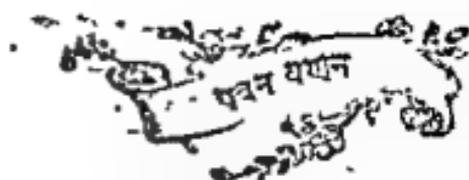
माधो विनु राधिका आधिक थाधियो न रही,
 हारो डारो रहै आपु जरो खीन खेह^१ में ।
 पिजर को भलक भलकै, जाने आंग धीच,
 भुमै मन भुमै तन, गँधै भुरै मेह में ।
 रती न रकत रह्यो 'आलम' नपति ताते,
 भोजोई रहत उर नैननि के मेह में ।
 सोचनि मसूपनि उसाँसनि सौ मरी जाति,
 मासक ते मासाऊ न माँस रह्यो देह में ॥२३७॥

उत्तपनि रतर रितुपति में तपति अति,
 निसिपति कर उर ताप सी गहत है ।
 हरि विनु हखोई, हरपु^२ हर-हर^३ हटि,
 हीही हारो हरि सूपो मगु न चहत है ।
 'आलम' नलिन अरु अलिन परसु अष,
 अंगना के अंग जानो अंगिनि बदन है ।
 कहा फही, फेहि कही, कोह की कहानी मोहि,
 कुहु फूह कहि कहि फोकिला बहत है ॥२३८॥

बुधि कौन बिधि की जु बिधु सौ बधावे याके,
 यधुनि यधनि की धौ कब तें घला^४ चली ।
 माधो विन सुगो मधुबन जानि मधु आस,
 मो को धौ लै आयो मधुपनि की सेनाधली ।

१-खेह = यज्ञ : २-उत्तपनि रतर = उताप में रत (स्वयं संतप्त) ।

३-हरहर = हर से हर गया (क्यात्र) ४-घला = घाल, भीति ।



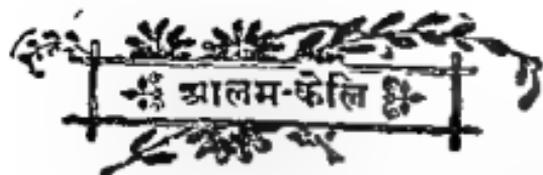
अनल सो अनिल^१ नलिनमाला नल^२ मेयी,
 अनिल न लाउ री न लाउ मलया अली ।
 एक इन अनंग अनेरी^३ दही 'आलम' हो,
 दूजे आनि चाँदनी या दाहति भाँती भली ॥२३६॥

पवन-वर्णन

धारक जो ब्रजराज ब्रज सज्यो जव अथ,
 सध मिलि एक धारि बैरी भये धरज्यो ।
 मूरख मयूख-हिम^४ हुमकि पाहुमकि^५ हने,
 हमहि ये जानै हियाँ हौं मैं हिमकर ज्यो ।
 जलजाधली ते ज्वालाजाल जलजाल जरै,
 लाल लाल भरि हग जुग जलधर ज्यो ।
 एक मनु-भारे मैं तो मारा ही की मारी मरौं,
 दूजे मारै मरुत प्रवेश विष सर ज्यो ॥२४०॥

सवन घटा घुमरि जगु रह्यो घन धरि,
 घेरि चहरत जात सिंधु भरि नीरं जू ।
 'आलम' सिखिनि^६ सुनि सवद सुहाये सुर,
 बूंदनि के संग बहै सीतल समीर जू ।

१—अनिल = पवन । २—नल = नावरु की नलिका । ३—अनेरी =
 व्यर्थ ही । ४—मयूखहिम = चंद्रमा । ५—सिखिनि = भोर ।



पवन पियारे ऐसे कहियो सुनाय अथ,
 हम अबला हैं कैसें घरें जीय धीरजू।
 पल पल प्राण ये तपत पिय पास कों सु,
 पालौ पेम सहि न सकति पल पीरजू ॥२४१॥

सघन अखंड पूरि पंकज पराग पत्र,
 अच्छुर मधुप शब्द घंटा कहनातु है।
 धिरमि चलत फूनी बेलिनि की वास रस,
 मुख के संदेसे सेत सघनि सुधातु है।
 'सेक' कहि सीरे सरधरनि को तार तौर,
 पीयत न नीर परसे ते लियरातु है।
 आवन घसन्त मन भावन घने जतन,
 पवन परेवा मानो पाती लीने जातु है ॥२४२॥

फेला दल डोलें मूल मंद मंदाफिनी फूल,
 एला फूल बेला की सुयास बर बासी है।
 सरद की सांभ भई सीरी लागे सोय गई,
 साजन सहेट मँटि उठति उदासी है।
 मालती कों मिलि जय मलय कुमार आये,
 रेवा रस रोमनि जगाय नोद नासी है।
 सघिन सुहेल घर दच्छिन समीर यह,
 बरी पुरवैया बरी वैरिनि विसासी है ॥२४३॥



जमुना-कुंज

अरविद पुंज गुंज डोर मौर ही ब्रती,

हलोर ओर थोर ज्यों निसा चलत चंदनी ।

निकुंज-फूल मौल बेलि छत्र छांह से धरे,

तटी कलोल कोक पुंज सोक संक दंदनी ।

आलम कबिच चित रास के विलास ते,

प्रकास धंदना फरी बिलोकि विस्थ-धंदनी ।

समीर मंद मंद केलि कंद दोष धंद यो,

अनन्द नन्दनंद के बिराजे हंसनंदनी ॥२४४॥

लता प्रसून डोल धोल कोकिला अलाप केकि,

लोल कोक कंठ त्यों प्रचंड भृंग गुंज की ।

समीर धास रास रंग रास के विलास धास,

पास हंसनन्दिनी हिलोर केलि पुंज की ।

आलम रसाल धन गान तारल कालि सो,

विहंग धाय येगि घालि चित साज कुंज की ।

सदा वसंत हंस सोक ओक देव लोक ते,

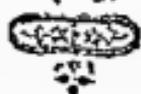
बिलोकि रोकि रही पाँति मँति सो निकुंज की ॥२४५॥

गंगा-वर्णन

जौही भौंहं भीजी आँवि ताकि है जु तीजिये सं,
 जोषी-कहे ज्याइहे जमर पद आइ लै ।
 अंबर पखारे तें दिगंबर । बनेहै तोहि,
 छलकः छुआये-गज छालः तन छाइ लै ।
 'सेख' कहे थापी कोऊ जैनी है कि जापी पडो,
 पापी है तो नीर; पैठि नागत लप्राय लै ।
 अंग घोरि गंग में निहंग^१ है कै बेगि चलि,
 आगे-आड मैल धोइ यैल गैल लाइ लै ॥२३६॥

नीके न्हाइ धोइ धूरि पैठो नेकुः पैठो आनि,
 धूरि जटि गई धूरिजटो^२ लीं भवन में ।
 पैन्हि पैठो अंबर, तु निकखी दिगम्बर है,
 हग देखो भाल में अचम्भो लाग्यो मन में ।
 जैसो हर हिमकरा घरेः औ गरेः गरल,
 भारी घरु डरु वरु छुँडिषी एक खने में ।
 देखे दुतिना परत पांप रेतें पा परत,
 सापरे ते सुरसरि साँप रेंगे तन में ॥२३७॥

१-निहंग = नंगा (शिव) । २-धूरिजटो = महादेव । ३-सापरे
 तें = स्नान करने से ।



दीनता

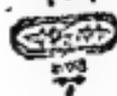
जथा गुन नाम स्याम तथा नै सकति मोहिः ।
 सुमिरि तंथापि कहु कृष्ण कथा कहिये ।
 गोकुल की गोपी किये गाह किये ग्वारि किये,
 लोला यही चरनानि कहिये ।
 कुंजनि के फोट धै जु जमुना के भीट तिनै,
 कपिले हौ की कविलास कहिये ।
 सेख रिस रोपे कले दोपनि को मोर है,
 जो एकौ धरी जनम में पोषे माँक रहिये ॥२४८॥

मिटि गयो मौन पौन साधन की सुधि गई,
 भूली जोग जुमति विसाखा तपे वन को ।
 सेख प्यारे मन को उजारी मयो पैम नेम,
 अज्ञान गुन नास्यो बालपने को ।
 चरन कमल ही की लोचनि में लोच धरी,
 रोचन है गान्यो सोचामिटो धाम धन को ।
 सोक लेस नेकु हू कलेस को न लेस रह्यो,
 सुमिरे ओ गोकलेस गो कलेस मन को ॥२४९॥

पैडो समे सुधो वैडो कठिन कियार द्वार,
 द्वारपाल नहो तहाँ सबल भगति है ।

१—कविलास = हर्म । २—पोष = धरियों की बस्ती (मन) ।

३—गोकलेस = गोकुलेश (श्रीकृष्ण) ।



श्यालम-कैलि

‘सेख’ भनि तहाँ मेरे त्रिभुवन राय हैं जु,
 दीनयन्धु स्वामी सुरपतिन को पति है ।
 पैरी को न घेरु धरियार्ह को न परधेस;
 हीने को हटक नहीं छीने को सकति है ।
 हाथी को हँकार पल पाछे पहुँचत पायै;
 चींटी की चिघार पहिले ही पहुँचति है ॥५०॥

राम किसी भाँति भेजि राघव की रीति तजि,
 ब्रैता ही ते तेरो दिन नीके जिय जानि लै ।
 ‘सेख’ भनि वापर घहाऊँ कोटि छापर जु,
 स्वारथ निघारि परमारथ की बानि लै ।
 सोई दिन सोई रैन सोई ससि सुर गैन;
 कठ नीको नाम सोई समय में आनि लै ।
 कलजुग तौ पै जौ तू कलि के कलेस मानै,
 सति भाखि सठ लिये सतजुग मानि लै ॥२५१॥

सीता सत रक्षयारे तारा हूँ के गुन तारे,
 तेरे हेत गौतम की तिरिया ऊँ तरी है ।
 हौं हूँ दीनानाथ हौं अनाथ पति सांघ बिनु,
 सुनन अनाथनि के नाथ सुधि करी है ।
 डोले सुर आसन दुसासन की ओर देखि,
 अंचल के ऐ चत उघारो औरै घरी है ।

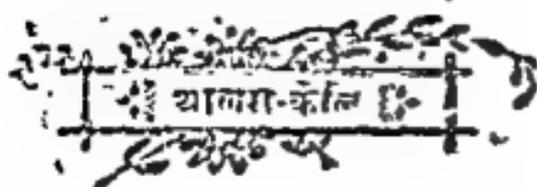


एक ते अनेक अङ्ग धाई सेत सारी संग,
तरल तरंग मरी 'गंग' सी है ढरी है ॥२५२॥

रजनी को काजु नर घोस ही ते सोचै वैद्यो,
घोस हू के काजु को विचार यहै राति है ।
हँसै खेलै खाय न्हाय बौलै डोलै आवै जाय,
गन ही की रुचि नीके तन ही हिताति है ।
'आलम' कहै हो बिनु पूरा गथु पाये ऐसी,
थोरी पूंजी बीच जन्म मौतियो सिराति है ।
घरी है गनतु घरियार ज्यों ज्यों याजत है,
जानतु है नहीं कि घजाये आयु जाति है ॥२५३॥

जनमत छिति पखो पलना बहुरि परि,
हाथी हय सुखासन पखोई रहतु है ।
अरिनि के प्रस परि विषयनि बस परि,
जुघतिन रस परि सुखहि चहतु है ।
तासो तोहि परनि परी है मेरे प्यारे प्रान,
हा हा पररुते छाँड़ि 'आलम' कहतु है ।
प्रनति सरौर सील परिवे ही पर रुचि,
पखोई रहतु ता ते पखोई चहतु है ॥२५४॥

१-परनि परी है = पड़ने की आदत पड़ गई है । २-पररुत = प्रकृति,
स्वभाव ।



शिव की कविता

गोरख सुहोरी लिये खंभु ताको मत दिये;
 आपुन अकेलो संग गौरी तिहि लोग ना-
 धरना विभूति धार धार लै लै मुख लायै,
 उरहु लगायै पुति भावै कछु मोग ना ।
 अधारी लै धौरे घरी संपत्ति धतूग भरी,
 घृषम लै चलै जाय बोऊ ताको लोग ना ।
 जटा द्विटकाये छवि छानो में विद्याये छाल,
 पासुकी पिरामी पाकी टेक बैठो जोगना ॥२५५॥

देवी की कविता

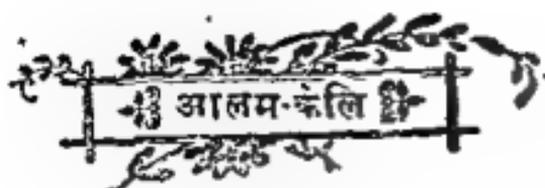
मौन को दरसे पुन्य-मीन मेरे नेरे आयो,
 छत्र-छाँह परसत छर्वनि साँ छयो हीं ।
 मंगला के मंगल लै मंगल अनेग मये,
 दिगलाज रांकी लाज याहि काज नयो हीं ।
 सेपमति सेष ही सुसेप की सो दीनी तुम,
 रावरे सिखाये सिख दिग आनि लयो हीं ।

दुर्गा देवी नेरेंद्र दया से दुर्ग मति आयाँ.
 पावको मुझे सुनितन पाद मयो ही ३२५१३

रामलीला

पुन में बैठनु परीगी भये पदिकनि वं,
 भावन के हाथ नर पाद बरि ररिरे ।
 'सेवा' भूमि दामिरे कि विमं-येलि दामिरे कि,
 कुन है कि कांति है कीमत्या बादि बरिरे ।
 वन गिरि देरनि^१ दरेंद्र दुय केमे बरि,
 कोपरे पुनाद एकुनाद नरे मरिरे ।
 मैले नन दर न नमैले दान कलनि के,
 वनकन कोदि छेगि दान पाद ररिरे ३२५३३

राजा को मगु सिदुवन शूरगिब दी,
 केकरे को सुय निदि दुय ददियतु दी ।
 विवा दी सुनि मूय दान से वान बरे,
 कुनका वान हैरे नारे दुगी जनि ही ।



'सिख' भनि न्यारे होत घरं के उज्यारे दिया,
 सुधि आये साँस लेत बिष सो गियत हौं ।
 अन्तर मैं जरी नख सिख परजरी नहीं,
 तातें अधजरी हौं मैं मरी न जियत हौं ॥२५॥

जरि उछ्यो पौन गौन थाक्यो मौन पंखी भये,
 मानस की कौन कहै विधा जु अकथ की ।
 'सेख' प्यारे राम के वियोग तात प्रात ही ते,
 रह्यो मौन मुख सुधि गई झान गाथ की ।
 टेकई न प्रान पलः केकई पुकारे ठाढ़ो,
 राजा राजा करत-मुलानी पानी गथ की ।
 दरसतः दुसह उदासी देस तजि गये,
 देखी जिग दसई^१ दसा जु दसरथ की ॥२५॥

ऊंचे चढ़ि देखि तुम नीचेई चलत अथ,
 चले किन जाहु जु चले हो पार चाउ सौं ।
 जाके पग परस पखान ही को पांख भयो,
 पानी हो को डोंगा सु उड़त लागे बाउ सौं ।
 'आलम' कहत रघुनाथ साथ ऊमे^२ हाथ,
 केवट कहत टेरि हेरि भय माउ सौं ।
 नीरे न लै आहौं जु फेरो करि जाउ अथ,
 मेरो सब कुट्टम जियत याही नाउ सौं ॥२६॥

१-दसई दसा = मरण । २-ऊमे हाथ = हाथ उठाकर ।

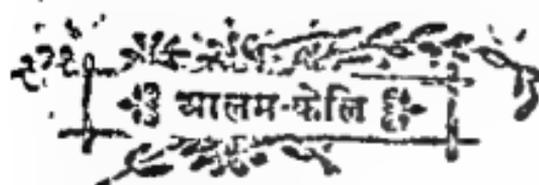


हुरे जहां महाधीर राजन की महा भीर,
 महाराज धीर रघुवीर पैज-श्रुति की ।
 'आलम' जनक जानकी की मरजाद राखी,
 दोनी पति कीनी छत्र छत्रिनि के छति की ।
 कर लु कररे कर उठी है धनुष धुनि,
 पारद सुनत सुवि भूली जंत्र जति की ।
 कूंद के करक मूंदे लोचन तराक^१ इन्द्र,
 गुन के तराक^२ छूटी तारी भृगुपति की ॥२६१॥

पनघ पुरानी ढरि पानी सो धनुष आयो,
 छुअत छ-टूक मयो तासों कहा-करिये ।
 'आलम' अलप अपराध साथ जीय जानि,
 छिमा छीन करि कत मोघ भार भरिये ।
 द्विज कर सूक्षियत वृक्षियो न जूझि बर,
 कठिन कुठार आनि फंठ पर धरिये ।
 गुरु मति लोपिये न पूजा पाय कोपिये न,
 तासों पाउ रोपिये न जाके पांड परिये ॥२६२॥

क्षायो चिनगी जगाइ लपकि संगूग लाइ,
 उठी है बचूरा की कँगूग ही सों जामा है ।
 मरके भवन भद्रगने भट भारे भारे,
 मोरे भरे हैं भूप दीप समा-भुलि-मामी है ।

१-तराक = शीघ्र । २-तराक = शीघ्र शब्द । ३-भी = भीति ।



'आलम' विलखि लखि लाखें ही ज्यों लोकां जरै,
 वृष्णि देख लंकापति देह लागि दांगी है ।
 लोने लोने भौन नये छिनक मं छार भये,
 होमहार ऐसी कहूं सोने आगि लागी है ॥२६३॥

घारं घार घालिचुत चोले अरे लंकापति,
 कौन गति मति ताहि दीन्दी विधि यावरे ।
 अजौ जीय जानि कै रे जानकी लै जाय मिलि,
 पैर घकसाह गहि राघो जू के पाव रे ।
 'आलम' अलंप कोप किये ही ते देखहुगे,
 पानी में तरीहें सठ पाहन की नाव रे ।
 कंचन जो संवयो है सु बधि है न रंच एक,
 रचना के भौन संय राख हूँ राव रे ॥२६४॥

जीत गई प्रांननि अनीत भई भौति बलि,
 घाति गयो श्रीसर वनावै कौन वतिया ।
 ऊक भई देह बरि चूक है न लेह भई,
 हूक यदो पै न विधि टूक भई छतिया ।
 'संख' कहि सोस रहिये की सहचनि कपि,
 कहा कहीं लागनि कहौगे निलज तिया ।
 और न कलेस मेरो नाथ रघुनाथ आगे,
 भेनु यह भासियो संदेख यह पतिया ॥२६५॥



धीरन बिछोड़, बार छोरि छारि डारी, ही सु,
 भारी नही जटनु अजहुँ तक तैसी है ।
 'आलम' धरौक, घर पैठे नहीं तब ही ते,
 थंडे थन तन तपसी की गति तैसी है ।
 पीरे पीरे पात खात पात ही से पीरे भये,
 पीर रघुबोर जूतिहारी कहु ऐसी है ।
 राजु कैसो राज और स्वारथ को आजु लागि,
 मरथ न देखी सु अजोष्या फिरि कैसी है ॥२६६॥

दुसह दुखारो सव नेमनि ते न्यारो जिहि,
 पेम पथ आवे सीस पग है दरतु है ।
 राते किये यात सुनि ताते सहि जात नहीं,
 लोह भरे धार ताते लोहे सौ लरतु है ।
 कपै जासो काल ज्वाल कपै तैसो कठिन है,
 कपठ वियोगी जू उसौ सनि भरतु है ।
 ऐसो काह करे तकसीर करवत लीयो,
 जैसो घेर बिरही सौ बिरह करतु है ॥२६७॥

नैना नीर धोइ हाखो लोह सब रोइ ताते,
 भूरो है कै भूरो अब लोह न लइतु है ।
 'आलम' न आवे यात पीरे मुख सीरे यात,
 तातो हियो रातो करि सुलहि सहतु है ।

१—तकसीर = अस्वस्थ । २—करवत लीयो = धारे से तिर कटवाना ।



भातर की भीत 'कहूँ लंग्यो है' पछोत 'यकि,
 रीति यहै नही की 'विदेदी' निबंधतु है।
 एक दक 'हेरत' हिराई 'रहो' विस 'विनु,
 मित्र को वियोगी मानो' विश्र है 'रहतु है ॥२६८॥

रेखता

दौरि दौरि द्वारे 'आये' ऐस 'दिल' भी न 'पाये',
 किया 'है' पखेरु तें 'दग्राव' के न 'धारे' का।
 परा 'तेरी' सुरात के 'नूर' गिर 'दोय' बीच,
 फूल सा, फकीर फिरै 'सौं' ली 'सबारे' का।
 हृद सा है जु रहा 'दरद' न 'जाइ' कहा,
 मुआ है 'दिलाक' 'बोच' मारना 'क्या' मारे का।
 सारा दिन 'फिरा' करै 'तेरे' 'फिराक' 'बोच',
 जो न चाहे 'विस' मों 'तो' 'धारे' क्या 'विचारे' का ॥२६९॥

दाने की म पानों की न 'आये' सुधि खाने की सु;
 गली महवृष 'को' अराम खुसखाना है।
 रोज 'ही' सों है जु 'राजी' थार को रजाइ बीच,
 नाज़ की नजर 'तेज' नीर का निसाना है।

१—किया है न धारे का = नशाम का पचा बना दाजा दे। २—गिर-
 दाय = भेंवत। ३—दिलाक = शृणु। ४—फिराक = तनात। ५—मदसु =
 मित्र। ६—रीत = रीना। * नाज = छव मान।



धरति चिराक रोसनाई आसनाई वीच,
 यार यार वरै थलि जैसे परधाना है ।
 दिल साँ दिलासा दोर्जे हाँल के न ख्याले हजै,
 'वेधुद' फकीर यह आँलिक देवाना है ॥२७०॥

दिलतें तरीके घाँइ इस्क महरम होय,
 रोसनाई को न रोइ यार पुरनूर है ।
 मनी की मनाही यारों तेना जौक जेती यारी,
 यारी पीछ ख्यारी का गुमान ही गकर है ।
 'मालम' जुदाई ते तू काहलाँ न परि देखि,
 दरद नजोक पाए दीरु कहा दूर है ॥
 साधिन कदम राखि कयहँ न भूले राह,
 सादक नजर किए हावका हजर है ॥२७१॥

गम के नसीब तें मनी है जैसे राज पाए,
 आसक गरीब को गुमान मनो माल पया ।
 नाज ते नियाजि के नजोक ही निहाल किया,
 जीवने की जौक में जुदाई का जवाल पया ।
 यह उस रोज से खराब हुआ खाँके ही में,
 खैर नहीं खूबी पीछे मूनी तेरा ख्याल पया ।
 दिल है जु थावै साँ दिलासा भी न पावै यानाँ,
 यार दिवदार पेने वेदिल का हाल पया ॥२७२॥

१-वेधुद = वधुद । २-इस्क महरम = प्रेम का मर्म जाननेवाला ।
 ३-रोसनाई = मकाय । ४-पुरनूर = प्रकाशपूर्ण । ५-मनी = शहकार ।
 ६-नोक = मजा । * सादक = सच्चा । हादक = सच्चा वैय । मनी = मनी ।

आलम-केलि

थोरो बार है जु कलु थोरो सो मैं, ताकि आई, १००
 थोरो सो बिलाह कहीं खिन हो मैं-खाइगो ।
 धीरज अघार-ते रह्यो है-खंग घार जैसो; १०१
 आँसुन की घार सौं न धूरि है जु धोइगो ।
 आहि सुनि आई औ न चाहि ताहि पाई^२ फेरि,
 देखि 'सेख' मजनूँ बिना हो नाँइ-साँइगो ।
 नोकै के निहारि, धाके बसननि झारि डारि,
 तार तार ताकि कहुँ बार, सो जु होइगो ॥२७३॥

सवैया

लई छलु कै हरि हेन, हला मिलई, नवला नव; कुंजनि माहीं
 'आलम' आली-अकेली डरे-हितवैपति जे; बतियां चित माहीं
 मुखनाय भरे दग दीन तियाँ, जल छोन में मोन मनो अकुलाहीं
 चोंक परै चितवै चल नीचहि डोलत ज्यो; पिय की परिद्वारि



[२७५]

कान्ह प्रिया पतिके विलसैं सखी साखि सहैटः यदी जिहि काछें
कबि 'आलम' मोह् यिनोदनि सों तनस्वेद समै मदनजल ताछें
तिय भोल जगम्मग है पिदुली अलकैं सुकियानन ऊपर आछें
आसत है प्रसिवे ससि संगम भानु छुप्यां सुरभानु^१ के पाछें

[२७६]

बनितौ बनि घेप चली यन को विहरै अहँ कान्ह विहारनि सों
अलकावलि स्वेद प्रसून लसैं प्रगटे उड़ ज्यों तमधारनि सों
तिलकदुंदुति चारु मृगम्मद सों छुधि छोर लगे दग तारनि सों
कवि 'आलम' सोभित कज उमै अधमै भुवभृंग कं भारनि सों

[२७७]

सांभे समै निकसी घर सों धुमरी पहिरै रति रूप सघाये
'आलम' लै संजनी तिहि को गुरु धैठे की संक सकोच गँवाये
नूपुर को धुनि घाह के कान्ह रीकै रहै सखी यों रिझवाये
धुंध ही महँ नेकु चितै हँसि गोहँ खली तियमोह नचाये

[२७८]

ए लै अली लखि छाई हों लाल यहै सुनि बाल सवै दुख मोचै
है सकुची गुरु भारिन मै अनबैननही चित सों चित रोचै
गुरु ठौर उठी बहराइ के बाल रखा न पखो अति लोचन लोचै
धुंधुडी पलकैं कर ज्यों पसरै फिरि ए कहि चार सकोचै

१-सुरभानु = राहु ।

थोरो थार है जु कलु थोरो सो मैं ताकि आई,
 थोरो सो बिलाइ कहीं खिन ही मैं खाइगो ।
 धीरज अथार ते रखा है खंग धार जैसो,
 आँसुन की धार सौ न धूरि है जु थोइगो ।
 आहि सुनि आई औ न चाहि ताहि पाई^२ फेरि,
 देखि 'सेख' मजनू बिना हो नाँद साँइगो ।
 नोकै के निहारि वाके पसननि भारि डारि,
 तार तार ताकि कहुँ थार सो जु होइगो ॥२७३॥

सवैया

लई छलु के हरि हेतु हला मिलई नवला नव कुंजनि माहीं
 'आलम' आली अकेली डरै- हितवैपति जे पतियां चित माहीं
 मुखनाथ भरै डग दीन तियां जल छोन में मोन मनो अकुलाहीं
 चौक परै चितवै चल नीचहि डोलत ज्यों पिय की परिछाहीं

१-सन = तबमार । २-चाहि आई = रख पाया ।



[२७५]

कान्ह प्रिया यनिके विलसैं सखी साखि सहेटः बदी जिहि काछुं
 कबि 'आलम' मोद् यिनोदनि सौं तनस्वेद समै मदनजल तालुं
 तिय भांल जंगम्मगः है बिंदुली अलकैं सुकियाननः ऊपर आछुं
 नासत है प्रसिबे 'ससि' संगम भानु छप्यो सुरभानु' के पाछुं

[२७६]

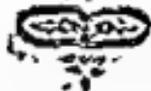
यनितो बनि वेपः चलीं बन को विहरै जहँ कान्ह विहारनि सौं
 अलकाबलि स्वेदः प्रसून लसैं प्रगटे उड़ ज्यो तमधारनि सौं
 तिलकंदुदुति चारु मृगम्मद सौं छयि छोर लगे दग तारनि सौं
 कबि 'आलम' सोभित कंजः उमै अधमै भुवभृंग कं भारनि सौं

[२७७]

सांभै समै निकसी घर सौं चुनरी पहिरैं रतिः रूप सवाये
 'आलम' लै सजनी तिहि को गुरु धँटे की संक सकोच गँवाये
 नूपुर को धुनि धाई कै कान्ह रीभि रहै सखी यो रिभवाये
 घुंघट हीं महँ नेकु चितै हँसि गोहँ चली तियभौह नचाये

[२७८]

ए लै अली लखि लाई हीं लाल यहै सुनि धाल सवे दुख मोचै
 है सकुची गुरु जोरनि मँ अनबैननहीं चितै सौं चितै रोचै
 गुरु ठौर उठी बहेराइ कै बाल रह्यो न पखो अति लोचन लोचै
 घुंघुट औ पलकैं कर ज्यो पंसरै फिरि एरुहि पार सकोचै



आलम-कैलि ई

थोरी बार है जु कहु थोरो सां में ताकि आई, १५१
 थोरो सो पिलाइ कहीं निन हो में सांइगो ।
 थोरज अघार ते रह्यो है संग धार जैसो, १५२
 थांसुन की धार सों न धूरि है जु धांइगो ।
 थाहि सुनि आई औ न चाहि ताहि पाई^२ फेरि,
 देखि 'सेख' मजनुँ विना हो नंदि सांइगो ।
 नोकै के निहारि पाके पसननि झारि डारि,
 तार तार ताकि कहुँ बार सां जु होइगो ॥२७३॥

सवैया

लई छलु कै हरि हेतु, हला-मिलई नवला नव-कुंजनि माहीं
 'आलम' आली-अकेली डरै-हितवैपति जे, यतियां चित माहीं
 मुखनाथ भरै दग दीन तिया, जल छोन में मीन-मनो अकुलाहीं
 चींकरै चितवै चल नीचहि डोलत ज्यों, पिय की परिछाहीं



[२७५]

कान्ह प्रिया यनिके विलसै सखी साखि सहेट बदी जिहि फाल्ल
कवि 'आलम' मोद विनोदनि सौ तनस्वेद समै मदनजल ताल्ल
तिय भोल जगम्मग है बिधुली अलकै सुकियानन ऊपर आछै
प्रासत है प्रसिये ससि संगम भानु छप्यो सुरभानु के पाछै

[२७६]

यनिता बनि देप चली यन को विहरै जहँ कान्ह विहारनि सौ
अलकावलि स्वेद प्रसून लसै प्रगटे उड़ ज्यो तमधारनि सौ
तिलकदूदुति चारु मृगम्मद सौ छवि छोर लगे दग तारनि सौ
कवि 'आलम' सोभित कंज उभै अधमै भुवभृंग क भारनि सौ

[२७७]

सांभै समै निकसी घर सौ चुनरी पहिरै रति रूप सवाये
'आलम' लै संजनी तिहि को गुरु बैठे की संक सकोच गँवाये
नूपुर को धुनि धाई कै कान्ह रीझि रहै सखी यो रिझवाये
घुंघट ही महँ नेकु चितै हँसि गोहँ चली तियभौह नचाये

[२७८]

ए ली अली लखि लाई हौ लाल यहै सुनि बाल सबै दुख मोचै
है सकुची गुरु नारिन मै अनवैननही चित सौ चित रोचै
गुरु ठौर उठी बहेराई कै बाल रद्या न पख्यो अति लोचन लोचै
घुंघुटा जो पलकौ कर ज्यो पंखरै फिरि एकहि धार सकोचै



[२२३]

नघलो नयनेह नधीन प्रिया रनियो रति राह डरे लखि ओऊ
 'आलम' अंग छुटी अंगिया तन कंचन आभ भई छवि कोऊ
 पसखो कर कान्हको जो की तिया करसो कुच घायन भांगत सांऊ
 देखि भुअंगम कंचनि मध्य दुरे माना हंस के साथक दोऊ

[२२४]

बैठे प्रजंक प्रिया प्रिय अंकत संक तजे भरि अंक मिलाहीं
 गोल कपोल दिपे हंग चंचल मध्य तें सेते कटाछ न जाहीं
 कामिनी को कमनी तन कुंदन रोम की माल लस हिय माहो
 'आलम' उषम का भय री कवरी प्रतिविम्ब कि स्यामकी छाहीं

[२२५]

सैन समै भित सेज समीप सुसोभत स्यामल गौर को संगम
 भामिनि भूयन भेष वनी भरि कोटिक भाव करै भुव-भंगम
 अधरपुट पान विगूय के पुंज कुचपर देत पिया रस संगम
 'आलम' सिधुत शंदन इंदु चक्या मनो संधि सुमेर भुअंगम

[२२६]

वन के गृह सुन्दर सैन किये ललना नंदलाल इकतन के
 कयि 'आलम' ये छवि ते न लहै जिन पुंज लये कल वसन के
 तन स्याम के ऊपर सोमित यों लागि फूल रहे सतपत्तन के
 जल झाल सरायर मध्य मनो झलकै प्रतिविम्ब नलुत्तन के

[२०७]

राति रंगी रति रीतिहिमें रसे ही रसे नायक सों । रति को
रुचिसों मुचिकै मुचि सैन करी अहि संग कली अनु मालति की
लित फूल हिये हरि के छिटके कवि आलम या उपमा चिति की
सँवरी मंत्र रंजन के मंग है निसि में मनु ज्योति निसापति की

[२०८]

एके समै सँग प्राणपिया जु रमै नंदलाल प्रज कहि जु
छलु कै डब चली बरयालकी आलि हुरे बरनायक अंकहि जु
धार् गंही कबरी कर तै अंधरपुट देत निस कहि जु
अहि के मुख तै मानो लेत छुड़ाइ ज्यो गावड़ मैन मय कहि जु

[२०९]

सतपत्रके पत्रनि सेज सजै मिलि सोचत कान्हर संग लली ।
पिय की भुजतीय की प्रीय गही तिय की भुज पीष की गीब रली
कवि आलम अमरोमावलिके जगै लीकी जराघकी जोति भली
जुग जानु सुमेरुके धोच मनो धरि धीर कलिदीकी धार चली

कवि आलम

विपरीति वर्णन

विपरीति वर्णन

विपरीति वर्णन

विपरीति वर्णन

[२६०]

नागाह त्रयपरात रची रति मोति धँसै हँसि हंस । विहंगम
 फूँद छुटी अटकी लट सौ छिटकी छुटे अंग्र ज्यो, गंग तरंगम
 हौं जल 'आलम' धार सहस्र है छां कुच मेरु निरे सिय जंगम
 हार हिये हरि के लु लसै मानो होत, सितासित सागर संगम ।

[२६१]

रोति ठटी विपरीति के अंग करी ललना भुव भंग अभंगति
 'आलम' ओमल आलि कहुँ रति पेसी कहुँ अयकोकि उमंगति
 लोल छुटी लट सौ मुकुता लर अंग्र जुटी धम के कन संगति
 लूटि सुधानिधि राजकी राहु चलयो पनहासु? चलो उड़ पंगति

[२६२]

कैलि करै विपरीति कला रवनी नंदलाल उमै पुत्रि भारे
 अथको धसि गो पटु सीलहुँ ते निकसी कवरीक पनी कचकारे
 'आलम' गोरे लिलाट लसे ललित धुतिफूल अराउ के धारे
 अहित रन्दु की कोरनि मानहु मंडित है दुहु ओरनि तारे

१—पनहासु = धोरी का पतालमाने के लिये । धोर को पकड़ने के लिये ।

[२६३]

मजि सौज संयोग की भोगकला जुग मेंज मिलाई गई सजनी
कयि 'आलम' हाम कैयास मिलै मलयादिक ओर सुयास घनी
कुच कुंकुम के कन अंकुम सौं भूलकै तन कान्ह के जोति घनी
परसे जुग मेरनि सौं मनु हैं लगीं स्याम घटा तन हेम कनी

[२६४]

हेम लना तन राधिके जू तन स्याम चढ़े दिन ही दिन बानी
पनिसौं घनिराँ जलपै दिनसौं ते सुने कयि 'आलम' प्रात हितानी
हास विलासनि दंतन में छिटके छुपि सो उपमा जियेआनो
मानो विधुंतुद^२ प्रासुसंम सुती आय कलानिधि मध्य समानी

[२६५]

कनील निचौल निसा महँ सौं विधुं पैठत फंघुकी कुंभ अटारी
छुपै पिय पेल्लय कालिम ज्यां कुच मैनु गही कर मूड़ अटारी
'आलम' यौं जुयतो अथ है नख रेख चली अमंगी हरि दारी
महँ रति सौं रितु राति रगी रति मानो हना हर काम कटारी

[२६६]

हरि कामो अंपूरति काम जिते सधु^२ लेन पिया यनिना पर तें
कयि 'आलम' हन संकेत समै रसकेलि कलोल उभै भर तें
कुच उद्य में एक नखच्छुस यौं घरनो मनमोहन छुपै करतें
अति आरकता^३ सुक चंचुपुटी निकसी मना फंचन विजर तें

१—बानी = रगत । २ विधुंतुद = राट्ट ।

* इ-व छद का अर्थ इनादो समयमें नहीं आया । इस्तलितित प्रति में पाठ ऐसा ही है । २—सधु = मुख । ३—आरकता = (आरक्य) दूब लाव



[२६७]

रति समै रतिनायक जू सुखदायक-सेज सुदेश निवासी
 आनंद फंद अमोद साँ पोषि विपारति केलि कला साँ विलासी
 प्रात भये अलसाने लला सरसानी अली रस लेत हुलासी
 याते सनेह सुगन्ध भयो मिलि तीय तिली पिय फूलनि वासी

[२६८]

रति रीति वितै रमनी कुकि कै रिस नैकु कगी अध ऊरध भौहि
 आलम भूपन धारि सुधारि कसे कुच फंचुकि फेरि पिछौहि
 कर ऊपर येसरि मंडि नासा मुकुताहल कं गजरा छवि साह
 घेरि मनो उड़पुंजनि ले सरसारह आनि करे ससि सौहि

[२६९]

रति अंतसों कामिनि पंत समै रसही यस में सुखसेन समै करि
 मदनानल पीर सरीर भई तन में कवि आलम आलसता भरि
 पिय पानि कुचपुंज दं तिय के भलके नख मंजुल जोति जगै धरि
 संभु के सीस सरोरुह के दल छोरनि मानहु ओस रही दरि

[३००]

रतिदानु दये अयला विगसी भ्रुकुटी करि यंक सगसन सी
 कवि आलम कुंतल चारु छुटे कहूँ कुंकुम अंकित है कन सी
 लट ले खलि येसरि नानिक के अरुमै भव भूम चले घनसी
 मिलि कै कच पुंजनि लाल चुनी चमकै घन में पटधीजन साँ

[३०१]

कोक कला खनी रति नागर केलि ठट्टे सब रैन सिराई
 प्रात सभ सिधलत्तन सुन्दरि अंग रही बसि आलसताई
 जागि चली कर आली के कथ दै है कवि 'आलम' ऊपम पाई
 चंदन खंभ के अंकम' मानहु डोलत चम्पक माल सोहाई

[३०२]

अति मुहित है प्रमदा मन में मधुसदन को मधु मोद लये
 कवि 'आलम' लालस आलसु डारि चली सुअली तजि यौद लये
 कर पल्लव दीप दुराये भई दुति पानि में रैन विनोद लये
 कथिता बरनै छवि ताहि मनो सविता सुत वारिज गोद लये

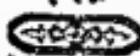
[३०३]

नवला अम लोचन रोचन के पल मोचने पूरि रही जल सौ
 कवि 'आलम' केलि कला हरिजू रिभई न कलू खिभई धल सौ
 तिहिको भरु ज्यों रविके अंग को अंगयो न परै नलिनी दल सौ
 कल कोमल बाल कलेवर यो अति काहल होत कुलाहल सौ

[३०४]

कंचुकी नील लसै कुसुंभी मुकता लरे कंठ में कुंतल छोरे
 नैन विसाल भराल कोसी गति बाल रसाल बहिक्रम धोरे
 नेकु चितै हरि त्यों कवि 'आलम' चंचल चाल चली चित चोरे
 जोयन रूप जगामंग सो कोउ या मंग नारि गई तन गोरे

१—के अंकम = अंकवार में लेकर । २—भट्ट = पार । ३—अंगयो न परै = सँभाला नदी जाता । ४—बहिक्रम धोरे = घोड़ी बघरौ (नवला) ।
 ५—त्यों = तएक ।



[३०५]

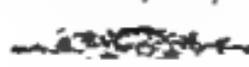
सजनी मिलि है अवलोकि कहै अतिही हरि राधिके कं वस री
सखि देखि धौं कुंज विहार वहाँ कबि आलम और कहा रस री
अंगिया सित भौनी फुलेल मली तरकी १ ठौर ठौर कसी कल री
किधौं प्रात सुमेरु के दोस भयो जितहीं तित ओस मनो पसरि

[३०६]

प्रात समै धन बोधिनि मैं निरखै एक नागरि नारि निमेखै
आलम आलस भूपन अंग रह्यो लगि भावतो भामिनि भेखै
कुंचुकी लाल कछु मसकी कुचसीध की ओर चलो सखि देखै
प्रात रतोपल २ के तरके ३ प्रगटी मानो पुंज पराग की देखै

[३०७]

स्याम असंक भयंक मुखी निरखै रति औ रतिनायक हार
आलम कुंकुम के रंग की अंगिया अंग मैं छवि कोटिक धार
मसकी कुच कोर की ओर लसे सु कहा उपमा कवि और विचार
पूडत चंचुपुटी प्रगटी चकया मानो पीत परागहि दार



१—तरकी = मसक गई है । २—रतोपल = (रसोपल) लाल कमल ।
३—तरके = फटने से ।

यशोदा की उक्ति

[३००]

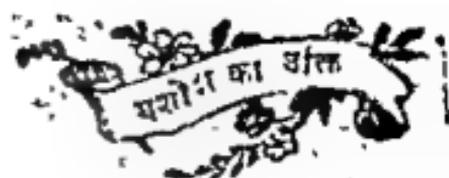
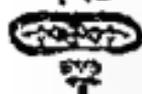
औंठि धखी है दुरंग्य दुहार के प्यारे लला रुचि साँपय पीजे
 लोटत हाथ के भयेन छूटत राघत ही यति ती बल धोजे
 'आलम' दूध दही को मिठाई को मेवा को नाहि कगे कहा कीजे
 कान्हर आर^१ निघारि बलाइ लियो आपनी माइ खिन्नाई न लाजे

[३०१]

अपने गृह माखन खाइयो आइयो लाल नहीं कवहुँ पर नरे
 बरजे जननी कवि 'आलम' यो बिलमी जु कहूँ न अघर^२ सघर^३
 हीं प्रिय देन सुनी सुत स्थाम^४ व कंस के सैन सबे अरि तेरे
 धाम रही निकसी न वहुँ तुम राँक को सो धन कान्हर मेरे

[११०]

योर घड़े मुरली लघु बीरन माँगन है तुम देउ यत्ना हो
 हीं तो न वेही न डेन है माहि तू दे मेरी आनर चंदकला हो
 'आलम' जान चले नित डोलत घोलत लै जननी सुख साहो
 जान दे वंसी कहा लै करैगो तू घार लै माखन आर लला हो



[३११]

नन्द लई मुरली करे के नय ले कर कान्ह लखै परछाहीं
 'आलम' लै अधरों परसै छिन ही छिन चाड सौ माखन खाहीं
 अंकुल कान्ह बजाइ न जानन स्यो जननी पहँ पहुँचन जाहीं
 मैया रो ज्यो बज्र की बँसुरी ऐसी मेरीयो बँसुरी थाजतु नाहीं

[३१२]

दौरत गाइ बँहोरन छौह ते घाम नै बोरि ययारिन साधे
 डोलत है जितहीं नित 'आलम' सु गोधृत कैनि रह्यो धन आधे
 कानेरि के दिन सौ कवि 'आलम' आवत लै धुँकें धरि काँधे
 हात छरी पनहीं पग पातें की सोस खुदू कटि काँमेरि काँधे

[३१३]

कालि के कान्ह कलिन्दो के कुन लये सँग बच्छ बसे बन में
 धुलिया अंकुलानि बिहानि नै गानि बिद्युद्धित ताप नई तन में
 कवि 'आलम' जीधन ओट भये पल लोचन सोचें बढ्यो मन में
 तातें असोधन है चलो सोधन सो धन है गयो गोधन में

[३१४]

आलम पुंज के मध्य लला दरसै परसै रज अंग रुचै
 निरखे कवि 'आलम' पंगु भयो मनु रूप अपारहि क्यो एव रुचै
 नम्र नाहर थक हिये हरि के जटितम्मनि में उपमाहि सुचै
 यिनयै पटिया दुनियागम सौ मनो द्वेज कला दिननाथ मुचै

[३१५]

सुर शान जु, ध्यान मुनिन्दनि, कै बरन्यो- असकंध, दुआइस में
 कवि 'आलम' पूरव, प्रेम-प्रताप सु तौ ब्रज नारि कियो, बस में
 झुनि कुंडल, माल औ भूपन, भूपित, किकिनि मुद्रिक, सैन समै
 तन कान्ह, कियो मनि ज्योति मनो जमुना जल सुरज की रसमै।

[३१६]

कछनी कटि स्थल, कछे कचनी घरही घर पुछ को गुछ बनो
 यन राजत, श्री-मुरली घर-जो धुनि सौं दिन, अनैद हांत, यनो
 हिरदै भगु चण को बिन्ह लसै उपमा कवि 'आलम' कौन गनो
 प्रगटे सु अनंग प्रसंग लगे छवि सुन्दरि, अंग के अरु मनो

[३१७]

मधुदंन, श्री नैद-नन्दन जू, दुखकंदन चंदन और करी
 तुलसी, दल माल बिसाल लसै निरखे छवि कामकी कान्ति हरो
 कवि 'आलम' भालके ऊधे यो उपमा, सिखि-चंदकी पंतिधरी
 सुखमा के समूह सरोबर में मानौ फैलि फुलेल की, छौंट परी

[३१८]

अंग विमंग, किये मन, मोहन, ते, मन्, काम के-कोटि हरे
 चित, चाहि चुभ्यो वृषमान सुता, तन बांसुरी-आँगुरि, गैन धरे
 चंचल, चारु-चलै कर, पल्लव 'आलम', नेकु न नैन टरे
 तजि रोस, सुचारु सुधा कर पै, मनो नीरज के दल निर्र करे

[३१६]

नंदलला मुख चंद्र चंद्र छवि कोटिक चंद्र कला पचि हारी
 'आलम' काय को काम यहै ब्रज याम के काम की कामना टारी
 सुन्दर नासिका पास रही अघ भीजनि है मसि मोमित भारी
 पाँडुकि फंठ नयोन उठे प्रगटो मनो फोर के फंठ की फारी

[३२०]

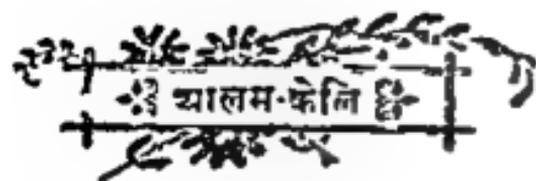
सुन्दर नंदकिसोर तरंगनि अंग को संग अरुंग गह्यो
 महिला सय मोहि रही महि की भनै 'आलम' रूप महा उमह्यो
 मसि भीजति कान्ह के आनन पै लखि स्याम सी रेख को भेष फह्यो
 छवि परन इन्दु के मंथ मनो दुतिया के सरूप है राहु रण्यो

[३२१]

जल फ्रीडत थी नंद-नंदन जू दुति बंदन निन्दति सूर प्रगा को
 यनितादिक मुदित उदित रूप तै बंछति जानैद चंद्र सुधा को
 'आलम' कै कुग्रहै दल मोलि वन्यो तनु स्याम पिराजत जाको
 मूरतिवंत लये सरिता सँग संभु परै मनो खैल सुता को

[३२२]

मुकूता मणि पीत एरो वनमाल सुतो मुरचापु प्रकामु कियो जनु
 मूपन दामिनि दीपति है धुरवा सित चंदन खौरि कियो तनु
 'आलम' धार सुधा मुरली बरपा पविहा ब्रज नारिन को पनु
 आवत है वन ते वन से लखि री सजनो घनस्याम लदा-धनु



[३२३]

उलमे' तुलसी दल मंजु लसै सुलसे कुल से संग मील रसालहि
 नौ हुम में कदम-हुम फूल फली घुँघुची फल सों फल जालहि
 'आलम' डार सुडारनि छौरनि नोरज नील लये संग नालहि
 मैंन बिसेपत लेखि महा सु ती देखि सखाँ घनस्याम तमालहि

[३२४]

सखिरो नम सिंधु दुरन्त रये गुन पूरन सों जग जागत है
 कवि 'आलम' नील कहै सय ताहि सु ती अगमै मन लागत है
 सुख दायक कान्ह पगाफम' सों नर जद्यपि यो अनुरागत है
 लखि जात नहीं घुषिमानहु सों, ताते लोगहि स्याम से लागत है

[३२५]

आयत जातहु ते ग्रहि मारग डीठि परै कहुँ साँझ सघारे
 ताहि ते लोचन लीत मरिभ्रमरि लोचत लोचन लाल तिहारे
 अटान घटै उतरै कवि 'आलम' भाँकत दौरि भरोखनि द्वारे
 खाई न पान सुहाइ वल्लू न अन्हाय न नारि रहै मनु मारे

[३२६]

धृत हुंडल गंड प्रचंड कला सिर मंडि सिखंडिनि के चँदवा
 मुरली धुनि की सुरली^२ सुनि कै सुर सों मन आतुरको फँदवा
 सुषमूल त्रिलोकत ही मकरध्वज मूलि रह्यो मति को मँदवा
 कवि 'आलम' आनँद चन्द सदा सखि वा लखिरी नँद को नँदवा

१-उलमे = उल्लासत । २-सुर-ली = रेलापेज (अषि हवा)



नवयौवना



[३२७]

पेड़ पेड़ों पर चली फिरि ओरनि ऊँचकै भौंहनि सीस उचाये
 नैन डरै पिडरै फिरि आपन काननि कोर दरीन दुगारे
 'आलम' आनि गहो पहिले मन ठौरहि ठौर को भेदु पताये
 राहु फिखो तन को नगरी मुगुघाई' गयी अय जोवन आये

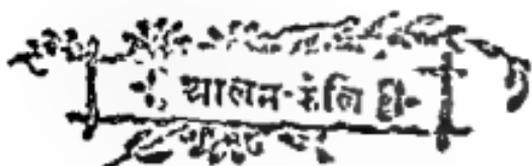
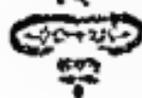
[३२८]

मोर भयो जो मरीस बिये निकसो सरकार हुनी लरिकाई
 'ठौरहि ठौर भई कहु और जु अंग अंग, फिरी है दुहाई
 आइ गये अयतानी' दोऊ कुच छाव लये सिरस्याम सुहाई
 'आलम' लाल गुपाल को सीं सिरदार भई तनमें तरनाई

[३२९]

वैस फिरे गलटो फल फंड लफै फटि फौल कपोलनि पाई
 चाहनि नैगनि चाह रहै चमकै चख औ भुजमूल फलाई
 रूप दसा सब त्योंही भई तन जोवन को छवि यों भटि आई
 पाहिर दर्पन ज्यों दरसे कलकै छवि छाँहर में जिमि भाँई

१—मुगुघाई = लहलहपत्र । २—अयतानी = (फा० अयतानी) इदत
 बदल कर क्षेत्राला हाकिन । ३—फौल = फौलाज, विस्तार (विग्रह)



मानवर्णन

[३३०]

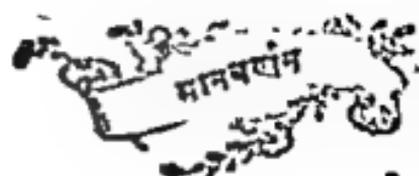
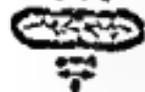
श्रीधि टरी न टरी ललना न टुखो चित नेकु रणो लय लीनो
 'आलम' धीन छपाकर जोनि छपी निधि छीर छपा 'भई छीनो
 सेदि टौर उरोज के अग्रनि लीं परसी जलधार भयं हग दीनो
 'खेलत संभु तुधाकर में बनसी कर डोर लगी जुग मोनो

[३३१]

मान मनी सज्जती सिख मानि वनी सिख दैन को मान हटी मुकि
 'आलम' नैननि रूप को भेष निमेषन जो पिय देखत हैं टुकि,
 गन्दन की बिंदुला पर रंग भरे मुकुटा छवि हैं ललना जुकि
 भूमी लता कन ओल लगे शध गोन बंधूक प्रसून रहै मुकि

[३३२]

मान कला नवला सुनि कै सहुलासनि, लाल मनावन आये
 'आलम' आली न माने कसो पै तिया मन में मनमोहन भाये
 रोस भरे अँसुवा पट ओलक लालक गालक मध्य समाये
 अँजन सों मिति कज्जल है जुग खंजन ज्यों जमुना जल न्दाय



[३३३]

तंजिमान मुग़रिपै नारिचली कवि 'आलम' लोल कलिन्दी के तोरहि
 हार हिये हरये पग धारि दिपै छिज पंति हरै छवि हारहि
 मुज डोलत योलत मंद गतीकर पलय चार लये छवि घोरहि
 कोस पिदारन के भ्रम सो निकसे बल कंज गहे मनु फोरहि

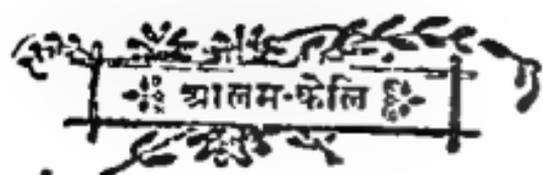
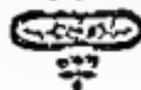
[३३४]

सुधा को समूह ता में दुरे हैं नछत्र किधी,
 कुंद की कलो की पाँनि कानि पीनि घरी हैं ।
 'आलम' कहे हो पेन कामिनी के बये बाँजु,
 पारिज के मध्य मानो मोतिन की लरी है ।

स्यातिक की वुँदें विधि विहुम में वासु लीन्हो,
 ताकी छवि देखि भति मोहनै बिसरी है-।
 तेरे हँसे रदन किशोरी दुति राजत है,
 हीरनि की घानि 'ससि मध्य है निकरी है ॥

[३३५]

तैं कियो मान मनावत ही मनमोहन आमिनि जागि गये
 अजहं रही मौन अनम्मनि है मन ही मन नीचहि नैन नये
 तरुनी अरुनी रचि प्राची दिसा कवि 'आलम' उप्पमा ये जु ठये
 तम नास को भान महीप चढ्यो तँबुआ तकि तानि उतंग दये



आलम-फैलि

[३३६]

पेइये जो तुम कूज के रंघनि कालि बिलोकी गोपाल के धोरें
याजु अयानि है आइ है देखि मनो उन यातनि के तिन तोरें
चितये कच में धिपगोति समै अलि सायक से मधुमिछ में डोरें
गुलाल की लालकली कलकों मनो लेत कि लालकी लाल जुभोरें

[३३७]

गोकुल में गुकुलेसहि लै गवन्यो सुफलासुन है अधिकारी
कवि 'आलम गोप गऊ गोपिका गन घोप मये सब दीन दुखारी
नन्द पटै फिरि जो नन्द-नंदहि दंद-उदेग उछयो जिय भारी
हारि सरइसु मारि मनै, जैसे हारि चलै कर भारि जुआरी

[३३८]

ए रे अहीर अजौ कहि धौं धौं तो जाऊँ तहाँ हैं जहाँ गिरिधारी
कैसे फियो मुख वा रुख सों सय गोकुल की सुख की निधिडारी
हेरि कहै जसुदा पति सों कवि 'आलम' व्याकुल है जिय हारी
आनंद चन्द गोविन्द बिना अय नन्द भई मति मन्द तुम्हारी

[३३९]

दीसत है दिसि और दसो जिय आस ससंक प्रकास दिसाकी
कवि 'आलम' अंग लगे दगज्यो अयला वसिसंग बिसाल विसाकी
हिरदै अति ताप भई सुत के मुख सूखन है तिजि आनि तिसाकी
नेमुकहन सफौ कहि हौं सखि धौं निसि है कथ जोन्हि निसाकी



[३४०]

पीय पयान, फी पावत चाह भये सुपयान को प्राण उतालें
 थाँसु औ साँस उसाँसनि हैरति आसनि साल वियोग के सालें
 'आलम' अंग अनंग की ज्वाल तें आंगनु भीन फुनिङ्ग सं चालें
 ज्यों जिय को दिग आवत जानि परै जमराज को जो हू के लालें

[३४१]

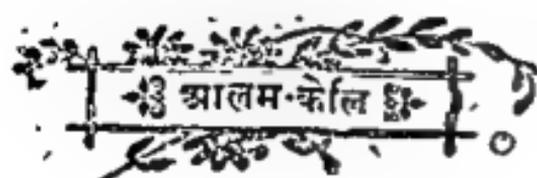
कान्ह चली बिलँयो, न कहूँ सजनी जुगधै अथ लों अथलें
 कधि 'आलम' व्याकुल नैन वियोग अरी बिरहानल देह दलें
 थाँसुआ भरि डारै उसाँसनि सौँ भलकै तन कंपत हीय हलें
 सरजात की बूँद अथै रस, मै छवि लोल मनो जल डोल चलें

[३४२]

जो भरिहैं भरिहैं घट तो घट है न घटै अँखियाँ, उनई हैं
 नींद गई निमयो बिसरी कल में पल, में पलको न दर्ई है
 'आलम' आँधि की ओल अली अथ लों इन थाँसुनि साँस लई हैं
 पानिप डीठि सकेलि सबै जुटि कै पुतरी भर, भार नई है

[३४३]

कान्ह पयान कछो सजनी तिय प्राण पयान के से दुख पाधै
 'आलम' छीन परी मुरछाइ परी छिति नीर सखी मुख नाथै
 सीतल ह्ये पग पानि गये छतिया तपि कै पियरी तन छावै
 जो हू की जानि परै न कछू सखि देखत हूँ जमह, अम आवै



[३४४]

कान्ह वियोग वियोगिनि नारि परै दुख सोचनि नेकु निखूटै
 'आलम' देह सदेह वियोग विरोपि^१ दलै सुख सम्पति लुटै
 त्यों जम आयत आजु कै नीठिह आऊ^२ के ओर दुघानल टूटै
 इते पर चंद दुखी करै मो कहँ या दुखतें सखी कैसे कै छूटै

[३४५]

पिछुरै ते पलपीर घरि न सकति घोर,
 उपजी विरह पीर ज्यों जरनि जर की।
 सखिनि सँभारि आनि मलय रगदि लायो,
 तैसी उड़ो अपली कहँ तैं मधुकर को।

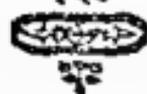
[३४६]

बैठयो आय कुच बीच उड़ि न सकत नीच,
 रहि गई रेख 'सेख' दंत दुहुँ पर की।
 मानहु पुरातन सुमरि धैरु संभुं जू सौं,
 माखो सम्यरारि^३ रहि गई फौक सर की ॥

[३४६]

मारिये को तिय मार के मैं रही मेरे कहे विक मोरनि मारि दै
 मारत मंद सु चंद दहै तनु मंदरि मंदि सखी दिसि पारि दै
 स्याम बिना कवि 'आलम' धाम तैं कंकुम मेद सुगंधदि डारि द
 पारि कै देखि परै तन वाती सो नारि तू थायरी पारिज पारिदैं

१—विरोपि = विशेष रोप से । २—आऊ = आयु । ३—सम्यरारि = काम ।



[३३७]

रूप सुधा मकरन्द पिये ते तऊ अलि कंठ धियोग अरे हैं
 'सेख' कहै हरि, सौ कहियो अलि ध्यान प्रतच्छ समाप्त करे हैं
 जो मन भूरति के निरखे हम देखत ही गिरि गात गरे हैं
 जोति प्रसंग पतंग जरे इक भाँई के भूमत तेल तरे हैं

[३४=]

पंगु कियो पिलयान को पौरुपु ले चल्यो कुंजर कोटिक पेलि ज्यो
 'आलम' दंती के दंत हिलायकै हाथलिये कियो खेल सोखेलि ज्यो
 कान्ह बली' तन धोन की छंछु लसैं अति अग्योपयोत सोमेलि ज्यो
 नील नगपर इंदुबधू घनसार गिरिपर बिदुम बेलि ज्यो

[३४९]

कर पोथी लै पंथी के पंथ चले छिन ठाँदे है पूछति है कहैं जैहो
 गुन बँदके पेदन, घाँह गहो बिरहा घर को गुन कौन पतैहो
 जोतखी हो ती चलौ घर भीतर घोपि, धखो सुधरी दिन दैहो
 'आलम' आजु घनो, घन है घन के उनये जु घनो दुख पैहो

[३५०]

धरि रूप सुधा को पियूप मिले बिनु जोम के स्वाद कहा रचिये
 कधि 'आलम' घास को घास नहीं मन भृङ्ग सुवास भले सचिये
 जल में जल के गुन जाने नहीं भये अञ्जर अञ्जर क्यों रचिये
 मुकुतै न फछू जुगुतै जबलौं, ऽव सुतौ भगतैं भगतैं जँचिये

चन्द्र कलंक

[३५१]

विधु प्रह्ला कुलाल को चक्र कियो मघि राजति कालिमा रेनु लगी
छवि धौ सुरभीर पियूष को कीच कि बाहन पोठ की छाँह खगी
कयि 'आलम' रैनि सँजोगिनि ह्ये विय के सुख संगम-रंग पंगी
गये लोचन बूझि-चकोरनि के सुमनो पुनरीनि की पति जगी

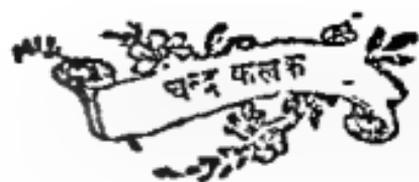
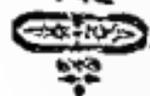
[३५२]

धिर फुरम थापि रसानल में विधि जानि सुनौ त्रिकुटी है ठटी
धरनोधर मत्य समत्य फगी सरिता सर निधु सनेह तटी
'आलम' के गुन मेर मनो रवि प्रात को दीपनिखा जो जटी
निहि धूम धुके दुति कजल की अजहँ नम कालिमा लै प्रगटी

[३५३]

श्रीपथिनाथ विरोध गुनो गुन सोधि-तमोरस भेद विचारा
'आलम' पूरि घरी घरिया रवि कोनो नरे नप तेज पसारा
आगि दई अयये अरुनो अति फूटि के जंघु गयो उड़ि पारा
रैनि भगी कजरी विधुरी जनु है फन घातु लगे मढ़ि तारा

(--अयये अरुनि = सूर्यास्त समय की लाटिमा ।



[३५४]

गुन पाये हैं द्वै भ्रिमैंगी हरि के किधौं मैन बसन्तहि जोर परी
सुरचाप गड़ी तड़ तेग तये कधि 'आलम' उत्तर दच्छिन री
प्रगट्यो परिवार विपुन उते इत पछिम है विधु अर्थ धरी
दिसि वारि चितै चित अकित है अनु लुद्धत जोधनि खंगफारी

[३५५]

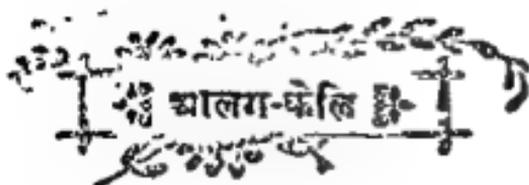
तै न सुन्यो जनकादि के द्वार पिनाक पखो जु सयै विरचै
कधि 'आलम' धान थपे उथपे की रहै बलु कै नर धैन रचै
सार के साल उसालि धरे बुकि रावन देखि यहै परचै
धिगुटी गुन चाहि टकोरत ही कर लै रघुवीर करी किरचै

[३५६]

कोसिला सासु सखी रघुवंसिनि केतक दूरि सयै सँग पैयां
हौं अर्थ हारी हौं हारी कहां सुनि कै हरि नैन हिये जल लैयो
'आलम' नीर कै गोय रहो किये जानकी भूमि की ओर कवैयो
घँघर से यन घे घर रुन्न तहाँ हू ते और कहाँ लागि जैयां

[३५७]

देरु को मेरु अनेंगनि टारिहौं दानव द्वार को दारुन हाथी
'आलम' कून के मूल कुदारि हौं मेदि कुमन सुमंत को गाथी
राघवराइ को दूत धली जिहि दूखन खंडि कै तारिका नाथी
अंगद नाम अमंग भुजाबल बालि को धालकु रामको साथी



आलग-कलि

[३५८]

मंडित पान प्रचंड अखंडित संधि सिलीमुख दंडि कुदंडन
 'आलम' है अघनी कघनी खल्यो आवतु राम अडंडन डंडन
 है दसमाथ सनाथ अजौ करि माथ पुनीत है कै घर मंडन
 तारिका तेज उतारक धारक तारि कहै खर दूपन खंडन

कवि

(कुच छवि)

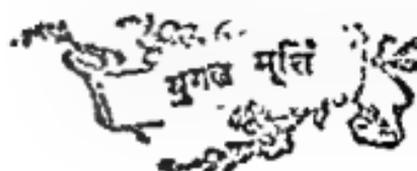
[३५९]

अनि आतुर चातुर फान्ह रमै तन में रस रासि नई सँचरै
 कवि 'आलम' वाम बिहार बढ़ै सजनो सिख विसत सबै विसरै
 मुख पै कच कै अधिकारी खुले अध चौकी जगम्मग जोति करै
 उत है मानो सूर उदोत कियो इत ओर. सुमेरु कुह उतरै

३६०

अलि फान्ह लता-वनिना मधि में मधु पान कियो मन मोत^१ समै
 कवि 'आलम' मध्य मुचे सकुची गति उर्द्ध करी अकुटी रिस में
 छुपि नील निचोल उरोजनि त्यों मसंज्यो परिरंभन^२ के मिस में
 फनकाचल शृङ्ग प्रकासन को रवि की कर दौरि परी निसि में

१-मनमोत = मन भावत, मनभाया । २-परिरंभन = आलिंगन ।



[३६१]

रजनो पितई रति सौ सजनो थिरकै दग द्वै तजि चंचलना
 कवि 'आलम' आलस हो जलपै किलकै कुच खीन भई कलता
 किये बकित बाम हरो कँचुको गई उद्यकि यो छवि अंग लेता
 सहुच्यो जु सियार समोर लगे प्रगटी सरको मनो उज्जलता

[३६२]

रजनी मधि राधिका गौन कियो निरखी अँखियाँ पतिप्रेम भरी
 कवि 'आलम' रंजन को ललचो रति लालच लै हिय लाई हरो
 खरे खीन हरे पट की अँगिया दरकी प्रगटी कुच कोर सिरी
 अरुके जुग लाल सिवालनि मैन के चक्र की चंचु मनो निसरी

~*~*~*~

युगल मूर्ति

[३६३]

प्रज भूपन भावति राधिके जू शुन रूप के साँचे सुअंग गढ़ी
 कवि 'आलम' अंग सुगंध सदा परचै विरचै करि फोक पढ़ी
 कवनो भुज स्याम के कंध धरे रचनो मनो प्रीति की रीति पढ़ी
 छवि ता तन स्याम को सुन्दरता मानो चंचलता नग नील चढ़ी

[३६०]

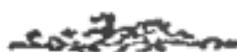
पृन्द धवूनि के बीच जगै नथ नेह लगै उमग्यो तन आवै
 साह को चाउ खरे चपलै कलु लाजनि नैन सो नैन दुरावै
 'शालम' है इत लाल लटू निरखै इकही टक बीच न पावै
 यो लपटै पल में पुतरी चितवै पिय को मुख डीठि बचावै

[३६६]

संक तजे वृषमानु सुता जमुना महँ न्हात भई छत्रि भारी
 धपु राजत बाह घिटप्य किये जनु हेम लता कनकावलि धारी
 हरे हरे आह गण हरि हेरि सखीनि के ओझल है गई प्यारी
 धारि में नारि दुरावति है कुच कोरु मानो विधि' बूझकी मारी

[३७०]

कुंज की ओट कलिन्द-सुता तहँ क्रीडत राधिका संग कन्हारै
 पीढ़ि प्रजंक सुथंक मिलै अंग अंग लसै अति मंजुलताई
 रंधनि है निरखै सजनी भनि 'शालम' यो उपमा मन आई
 हैनि बरै सदि पारस' यो झलकै जल में जनु पावक भाँई



अभिसार

[३५१]

किंकिनि फंकम फान' मिलै घर दादुर मीगुर की. भनकारहि
भूपन की मनि एक भई जुगनू घर की मनि जोनि अपारहि
'आलम' कामिनि को तन कुन्दन जाइ मिल्यो जग थोजु उजारहि,
काम के प्राप्तनि स्याम निसा घर पैरी सहाइ भये अभिसारहि

[३५२]

चन्द्र सुधाकर धार द्रयै जग मज्जित कालिमा टारि गई है
जोति की ओट सहेट भई अभिसारक के आभिलाष नई है
सोस चढ्यो रजनीस, जवै तन की थिर थायन' छाँह भई है
जोन्ह छपा डुरि थायन को तम सौज मनो कर लाइ लाई है

[३५३]

सोघ सहेट भई रस के यस पासर की सुधि बेस विसारी
है तुम सौं तमई^१ वितई अथ घौस चढ्यो सु चढ़ी कुल गारी
कौलनि हँ छुटि भौर चले तिन्ह की अभिसारिक छाँह निहारी
पौरि, चले डुरिघे को हिये जिय जानति है यह जानि अँधारी

१-कधान = (सं० फवण) मूषणों की मंकार । २-थायन = यति
छोटी । ३-तमई = तमो, रात्रि ।



[३७४]

रैनि सरह सुधानिधि पूर चढ्यो जग कालिम छाँह अडारी
 सैनि सहेट यदी निसि मै बिचखो उठि गौन कियो अभिसारी
 भूपन के मुकुता सति अंग सुकेल पुहुप्पनि सौ छवि टारी
 दुरावति छाँह मनो मुसुकाइ सुजाइ मिली मनमोहनै प्यारी

[३७५]

मांधव जू मधुमास मधुप्यन राधिका सौ करि केलि मुचे तं
 तहाँ रस के बसि आरस में सु गये तजि संगम सैन मुचे तं
 उर तें उड़ि गो पट न्यारो उरोज सु 'आलम' हार के बीच रुचे ते
 मनो गिरि संधि के सिंग दुबिष्य के वासनि आसनि मध्य उचे ते

[३७६]

औधि की टेक प्रबोधन को पिय सोधन कुंज गई सजनी
 कवि 'आलम' बाल विलंबि भये कलपै मिलि सेज सँताप घनी
 पगि पीठि प्रसून उठी छवि सौ छतियाँ लगि कुंकुम स्वेद कनी
 बिरहा हनी फोंक फयी उत है प्रगटी इत है मानो पान अनी

[३७७]

औधि टरी न हरी निरखे मुडरी तिय कुंजगली भय भारी
 कवि 'आलम' आसउदास लये ल्यौ ल्यौ स्वाँस भरै अखियाँ भरिहारी
 हिये चौकी जराउ की आनन है मधि छूट चली धवली जलधारी
 सौं व सुमेर की अंकम काज मनो रवि को विधु याँह पसारी



आगतपतिका

[३७८]

हरि आगम की अंगना सुनि चाह सँवारत अंग हुलास हियो
कवि 'आलम' भूपन भेष बने छवि कोटिहि मैन को अंसु लियो
तिलकदुति कुंकुम मध्य ललाट सुचारु जराउ को बिन्दु दियो
अनुराग तँ जाग जगम्भग मानो सुहाग को भाग प्रकास कियो

[३७९]

घर आँगन पैठत साँभ सघार मिलो अँखियाँ अँखियाँ जिय जाँ साँ
'आलम' आन न सैन लखँ पियको चितु तीये तिया चितु पी साँ
पुर धीधिनि में मुरली सुनि के चलि आघत एक कछु मिस ही साँ
कान्ह बितै मुसुकाइ इते कछु बोलति है कहि घात सखी साँ

[३८०]

घातक साँ घरु वैरु बढावत घाटहि घाट अनोति सची है
ताहि साँ खेल करौ नँद को सुन जाके हिये यह घात खंची है
'आलम' यादिहि दोषु लगे सब कोऊ कहै यह याहि रची है
काँकरि यो हू इपोलनि छ्यै गई देखत हो कैसे आँधि बची है



[३८१]

डरिये इन्ह सौं जितनो हरि ये निसि में पटमोटनि खोलति है
इत इतर है इतराई चले फिरि छाँह चितै तन तोलति है
कवि 'आलम' और तौ मोगि रहै अरां यातो इते पर बोलति है
रहि रो मचलानु कहा कहिये माई आपने जी पर डालति है

[३८२]

लाज तजी जिहि काजु सखी इन लोगन में बसि आपु हँसाऊँ
'आलम' जातुरता अति ही तिहि लालचु हौं तुम्हरे संग आऊँ
कान्ह मिलै तो मया करि चाहत हौं न कछु जिय हू की सुनाऊँ
देखन को अँखियान महा सुख जो अँसुवानि सौं देखन पाऊँ

(३८३)

गोरस फेरि दुनासन के मिसि जाँवन हू हित जोवन जैसे
रुखे है रोप ओराहनो हू यहि लालच घोसक धान घनैये
आरहु काज गये कवि- 'आलम' पै ओहि नंद गली होइ अँके
फौनहु भाँति कछु छिन कान्हरु जो अँखियाँ भरि देखन पैये

[३८४]

जात चले कछु दोषु लगै तेउ बावरि रोस करै ब्रज में बसि
'आलम' नैननि रीति यहै कुलकानि तजी पुतो रो मुँह में मसि
जद्यपि घूँघट ओट कियो हम कान्ह कहँ चितयो फिरि के हँसि
किंकिनि छूटि गई तरफो तनी लाज के संग चलयो अँचरा बसि



[३८५]

टोकत हो मग रोकत हो सु कहा इन यातनि कांह अघैहो
 'आलम' ऐसीयै रीति चली भाई या ब्रज में कछु उलटिये ही
 गागरि डारि भजे इंडुरी गहि काँकरि डारत औसर लैहो
 हौं उमहीं जु कह्यो सु कह्यो हम का कहिहैं तुम ही पछितैहो

[३८६]

ओर सबै ब्रज की जुवती तिन तो अपने हितु कै हरि लेखे
 'आलम' सैन सहेटनि भेटनि है तिनहु रति मैन विसेखे
 मै सखी रूप की छांह सी छवै कयहूँ अँखियाँ भरि कांह न देखे
 मो तन चाहि उन्हें चितवै सहिये कैसे माइ ये लोक परेखे

(३८७)

कहा कहिये केहि सों कहिये हित सों कहिये कछुना कहि आवै
 देखत ही सब घोष घँघोषत देखत ही हरि देख्योई भावै
 क्यों सुनि कै रहिये ग्रह ज्यों जमुना तट टेरनि आनि सुनावै
 सों मुरली सुनि कै कवि 'आलम' वंद उदेगं उचाट उठावै

(३८८)

संटकारी लट्टें रतनारे से नैननि अङ्गन अङ्ग [अनङ्ग जगी
 दिग ठाढी तोसों हँसती जु हुती अथ ही उठि भीतर भीन भगी
 मड़हा गढ़ है किधौं नंदलला जैसे मानत ही कोउ और ठगी
 नेकु न्यारे हु मोहि सु देखन देहु कहाँ किनको नहि फौन लगी



[३६६]

जोवन के फूल धन फूलनि मिलनि चली,
 बीच मिले कान्ह सुधि बुधि बिसरार्ह है ।
 बाँसुरी सुनत भई बाँसुरियो बाँसुरी सु,
 बाँसुरी की काहि 'सेख' आँसुनि अघार्ह है ।
 थकि थहराह थहराह बैठियो न कहूँ,
 ठहराह जीय ऐसी पुनि ठहरार्ह है ।
 यादनी विरह आक वाक बकवास लगी,
 गई हुती छाक दैन आपु छकि आः है ॥

[३६७]

जहाँ तें निवारों जाइ नहाँ उठि परै धाद,
 द्वियो अति अकुलाह लाज न करत हैं ।
 देख्यौ चाहै धार धार मुरि मन्द के कुमार,
 अति ही वंसी बिहार प्राननि हरत हैं ।
 देखे तें हँ मुरझात बिनु देखें बिललात,
 दुख देत दुहँ भाँति व्याकुल करत हैं ।
 मारि मारि मीजि कै मरुरन मरोरि डारी,
 मेरे नैना मेरी माई मोहीं सौं अरत हैं ॥

[३६८]

फूलि फुलवारी रही उपमा न जाइ कही,
 कहा धौं सराहौं ताते जोति अधिकानो है ।
 'आलम' कहै हो धरी मोतिन की पाँति गरी,
 हीरनि की काँति छुवि देखि कै लजानी है ।

दारिम दरकि गयें चाके संमुहें न भये,
 रबि की चमक किती चार में बखानो है ।
 तनक हँसनि मैं दसन ऐसे देखियत,
 दीपत नछत्र मानो दामिनी दुरानी है ॥

[३६२]

काम कलेसहि भेष फिरो सब कामहि नेकु परै कल कैसैं ।
 'आलम' ए अलि नैन अली मुख चारिज यामु' रहै नहि तैसैं ।
 सीता के लोक में तापन राम विलापन आप तयो तनु तैसैं ।
 छीन मलीन अधीन दुखी दिन रैनि गये रजनी पति जैसैं ।

[३६३]

केसू कुरहरें^२ अंध जरे मानो कैला धरे,
 कैनहाई कोयल करेजो भूजे खाति है ।
 फूली धन बेली पै न फूली ही इकेली तन,
 जैसी तलबेली औ सहेली न सुहाति है ।
 चहुँघा चकिन चंचरीकनि की चारु चौप,
 देख 'सेख' शानी कौप छाती खौप^३ जाति है ।
 होन आयो अंत तंत मंत पै न पायो कछू,
 कंत सौ बसाति ना बसन सौ बसाति है ॥

[३६४]

रैनि गढ़ गूढ़ रही 'आलम' अकास मिलि,
 चन्दु गढ़पति जानै अटल अट्टि है ।
 दौरि दिनु लाग्यो नारि मेरु भरि सूर आगे,
 गोला छूटि लाग्यो तातें पुछपौरि फूटि है ।

१—वामु = चिना, चमौर । २—कुरहरे = चितकवरे (आपे काले आवे लाल ।) ३—सौ जाति है = पुस जाती है ।



दिसि की उजारी जानी जोन्ह भीति भहरानी,
 हलमले द्विजराज जाम सोम छूट है ।
 आपु चल्यो प्रकुलाइ छुपति नछुप्र पाछे,
 दल भाजे जात प्रात पनहरी लुटि है ॥

[३६५]

बरुनी कटोली भौंहे कुटिल कटारी सी हैं,
 काम को विचित्र ऐसी काके पर डारिहै ।
 अलक तिलक नैन अनग अनंग टीको,
 अनियारे औ उतंग उर पर डारिहै ।
 'आलम' कहै हो कहुँ कान्ह जू कितै है आइ,
 सोचति तब न अय रीक न सँभारिहै ।
 जोषन की माती ग्वारि अंचर सुधारि देह,
 दैव को सँवारी काहु मानसहि मारिहै ॥

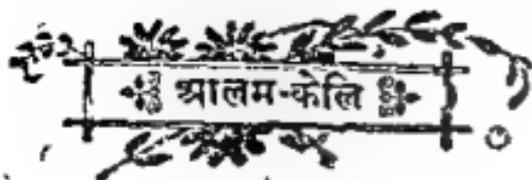


शान्तरस

(३६६)

अलि पतंग मृग मीन दीन छवि छीन नलिन पुनि ।
 गज बाजी कुन्दनहि हंस सारस कदली गुनि ।
 कोकिल कीर कपोत कुन्द जो पटतर भापहि ।
 हौं क्यों यहि विधि कहीं बुद्धि अनचाहत नापहि ।

वृषभान सुता सम कहन कहँ, 'आलम' त्रिभुवन में लु कछु,
 यह मन बच क्रम के जानियहु कहि कहियो सो सयें तुछु ।



(३६७)

मेजु सुखासन हेम हीर पट चोर विविधि वर,
 निरखि निरखि मन मुदित होत निज सुख संपति पर ।
 आपु वनै वनिना वनाइ विलसन विलास अनि,
 जग रक्तक जगदीस सो जु भूल्यो जु अल्प मति ।
 अजहँ सँभारि 'आलम' सुकवि, जौ लौ अन्तक नहि प्रस्यो,
 पग डगमगांत हेरत हँसत, विरह भुशंगम को डस्यो ।

इति श्री आलमकृत आलमकेलि समाप्तम् ।



साहित्य-भूषण कार्यालय, काशी

से

प्राप्य पुस्तकें

१—अलंकार मंजूषा	...	१)
२—विहारी-बोधिनो	सजिल्द	२॥)
" "	अजिल्द	२।)
३—सोनागानी (नाटक)	...	॥)
४—ब्रह्मचर्य की वैज्ञानिक व्याख्या	...	३)
५—सनेहसागर	सजिल्द	॥॥)
" "	अजिल्द	॥=)

छप रही हैं

- १—सूक्ति सरोवर
- २—मनिराम सनसई
- ३—रामचन्द्रिका सटीक

और पुस्तकों के लिये सूचीपत्र मंगाकर देखिये ।

